आधुनिक एशियाई कहानियां



एशियाई सहप्रकाशन कार्यक्रम पुस्तकमाला चार

आधुनिक एशियाई कहानियां

(बाल पाठकों के लिये एक संग्रह)

प्रथम पुस्तक

अनुवादक
बी. एन. गोयल

एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, यूनेस्को द्वारा प्रायोजित

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

एशियाई सह-प्रकाशन कार्यक्रम के द्वारा संचालित आधुनिक एशियाई कहानियों का यह प्रथम खंड यूनेस्को के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है। पुस्तक में संकलित कहानियों का चयन एवं संपादन यूनेस्को के एशियाई सदस्य देशों के परामर्श से पांच देशीय केन्द्रीय संपादन मंडल के द्वारा किया गया है।

एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, यूनेस्को, टोक्यो, के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित।

ISBN 81-237-0932-3

पहला संस्करण : 1981
चौथी आवृत्ति : 1997 (*शक* 1918)
Stories from Asia Today *(Hindi)*
रु. 23.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

ग्रनुक्रम

अफगानिस्तान

बाज़ और पेड़

अहज़ाम रहनाबार्द ज़रयाब

हमारी गली में था एक ठूंठ। उसके पास ही मोची की एक छोटी सी दुकान थी। वह रोज सबेरे अपनी दुकान खोलता, दिन भर काम करता और सूरज छिपने पर दुकान बन्द कर एक बड़ा ताला लगा देता। हमारी गली में ही दो निठल्ले भी रहते थे जो कुछ भी काम नहीं करते थे। यह तो मुझे पता नहीं कि वे दोनों कोई काम क्यों नहीं करते थे, पर वे दोनों दिन भर उस मोची की दुकान पर बैठे रहते और समय नष्ट करते। ऐसा लगता कि जैसे वे दोनों भी उस दुकान का सामान ही हों।



एक दिन जब मैं उस दुकान के पास से गुज़रा मैंने देखा कि मोची हमेशा की तरह खुश नहीं बल्कि गुमसुम था। वह अपना सिर झुकाये इस तरह बैठा था जैसे किसी गहरे सोच-विचार में हो। वे दोनों निठल्ले भी कुछ उदास दिखाई दे रहे थे और उसी की तरह सिर झुकाये चिंतित से बैठे थे। मैंने पहले तो सोचा कि ये दोनों मोची की नकल कर रहे होंगे और शायद मेरा विचार ठीक ही था। वैसे यह बिल्कुल मूर्खतापूर्ण हरकत थी।

यह सोचकर कि जरूर कुछ दुखद घटना हुई है मैं उस दुकान पर गया और उस मोची से मैंने पूछा—"क्या बात है ?"

मोची ने धीरे-धीरे अपना सिर उठाया और मेरी ओर देखा। आमतौर पर उसकी आंखें हंसी से चमकती थीं पर आज कुछ उदास लगीं और वे दोनों निठल्ले भी अपने सपाट चेहरों से मुझे ताकने लगे।

"मेरा प्यारा बाज़ उड़ गया है," मोची ने कहा।

उसकी बात सुनते ही मैं खुश हो उठा। "कैसे उड़ गया ?" मैंने पूछा। बाज़ के उड़ जाने की बात से ही मुझे बहुत खुशी हुई।

मुझे लगा कि मोची को मेरी खुशी का पता चल गया क्योंकि उसने देखा, ठहरा और अचानक वह ज़ोर मे ठहाका लगाकर हंस पड़ा। मोची को हंसते देखकर वे दोनों निठल्ले भी हंसने लगे।

मोची के हंसने में बदले की भावना और गुस्सा भी मिला हुआ था।

"तुम क्यों हंस रहे हो ?" मैंने पूछा।

"क्योंकि, वह दुष्ट बाज़—अब वह जल्दी ही मर जायगा", उसने कहा।

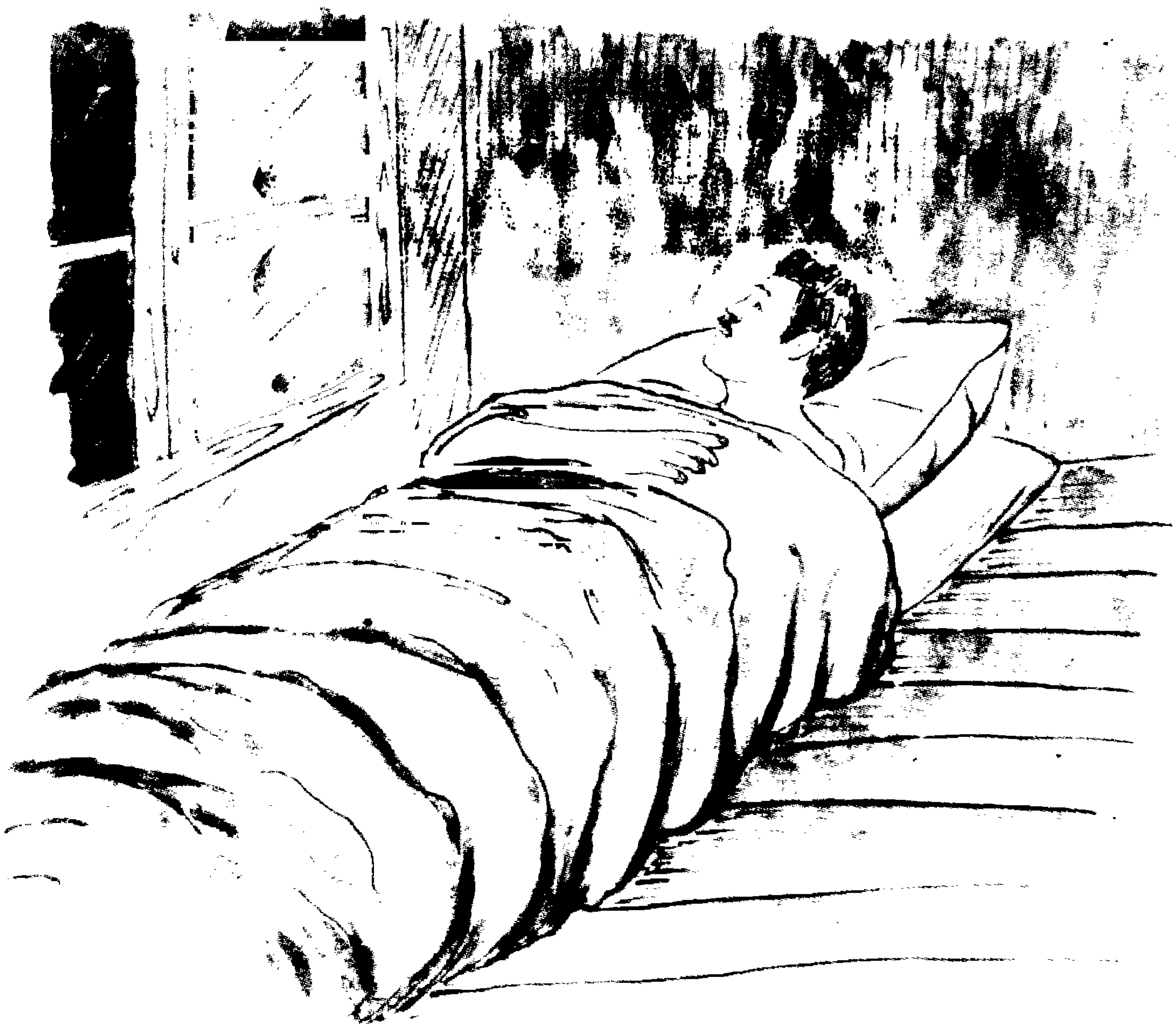
"क्यों, मर जायगा ?" मैंने पूछा।

"क्योंकि उसकी टांग में बंधा लम्बा धागा अभी भी ज्यों का त्यों बंधा है।" कहते ही उसकी आंखें फिर खुशी से चमक उठीं। जैसे ही वह दुष्ट बाज़ किसी पेड़ पर बैठेगा, वह धागा पेड़ की डाल में उलझ जायेगा और वहीं फंसा फंसा वह बाज़ मर जायेगा। मोची ज़ोर ज़ोर से हंसा और कहने लगा, "धागा बहुत मजबूत है—कोई भी चिड़िया उसे नहीं तोड़ सकती।"

मेरे दिल की खुशी काफूर हो गई। उसकी जगह मुझे डर लगने लगा। वे दोनों निठल्ले भी मोची के ही शब्द दोहराने लगे "कोई भी चिड़िया उसे नहीं तोड़ सकती···कोई भी चिड़िया उसे नहीं तोड़ सकती।"

"वह बाज़ उड़ तो गया पर मौत भी उसके साथ है", मोची ने कहा।

"तुम बहुत निर्दयी हो", मैंने कहा।



उसकी आंखें खुशी से अब और चमकने लगी थीं। वह कहने लगा "मैं उसको खाने के लिए जिंदा चिड़िया देता था, वह उनको मारता और खुशी खुशी खाता था। लेकिन अब तो वह उड़ ही गया है। मैं···"

मैं उसकी बात पूरी सुने बिना ही चल दिया। उसके शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे—"क्योंकि उसकी टांग में बंधा लम्बा धागा अभी भी ज्यों का त्यों बंधा है। जैसे ही वह दुष्ट बाज़ किसी पेड़ पर बैठेगा, वह उलझ जायेगा और मरते दम तक वहीं फंसा रहेगा। धागा बहुत मज़बूत है, बाज़ उसको तोड़ नहीं सकता···तोड़ नहीं सकता···।"

रात भी ठीक से नहीं बीती। मैं सो नहीं सका। रात का अंधेरा मुझे डराता रहा। खिड़की से बाहर झांकने पर मुझे लगा कि पूरी गली अंधकार में सो रही है। रात के अंधेरे ने मेरे अन्दर दुख और निराशा भर दी थी। मैंने बार-बार



सोने की कोशिश की लेकिन मेरे मन में कोई बात उठ रही थी। उस बात से मैं स्वयं बेखबर था कि वह क्या है। जितना ही मैं उसको जानने की कोशिश करता, उतना ही मैं उलझ जाता। ऐसा लगता कि कोई ऐसी ताकत है जो मेरे मन के विचार को बाहर नहीं निकलने दे रही। रात बीतती गई और मुझे लगा कि तेज बुखार ने मेरी पूरी देह जकड़ रखी है।

रात का अंधेरा फटा, सुबह हुई। उनींदी नींद में मैंने देखा कि मानो सारा संसार ही धागों और डोरों से बंधा है। कहीं छोटे धागे और कहीं लम्बे धागे। पूरी गली में मानो धागे ही धागे बंध रहे हों। कहीं मोटे धागे, कहीं पतले लेकिन सभी धागे मज़बूत, ऐसे मज़बूत कि टूट न सकें। अचानक मुझे लगा कि सभी धागे किसी न किसी के पैर में बंधे हैं। हर आदमी के पैर में धागा बंधा है—मेरे पैर में भी।

सुबह हो चुकी थी। मैं उठा, मेरा शरीर कांप रहा था। गली में बाहर कुछ शोर हो रहा था। मैं बाहर गया, देखता हूं कि मोची की दुकान के पास ठूंठ के

नीचे भीड़ इकट्ठी हो रही है। मोची भी जोर-जोर से चिल्ला रहा था, लगता था खुशी में नाच रहा हो। मुझे देखते ही वह खुशी खुशी मेरे पास आया और चिल्लाया····"देखो, देखो, मैंने ठीक कहा था न।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" मैंने कहा। उसने मेरा हाथ पकड़ा और खींच कर ठूंठ के पास ले गया। एक डाल की तरफ इशारा करके वह बोला, "देखो, उधर देखो।"

बाज पेड़ की एक डाल से उल्टा लटका हुआ था। उसके पैर का धागा पेड़ की डाल में अटका हुआ था। उसने अपने आपको उस बंधन से छुड़ाने की कोशिश



की थी। इस कोशिश में उसके पंख टूट कर चारों तरफ बिखर गये थे और इस तरह उसने अपनी जान दे दी थी। वह अब मर चुका था। उसका सिर ज़मीन की तरफ था और उसकी आंखें खुली मेरी तरफ घूर रही थीं। मुझे लगा जैसे वह बाज बोल रहा हो और रो-रो कर मुझसे कह रहा हो—"सबका अंत यही है।"

"मैंने आपसे कहा था न कि यह जल्दी ही मर जायेगा," मोची ने कहा।

भीड़ में शोर हो रहा था। हर आदमी उस मरे हुए बाज के संबंध में कुछ न कुछ कह रहा था। सबकी आंखें बेवकूफी की खुशी और आनंद से चमक रही थीं। मुझे लगा जैसे वे सब फूले न समा रहे हों और कह रहे हों—"कितनी अच्छी बात है कि चिड़िया उल्टी लटक गई है—हम नहीं लटके।"

मैं सबके पैरों की तरफ देख रहा था। मुझे सभी पैर धागों से बंधें मालूम पड़े। सभी के धागे जैसे बहुत मज़बूत हों। मोची के पैर भी बंधे हुए लगे। सभी धागे जैसे फंदों की शक्ल में हों। हर फंदे की बनावट गोल-गोल घेरे जैसी, जैसे वे सब स्वार्थ के गोल-गोल घेरे हों।

मैं ज़ोर से हंसा। "क्यों हंस रहे हो?"—सबने मुझसे पूछा। उनका उत्तर तो मैं क्या देता, मैं हंसता ही रहा, मेरी हंसी की आवाज बढ़ती ही गई और लगा जैसे पूरी गली में मेरी हंसी गूंज रही हो।

"तुम क्यों हंस रहे हो"—मोची बहुत ही भद्दी और तेज आवाज में चीखा।

"तुम सभी के पैर मज़बूत धागों मे बंधे हुए हैं", मैंने कहा।

सभी लोग घबराये, डर कर सबने अपने-अपने पैरों की तरफ देखा। फिर मुझसे पूछा—"कहां हैं धागे, कैसे धागे, कौन से धागे?"

पर मैं उनसे बेखबर अपने पैरों की तरफ देख रहा था। मुझे लगा मेरे पैरों में भी मज़बूत धागे बंधे हैं। जिनके सिरों पर गोल-गोल फंदे हैं—स्वार्थ के, घमंड के छोटे फंदे।

इस तरह से वह बात जो रात भर मेरे मन में हलचल मचाये थी, निकल कर बाहर आ गई थी। अचानक मुझे सारा संसार, सारी भीड़, सभी कुछ बेतुका सा लगा। मैं ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। मुझे लगा कि जैसे हम सब उस ठूंठ की डाल से बंधे हों, सभी का एक पैर मानो कस कर बंधा हुआ हो। मोची भी मेरे नज़दीक ही लटका हुआ था। उसका चेहरा भी मेरे करीब ही था। उसका चेहरा जैसे ज्यादा ही दुखी हो और कह रहा हो—"सबका यही अंत है।" दोनों निठल्ले भी वहीं लटक रहे थे, उनके चेहरों पर भी वैसा ही दुख झलक रहा था, जैसे बेहूदा नकल कर रहे हों।

मुझे बाज़ दूसरी डाल पर टंगा नज़र आया। मेरे मन में उठा—"यह क्यों वापिस आ गया है।" तभी मुझे लगा कि उसके पैर से एक दूसरा धागा बंधा है जो यहां से मोची की दुकान तक गया हुआ है। यह दूसरा धागा मानो जीवित पक्षियों से बनाया गया हो।

चित्रांकन—हाशिम घोरबन्दो

बर्मा

सुंदर सलोना बगुला

गेटनी

संपादकीय टिप्पणी : इस कहानी का अनुवाद करते समय स्वतंत्रतापूर्वक रूपान्तर किया गया है। मूल रूप से यह लेखक की पुस्तक "माडर्न शार्ट स्टोरीज़ फ़ार यंग पीपल" में छपी थी। इस पुस्तक पर लेखक को 1964 के राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कारों में प्रथम पुरस्कार मिला था। कहानी के अंत में प्रसिद्ध चोर नटे टप्पा का ज़िक्र आया है जो बर्मी लोक गाथाओं का प्रसिद्ध पात्र है। यह एक प्रकार से रोबिन-हुड था जो निर्धनों में बांटने के लिये धनी वर्ग को लूटा करता था।

बरसात के मौसम की शुरुआत थी। हल्की-हल्की फुहार पड़ रही थी। मैं अपने एक दोस्त के साथ एक बड़े पेड़ के नीचे बैठा था। हम दोनों मिट्टी के खिलौने बना रहे थे। खिलौनों के लिये मिट्टी हमने दीमक की बांबी से ली थी इसलिये वह खूब चिकनी और चमकीली थी। रेतीली मिट्टी की तरह वह भुरभुरी नहीं थी। उस समय हम मिट्टी से छोटी-छोटी गायें बना रहे थे।



तभी दो बड़े लड़के हमारे पास आये। ये दोनों गांव के दूसरी तरफ रहते थे। उनमें एक की सेहत अच्छी थी। इसी सेहत के कारण उसे सब 'क्वीगी' कह कर चिढ़ाते थे। इसका अर्थ होता है 'मोटा भैंसा'। उसने अपनी कमीज़ में एक ज़िन्दा बगुला छिपा रखा था।

मेरे दोस्त ने उससे पूछा—"यह बगुला तुम्हें कहां से मिला। तुमने क्या इसे अपनी गुलेल से मारा ?"

"हां, यह तालाब के किनारे था जब मैंने इसे मार गिराया।" क्वीगी ने कहा।

"मैंने भी एक बगुले पर निशाना लगाया था पर वह उड़ गया," दूसरे लड़के ने कहा।

"निकाल कर ज़रा दिखाओ तो सही, कैसा बगुला है ?" मैंने क्वीगी से कहा।

पहले तो उसने टालने का बहाना किया। लेकिन फिर उसने अपनी कमीज़ के अंदर से वह पक्षी निकाला। उन्होंने इसके पैरों को बांध रखा था जिससे कि यह उनके हाथ से न निकल जाये। मैंने बगुले को अपने हाथों में लिया। मुझे यह बहुत प्यारा लगा। कितना सुन्दर, कितना सलोना। दूध जैसे सफेद पंख, तूतिया रंग की मोहक टांगें और चोंच। क्या ही अच्छा हो यदि यह पक्षी मेरे पास हो। मुझे पशु-पक्षी पालने का शौक था। मेरे पास इस समय एक कुत्ता, एक बिल्ली और एक बड़ी मुर्गी थी। मुर्गी ने अब तक चौदह अंडे दे रखे थे। मैं इन



दिनों बहुत खुश था क्योंकि मुझे उस दिन का इन्तजार था जब इन अंडों से बच्चे निकलेंगे और मेरे पास बहुत सारे चूजे होंगे। पर अब मुझे वह सब याद नहीं था, बल्कि मुझे सिर्फ यही इच्छा थी कि किसी प्रकार क्वीगी से उस सुंदर बगुले को लूं।

क्वीगी भी मेरे चेहरे को देखकर भांप गया कि मेरा मन बगुले पर अटक रहा है। उसने मुझसे पूछा—"तुम क्या इसे पालना चाहते हो?"

मैंने फौरन उत्तर दिया, "चाहता तो हूं, पर तुम क्या मुझे दे दोगे?"

"क्यों नहीं, तुम ले लो, लेकिन इसके बदले में मुझे कुछ देना होगा। मुझे दस सिगरेटें चाहिये।" मेरे साथियों में तो कोई भी सिगरेट पीता नहीं था। कहां से सिगरेट दूंगा? क्वीगी और उसके साथी तो हमसे बड़े थे। वे सभी छिप छिपाकर सिगरेट पीते थे।

मैंने कहा, "मैं बगुला तो लेना चाहता हूं पर सिगरेट मेरे पास नहीं हैं।"

"लेकिन तुम्हारी बुआ, जो तुम्हारे साथ, तुम्हारे ही घर में रहती है, वह तो सिगरेट पीती है न? उससे लेकर कुछ सिगरेट दे दो।"

"नहीं, वह मुझे नहीं देगी और मुझमें इतनी हिम्मत नहीं कि बुआ से बिना पूछे सिगरेट ले लूं। यदि तुम चाहो तो मैं इस बगुले के बदले तुम्हें कुछ पैसे दे सकता हूं।"

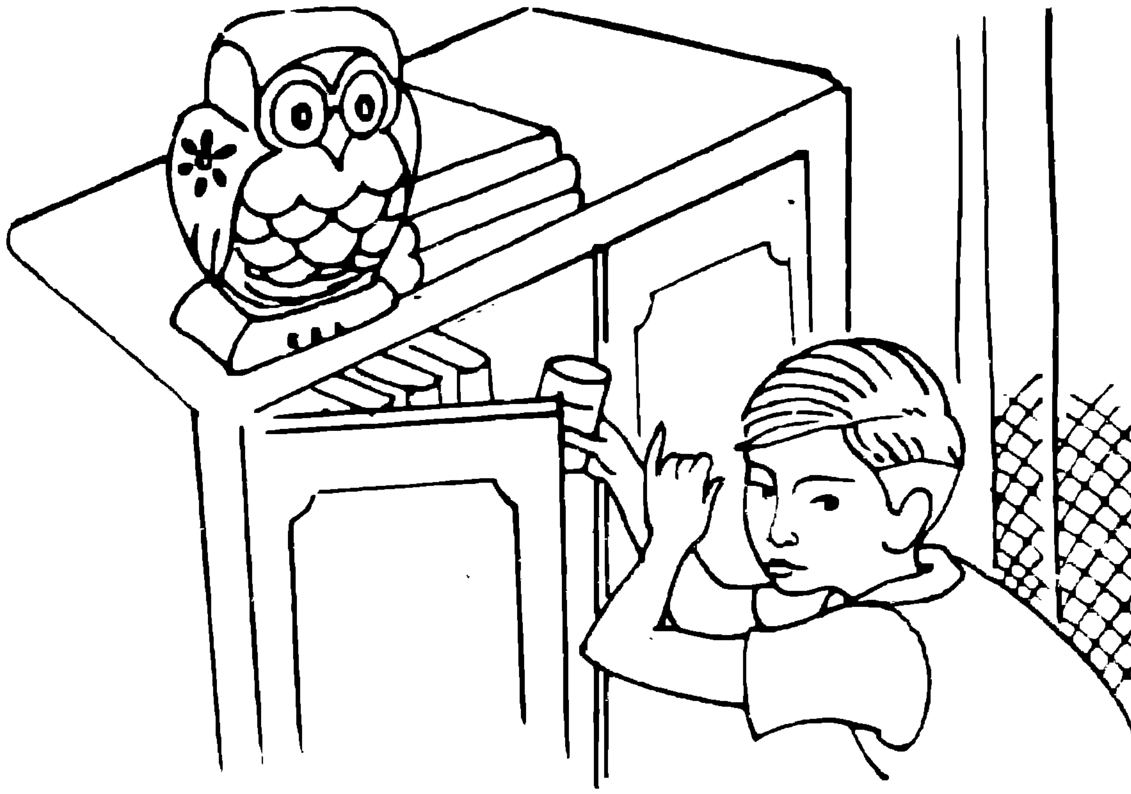
"पैसे हमारे किसी काम के नहीं। हमें तो सिर्फ सिगरेट ही चाहिये। यदि तुम नहीं दे सकते तो हम किसी और से बात करेंगे।"

मैं बिल्कुल निराश हो गया। क्या करूं कुछ समझ नहीं आया। मुझे बुआ की सिगरेट चुरानी चाहिये? नहीं, ऐसा करना ठीक नहीं। यह तो कोई अच्छी बात नहीं और फिर उसके बाद जो पिटाई होगी, मैं सोचता ही रहा।

"अच्छा चलें"—क्वीगी के साथी ने कहा। क्वीगी ने मेरे हाथों से बगुला छीना और दोनों चल दिये। बगुला मेरे हाथों से अलग होते ही अपने पंख फड़फड़ाने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह मुझसे दूर नहीं होना चाहता हो। मेरा दिल उस बगुले के लिए छटपटाने लगा—"यह सुन्दर बगुला मुझे मिलना ही चाहिये—", मैं सोचने लगा।

मैंने अपने साथी से पूछा, "अब क्या करना चाहिए।" उसने भी सिर हिला कर कह दिया "जैसा तुम ठीक समझो, करो।"

क्वीगी और उसका दोस्त जा रहे थे। बगुला उनके पास था। अभी तक भी वह पंख फड़फड़ा रहा था। मुझे लग रहा था कि वह मुझे अपने पास बुला रहा था। मुझसे यह अधिक सहन नहीं हुआ।



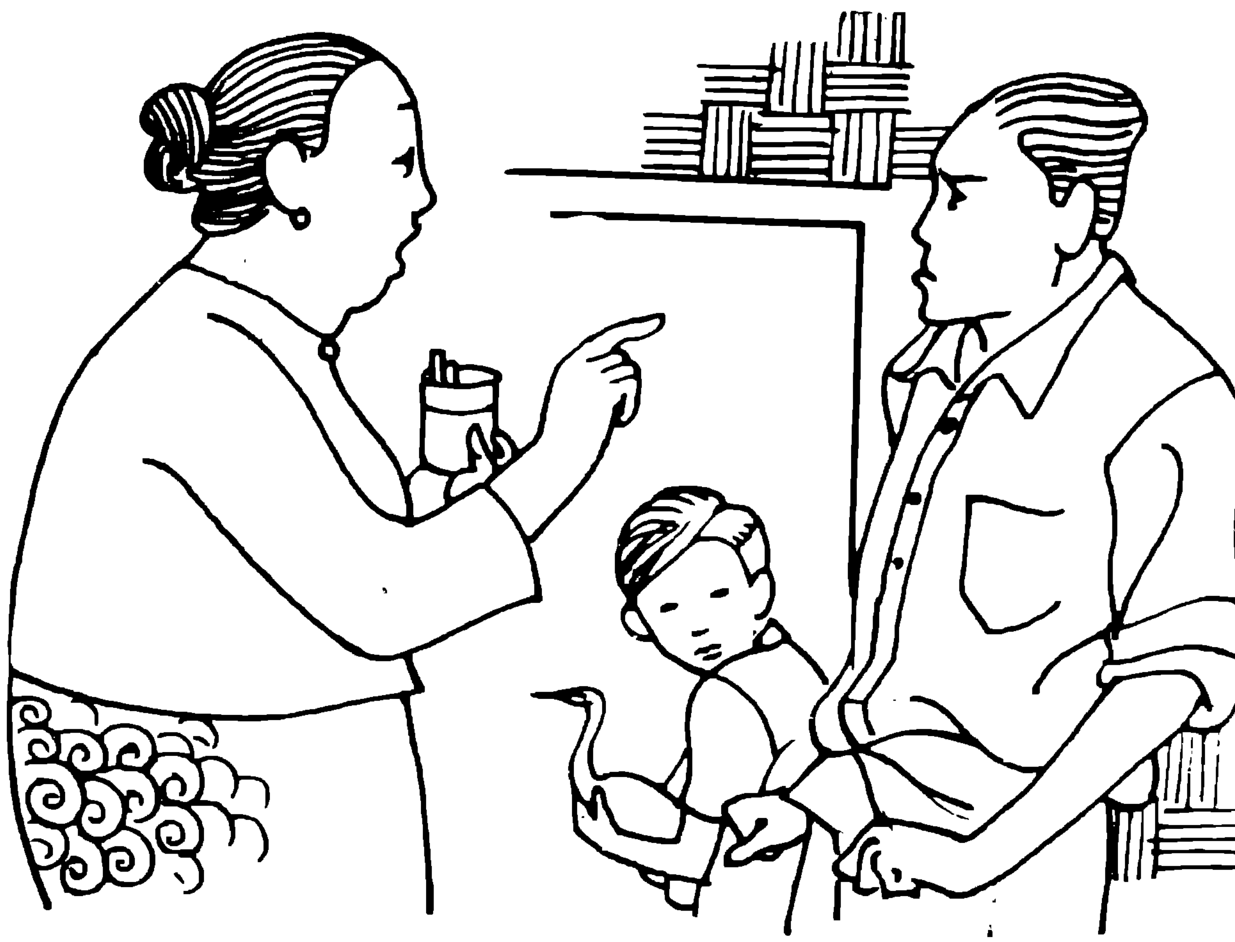
"ठीक है" मैं चिल्लाया, "बगुला ले आओ, मैं तुम्हें सिगरेट दूंगा, यहीं पर रुको।"

मैं सीधा घर की तरफ भागा। सीढ़ियों से चढ़कर बुआ के कमरे में गया। उनकी पुस्तकों की अलमारी खोली, मिट्टी सने हाथों से ही मैंने सिगरेट का डिब्बा निकाला। गिन कर पूरी दस सिगरेट निकालीं और डिब्बा मैंने ठीक से उसी जगह रख दिया जहां से उठाया था। डिब्बे में से दस सिगरेट निकल जाने से वह एक तरह से खाली सा हो गया था। सिगरेट निकाल कर मैं वापस उसी जगह पर भाग कर आया जहां पर तीनों लड़के मेरा इन्तजार कर रहे थे।

"ये लो, पूरी दस सिगरेट, गिन लो," मैंने क्वीगी से कहा। उसने मुझे बगुला दे दिया। मैं खुशी से फूला न समा रहा था। सोच रहा था कि मैं इस समय संसार के सबसे सुंदर बगुले का मालिक हूं।

मैंने अपने दोस्त से विदा ली और पक्षी को लेकर घर आ गया। एक पुराना बक्सा और बांस की कुछ छड़ियां इकट्ठी कीं। इनसे एक पिंजरा बनाया और बगुले को उसमें रखा। पिंजरे में मैंने उसके खाने के लिये भी कुछ रख दिया था। मैं दिन छिपने तक उस सुन्दर पक्षी में ही खोया रहा। उसके पिंजरे के पास ही बैठा रहा, उसकी हरकतों को देखकर खुश होता रहा। रात हो गई, रसोई में खाना बनने की आवाज मुझे आ रही थी।

खाना खाकर फिर मैं अपने बगुले के पास गया। पिंजरे के पास बैठा ही था कि अचानक मुझे बुआ की कड़कती आवाज सुनाई दी, "मेरी सिगरेट कौन चुराता



है ?" बुआ ने बारी-बारी से घर के सभी सदस्यों से पूछा, मुझसे नहीं। बुआ जानती थी कि मैं सिगरेट नहीं पीता। इसलिये वह सोच भी नहीं सकती थी कि मैं सिगरेटों की चोरी कर सकता हूं।

बुआ जब सभी से पूछ कर थक गई तो उनका ध्यान अपने छोटे भाई (मेरे चाचा) पर गया। मेरे चाचा 'सन आंग' भी हमारे साथ ही रहते थे और उनको रोज़ सुबह मछली पकड़ने का शौक था। बुआ ने कहा सिगरेट के डिब्बे पर मिट्टी से सनी उंगलियों के निशान हैं और यह जरूर चाचा का काम है। चाचा मछली पकड़ने के बाद आये होंगे, हाथ साफ़ करना भूल गये होंगे और उन्हीं गन्दे हाथों से उन्होंने सिगरेट निकाली होंगी। यह सब सोच कर बुआ ने चाचा को डांटना शुरू किया। उनके डांटने से लग रहा था जैसे चाचा ने कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो।

"लेकिन मैंने आपकी सिगरेट नहीं ली" चाचा कहते रहे, "जब भी मुझे किसी चीज़ की जरूरत होती है मैं आपसे मांग नहीं लेता हूं ? और अब तो मेरे पास काफी सिगरेटें हैं, देखो मेरे पास पैकिट है, पूरा भरा हुआ।" कह कर चाचा ने अपनी जेब से अपना सिगरेट का पैकिट निकाल कर दिखाया।

"लेकिन यह जरूर तुम्हीं हो—"बुआ ने कहा, "तुम्हारे सिवा और कौन हो सकता है ?"

"मैंने तो तुम्हारी सिगरेट छुई भी नहीं और फिर वे मुझे पसन्द भी नहीं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो, तुम चोर हो, फिर कभी मुझसे कोई चीज़ नहीं मांगना।"

चाचा सन आंग की मैं बहुत इज्ज़त करता था। वे मुझसे उम्र में भी बड़े थे। बुआ जब ही उनको डांट रही थी, मुझे अपने ऊपर शर्म आ रही थी। मेरे किये गये काम के लिये चाचा को दोषी ठहराया जा रहा था। उनको चोर और झूठा साबित किया जा रहा था। मैंने सिगरेट उठाते समय बिल्कुल भी नहीं सोचा था, लेकिन फिर भी असली चोर मैं ही था। चाचा को डांट पड़ रही थी और यदि इस वक्त मैं चुप रहता हूं तो मैं चोर के साथ-साथ झूठा भी हो जाऊंगा। चुप रहना भी तो एक तरह का झूठ बोलना ही है।

बुआ चाचा सन आंग के ऊपर चीखती-चिल्लाती रहीं और मुझे लगा कि चाचा को भी गुस्सा आ गया है। चाचा का चेहरा लाल हो गया था। ऐसा लगता था कि हंगामा बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं। गुस्से में अगर चाचा ने बुआ पर हाथ उठा दिया तो यह और भी बुरी बात होगी।

जहां वे दोनों लड़ रहे थे, मैं उस कमरे में गया, धीरे से बोला, "बुआ मुझे माफ करना, मैंने आपकी सिगरेट ली थी।"

चाचा और बुआ दोनों मेरी इस बात से हक्के बक्के।

"जी हां, मुझे पालने के लिये एक बगुले की ज़रूरत थी और उस बगुले की



कीमत दस सिगरेट थी। मैं किसी भी कीमत पर बगुला लेना चाहता था।" मैंने अपनी तरफ से उनको सही बात समझाने के विचार से कहा।

"क्या कभी किसी ने ऐसा पहले सुना है" बुआ चिल्लाई, "एक बूढ़े बगुले के लिये चोरी की तुमने।"

चाचा ने भी बुआ के साथ मिलकर मुझे डांटना शुरू कर दिया, "तुम्हें शर्म आनी चाहिये, एक बूढ़े बगुले के लिये ऐसा काम छि: छि:।"

"नहीं, नहीं, बुआ, वह बहुत ही सुंदर और सलोना बगुला है। उसे देखकर मेरा मन ललचा गया।" मेरे कहने पर भी बुआ और चाचा मेरी बात नहीं समझ रहे थे। बुआ ने कहा—"तुमने सिगरेट लेने से पहले मुझसे क्यों नहीं पूछा।"

"मुझे डर था कहीं आप मना न कर दें।"

"लेकिन क्या तुम जानते हो जिसमें सच बोलने का साहस न हो, वह कायर और झूठा—दोनों होता है।"

"मैं आपसे वायदा करता हूं कि फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा," मैंने कहा।

"ठीक है", बुआ ने कहा। उन्होंने बची हुई सिगरेटों में से एक सिगरेट निकाल कर सुलगाई और थोड़ा मुस्कराने की कोशिश की।

"इस बार तुम्हें माफ़ किया जाता है। मुझे उम्मीद है आइंदा तुम ऐसा कोई काम नहीं करोगे जिससे कि तुम बड़े होकर अपना नाम बदनाम कराओ।"

"नहीं बुआ, नहीं, ऐसा न कहिये। जब मैंने आपसे सब कुछ सच सच कह दिया है तब भी क्या मैं चोर हूं? मैं क्या आपको बड़े चोरों जैसा लगता हूं—बताओ बुआ?"

बुआ ने मेरे कंधे पर हाथ रखा मुझे थपथपाया, "नहीं, तुम चोर नहीं हो, आओ, चलो, मुझे और अपने चाचा को अपना सुंदर सलोना बगुला दिखाओ।" कहकर बुआ ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी।

हम तीनों पिंजरे की तरफ चल दिये, चाचा और बुआ हंस रहे थे पर मैं सोच रहा था, "नहीं, नहीं, मैं कभी चोरी नहीं करूंगा।"

चित्रांकन—यू सेन

भारत

बस की सैर

वल्लिकानन

नाम तो उसका था वल्लिमां पर उसको सब वल्ली ही कहते थे। उम्र उसकी केवल आठ वर्ष ही थी। उसके मन में सदा ही हर बात को जानने और समझने की इच्छा रहती थी। खेलकूद में उसका कोई साथी नहीं था। वह आमतौर से अकेली ही थी। काम उसे कुछ था नहीं। इसलिये दिन भर वह घर की दहलीज़ पर खड़ी रहती और देखती रहती कि सड़क पर क्या हो रहा है, कौन आ रहा है, कौन जा रहा है, आदि आदि।

चूंकि वह अकेली थी, दोस्त, सहेली कोई थी नहीं, खेल क्या खेले। अकेले में कोई खेल भी तो नहीं होता, बस घर की दहलीज़ पर ही खड़े रहो और जो कुछ भी बाहर हो रहा है, उसी का आनंद लो—यही काम था उसे। इसमें नये-नये अनुभव मिलते, नई-नई घटनायें देखती। कभी-कभी ये अनुभव और घटनायें अजीबो-गरीब हुआ करतीं।

एक बार एक विदेशी सिपाही उसकी गली से जा रहा था। जब वह उसके घर के नज़दीक आया, उसे वह बहुत अच्छा लगा। उसका सुंदर रूपरंग, आकर्षक व्यक्तित्व, रौबीला चेहरा, सुंदर कपड़े—हर तरह से देखने में वह अच्छा लग रहा था। उसके रौबीले चेहरे को देखकर कुछ बच्चे ही नहीं वरन् बड़े भी डर गये—क्योंकि उसके आने पर सब अपने अपने घरों में घुस गये। लेकिन वल्ली, वह नहीं डरी। वह अपने दरवाज़े पर ही खड़ी रही। जब वह सिपाही नज़दीक आया, वल्ली ने अपने दोनों पैरों की एड़ियां मिलाकर खटाक से सैनिक अन्दाज़ में सैल्यूट किया।

सिपाही बहुत खुश हुआ, वह रुका। वल्ली की तरफ देखकर मुस्कराया और पास आकर उसने भी वल्ली को गुडमार्निंग कहा। वल्ली भी खुश हो गई। सिपाही अपने रास्ते पर चल दिया।

वल्ली की खुशी का ठिकाना नहीं था, उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसने आज एक रौबीले सिपाही से बात जो की थी। आस-पड़ोस में जाकर वह


SPORT

सबको बताने लगी । पड़ोस के सभी लोग उसकी चर्चा करने लगे । कोई कहता, "देखो, कितनी बहादुर लड़की है ।" दूसरा कहता, "हां, एक अनजान सिपाही से आज इसने बात की ।" जहां देखो, यही चर्चा । वल्ली को एकदम महसूस हुआ कि वह अब छोटी बच्ची नहीं रही । वह अब बड़ी हो गई है । सब उसकी तारीफ जो कर रहे थे ।

वल्ली का घर गली में था । गली में भीड़-भाड़ नही रहती थी पर एसा भी नहीं कि बिल्कुल सुनसान ही रहता हो । वल्ली देखती कि पड़ोस वाले ताऊ जी बाज़ार जा रहे हैं । कभी देखती कि कोने के मकान वाले दादा जी कुछ खरीदारी करके धीरे-धीरे आ रहे है । कभी-कभी कोई अनजान व्यक्ति भी गली में निकल आता था । जब कभी कोई बैलगाड़ी उधर से गुज़रती तो उसके पहियों की चर्र चर्र-चूं-चूं की आवाज़ आती । बैलों के गले में बंधे घुंघरुओं की आवाज़ सुनाई पड़ती । कभी-कभी वल्ली देखती कि एक कुत्ता इधर से भाग कर गली के दूसरी तरफ निकल गया । भागने से लगता कि वह किसी ज़रूरी काम से जा रहा है । उधर जाकर अचानक वह रुकता । इधर-उधर सूंघता, टांग उठाता और गली के उस पार लगे पौधे पर पेशाब कर देता । इसके बाद वह फिर उसी तरह भागकर वापिस अपनी जगह लौटता, जैसे वह वहां कुछ भूली हुई चीज़ उठाने जा रहा हो । कभी-कभी गली मे भिखारी भी दिखाई दे जाता था । फेरी वाले तो अक्सर आते ही रहते थे । कहने का अर्थ यह कि गली में सदा कुछ न कुछ होता ही रहता था जिससे वल्ली का मन लगा रहता था ।

वल्ली को सबसे अच्छा लगता था, आती-जाती बस को देखना । उसके गांव से शहर तक आने-जाने के लिए केवल एक ही बस थी । यह बस हर एक घंटे के बाद गली से निकलती—एक बार शहर जाते हुए और एक बार आते हुए । बस में हर बार नयी सवारियां होतीं । आती-जाती बस को देखना वल्ली को बहुत अच्छा लगता ।

बस को आते-जाते रोज़ देखते-देखते वल्ली के मन में भी धीरे-धीरे बस की सवारी करने की इच्छा उठी । वह सोचने लगी—बस में बैठ कर देखना चाहिए—चाहे एक ही बार क्यों न हो । जब-जब वह बस को आते-जाते देखती, बस में बैठने की उसकी इच्छा और अधिक बढ़ती जाती । जब भी बस गली के कोने पर रुकती और उसमें से सवारियां उतरती चढ़तीं, वल्ली उन्हें टुकर-टुकर देखती । सवारियों के चेहरे उसके मन में आते रहते, उन्हीं के बारे में सोचती, हर समय बस का ख्याल । उसमें चढ़ने की इच्छा । कभी-कभी गली का कोई उसका हमउम्र बस में चढ़कर शहर जाता । लौटकर आने पर जब वह शहर या बस के

बारे में किसी को बताता तो वह मन ही मन जलभुन जाती। अन्दर ही अन्दर कह उठती, "घमंडी कहीं का।" वैसे वल्ली को या उसके किसी साथी को घमंडी शब्द का अर्थ ही मालूम नहीं था। पर इतना जरूर था कि यह शब्द अच्छे आदमी के लिये प्रयोग नहीं किया जाता।

दिन बीतते गये, कुछ महीने भी बीत गये। वल्ली सदा अपने उन पड़ोसियों से मिलने की कोशिश करती जो बस से शहर आते-जाते थे। उनसे अनेक तरह के सवाल पूछती। शहर के बारे में जानकारी हासिल करती। बस के बारे में पूछती। इस तरह उसे मालूम हो गया कि शहर उसके गांव से छः मील दूर है। बस में एक तरफ का किराया तीस पैसे था। एक दिन वल्ली ने किसी से सुना कि किराया तो मामूली ही है—सिर्फ तीस ही पैसे। वल्ली को बड़ा अजीब सा लगा क्योंकि उसके लिए तीस पैसे कोई मामूली रकम नहीं थी। उसने सोचा यदि वह पूरे महीने में भी तीस पैसे जोड़ ले तो उसके लिए यह बहुत बड़ी बात होगी। शहर तक जाने में बस को 45 मिनट का समय लगता था। उसने हिसाब लगाया—यदि बस में बैठकर शहर जाये और वहां उतरे नहीं तो उसी बस में बैठकर वापिस आ सकती है। तीस पैसे आने के और तीस जाने के—कुल साठ पैसे। अगर दोपहर में एक बजे की बस से जाये तो वह शहर पहुंचेगी पौने दो बजे और फिर लौटने के पैंतालिस मिनट—इस तरह ढाई बजे तक घर वापिस।

वह इसी तरह हिसाब लगाती रही। आने-जाने का समय, किराया जोड़ती रही। सोचती रही किस दिन चलूं, कैसे क्या किया जाये? आखिरकार वह दिन आ ही पहुंचा। एक दिन दोपहर को जब बस गांव से शहर आ रही थी और गली से निकलकर सड़क पर मुड़ने ही वाली थी कि आवाज़ आई, "बस रोको," "बस रोको"। ड्राईवर ने देखा कि एक छोटी सी बच्ची सड़क पर खड़ी अपने छोटे-छोटे हाथ हिला रही है।

बस की चाल धीमी हुई। कंडक्टर ने वल्ली को देखा और आश्चर्य से बोला, "अच्छा आज आप भी जा रही हैं।" कंडक्टर वल्ली को रोज़ दहलीज पर खड़े देखता ही था।

"हां, मुझे जरा शहर तक जाना है।" वल्ली ने उत्तर दिया—"मेरे पास पैसे हैं।" बाहर खड़े-खड़े ही उसने अपने पैसे भी दिखाये।

"ठीक है, ठीक है—पहले बस में चढ़ तो जाओ" कहकर कंडक्टर ने वल्ली को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

"चिंता न करो, मैं खुद चढ़ जाऊंगी—आप की मदद की कोई आवश्यकता नहीं।"

कंडक्टर ज़रा मज़ाकिया किस्म का आदमी था। हर समय हंसता-हंसाता रहता। वह बोला, "अरे अरे ! मेम साहब, नाराज़ नहीं होना। देखो, सबसे आगे सामने वाली सीट खाली है। वहीं चले जाओ। अरे भाई रास्ता देना, सभी लोग एक तरफ को हो जाओ, मेम साहब आ रही हैं।"

दोपहर का समय था इसलिए बस में केवल छः-सात ही सवारियां थीं। वे सब वल्ली को देखने लगे। कंडक्टर की बात पर उनको हंसी भी आई। वल्ली थोड़ा शर्मा गई। बिना किसी की तरफ देखे वह सीधी जाकर सामने वाली सीट पर बैठ गई।

"मेम साहब चलें"—हंसते हुए कंडक्टर फिर बोला। कहते ही उसने सीटी बजा दी और बस घर्र-घर्र करके चल दी।

बस बिल्कुल नई थी। उस पर नया-नया रोगन किया गया था। चमकदार सफेद रोगन उसके चारों तरफ हरे रंग की पट्टियां। बस के अंदर भी सफेद चांदी की तरह चमकते डंडे। जहां वल्ली बैठी थी—उसके सामने, ड्राईवर के शीशे के ऊपर, एक सुंदर दीवार घड़ी लगी हुई थी। बैठने की सीटें भी काफी आरामदायक और मुलायम थीं।

वल्ली बस के अंदर की हर चीज को देख रही थी। पर जब उसने बाहर देखने बाईं तरफ खिड़की की तरफ सिर घुमाया तो उसे लगा कि वह कुछ भी नहीं देख सकती। खिड़की के शीशे के नीचे-नीचे बस से बाहर की दुनिया में जो कुछ भी है, उसे तो वह बिल्कुल भी नहीं देख सकती। उसने एक उपाय ढूंढा—वह अपनी सीट पर खड़ी हो गई और शीशे से बाहर देखने लगी।

बस अब एक नहर के किनारे-किनारे जा रही थी। सड़क ज्यादा चौड़ी नहीं थी। बाईं तरफ नहर, नहर के बाद दूर लंबे-लंबे ताड़ के पेड़, हरियाले मैदान, पहाड़ियां और अंत में नीला आकाश। दाईं तरफ गहरी खाई सी थी—उसके बाद हरे-भरे लहलहाते खेत, जहां तक भी दिखाई पड़ता, यही सब था।

कितना अच्छा लग रहा था।

अचानक वल्ली को एक आवाज सुनाई दी। "सुनो, ऐ बच्ची बैठ जाओ, इस तरह सीट पर खड़े नहीं होते"—वह चकराई। सीट पर बैठ गई और चारों तरफ देखा कि कौन बोला था। उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी है जो वास्तव में वल्ली को सीट पर खड़ा देखकर चिंतित हो गया था। लेकिन वल्ली को उसका बोलना अच्छा नहीं लगा।

"यहां कोई बच्ची-वच्ची नहीं है, मैंने भी औरों की तरह पूरे तीस पैसे दिये हैं और पूरा टिकट खरीदा है"—वल्ली ने कहा।

कंडक्टर फिर बोला। उसने बूढ़े आदमी से कहा, "देखिये साहब, यह छोटी बच्ची नहीं है, ये तो मेम साहब है। आप क्या सोचते हैं, क्या कोई छोटी बच्ची पूरे तीस पैसे देगी और शहर तक अकेले सफर करेगी ?"

वल्ली ने गुस्से में कंडक्टर की तरफ देखा और कहा, "मैं मेम साहब नहीं हूं, याद है अभी तक तुमने मुझे टिकट भी नहीं दिया है।"

कंडक्टर ने वल्ली की नकल करते हुए जवाब दिया, "हां, हां, याद है" और हंस पड़ा। बस की सारी सवारियां भी कंडक्टर के साथ हंसी। वल्ली ने भी धीरे-धीरे उनके साथ हंसना शुरू किया।

कंडक्टर, वल्ली के पास आया, टिकट काटा और उसने वल्ली को दिया, "तुमने पूरी सीट का टिकट लिया है न, अब ज़रा आराम से अपनी सीट पर बैठ जाओ," वह बोला।

"क्योंकि मैं···चाहती हूं···" वल्ली ने कहा और फिर खड़ी हो गई।

"लेकिन तुम अगर इस तरह बार-बार खड़ी होओगी तो गिर जाओगी, और जब बस किसी मोड़ पर मुड़ेगी तो उस वक्त तुम्हें चोट लग सकती है। इसलिये बेटी, मैं तुम्हें बैठने के लिए कहता हूं।"

वल्ली ने नाराज़ होकर कहा—"मैंने कहा था न, मैं बच्ची नहीं हूं—पूरे आठ वर्ष की हो गई हूं।"

"अरे हां, मैं तो भूल ही गया था—तुम तो आठ वर्ष की हो गई हो।"

बस रुकी, कुछ नई सवारियां चढ़ीं और कंडक्टर फिर कुछ समय के लिए व्यस्त हो गया। सवारियों के आने से वल्ली को डर हुआ कि कहीं कोई उसकी सीट पर न आकर बैठ जाये। वह अपनी सीट पर बैठ गई।

इतने में ही एक बुढ़िया आई और वल्ली के साथ वाली सीट पर बैठ गई। जैसे ही बस चली, बुढ़िया ने उससे पूछा, "बेटी तुम क्या अकेली जा रही हो।"

वल्ली को बुढ़िया बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। उसके बड़े-बड़े कान, उनमें लंबे-लंबे छेद, उन छेदों में लटकते गोल-गोल बाले। बुढ़िया पान खा रही थी। वल्ली को सुपारी चबाने की आवज़ और पान की खुशबू आ रही थी। बुढ़िया के होंठ भी पान की लाली से चमक रहे थे। वल्ली को लग रहा था कि उसके होंठों से पान की पीक अब गिरी, अब गिरी। "उंह, इस बुढ़िया से कौन बात करे"—उसने सोचा और बेरुखेपन से फिर कह दिया, "हां, मैं अकेली ही हूं, मैंने अपना टिकट ले रखा है।"

"हां मांजी, ये मेमसाहब आज शहर जा रही हैं तीस पैसे का पूरा टिकट ले रखा है इन्होंने।" कंडक्टर अपनी जगह पर बैठा-बैठा बोला।



"तुम अपना काम करो"—वल्ली ने कहा। कहकर वह हंस पड़ी और कंडक्टर भी हंसा। लेकिन बुढ़िया मुंह से पान की लार टपकाते हुए बोली—"ऐसी छोटी बच्ची का अकेले सफर करना ठीक नहीं। तुम्हें क्या मालूम है शहर में कहां जाना है, मुहल्ला, मकान नंबर, गली वगैरह कुछ तो मालूम होना चाहिए।"

"तुम मेरी चिंता मत करो, मुझे सब मालूम है।" कहकर वल्ली ने अपना मुंह खिड़की की तरफ कर लिया और बाहर देखने लगी।

वल्ली के जीवन का पहला बस सफर। कितनी सावधानी बरती थी उसने इसकी तैयारी में। पूरी स्कीम बनाने में ही उसे कितना परिश्रम करना पड़ा था। जो कुछ भी थोड़ा-बहुत जेब खर्च उसे मिलता था, सारा का सारा उसने जोड़ लिया था। मन में कभी पिपरमेंट गोलियां लेने की इच्छा होती, कभी गुब्बारे, कभी झुनझुना, कोई खिलौना—लेकिन उसने कुछ नहीं लिया। इस तरह उसने साठ पैसे जोड़ ही लिए थे। उस दिन गांव में मेला भरा था। उसका कितना मन था झूला झूलने का, उसकी जेब में पैसे भी थे, पर उसने अपनी सारी इच्छाओं को दबाकर रखा, और पैसे बचाये।

जब उसके पास सफ़र के लायक पैसे हो गये, तो दूसरी परेशानी आई। मां को बिना बताये घर से कैसे जाये। इसका भी उसने हल ढूंढ लिया। दोपहर में खाना खाकर मां एक बजे से चार बजे तक सोती थी और यह समय था जब वह अक्सर अपने घर की दहलीज़ पर खड़ी होती थी। कभी-कभी वह गांव का एक

आध चक्कर भी लगा कर आ जाती थी । इसी समय का उपयोग वह आज बस के सफ़र के लिए कर रही थी ।

बस चली जा रही थी । लंबे-चौड़े मैदानों में से होकर, कहीं-कहीं रास्ते पर एक-आध छोटी-मोटी झोंपड़ी नजर आ जाती, कहीं कोई इक्का-दुक्का दुकान । कभी सामने से आती कोई बस या ट्रक आता हुआ दिखाई पड़ता । जब तक कि वह बस या ट्रक पास से बिल्कुल निकल नहीं जाता, ऐसा लगता जैसे कि हमारी बस के ऊपर ही चढ़ा जा रहा हो । कभी कहीं कोई पैदल यात्री सड़क के उस पार जाता दिखाई देता । ये सब कुछ देख-देखकर वल्ली खुश हो रही थी । चलती बस से देखने में लगता कि पेड़ एक लंबी कतार बनाकर बस की तरफ भागे चले आ रहे हैं और जैसे ही बस उन पेड़ों के पास पहुंचती वे सब निराश होकर एक तरफ खड़े हो जाते थे । इसके बाद दिखाई पड़ता कि वे सब पीछे की तरफ भागे जा रहे हों ।

अचानक वल्ली खुशी से नाच उठी । एक छोटी सी गाय अपनी पूंछ को हवा में ऊपर उठाये, सड़क के बीचों बीच, बस के आगे, सीधी भागी जा रही थी । बस की रफ्तार कुछ धीमी हुई । ड्राइवर ने जोर-जोर से हार्न बजाना शुरू किया लेकिन जितना ही वह हार्न बजाता, गाय उतना ही डर जाती और अधिक तेजी से भागती, सीधी बस के आगे ही आगे ।

वल्ली खुश हो रही थी । वह गाय को भागते देख रही थी और खुशी से हंस रही थी । उसकी हंसी रुकने का नाम नहीं ले रही थी—यहां तक कि हंसते-हंसते उसकी आंखों में आंसू भी आ गये ।

"ऐ, मेमसाहब, बहुत हंस चुकी हो, कुछ कल के लिए भी रखो ।" कंडक्टर ने कहा ।

आखिरकार, गाय सड़क से हट गई । इसके बाद आया रेल का फाटक । बस रुक गई । दूर बहुत दूर, एक रेलगाड़ी आती दिखाई दे रही थी । इतनी दूर कि जैसे एक छोटा सा काला-काला निशान हो । धीरे-धीरे वह साफ नजर आने लगी और पास आते आते एक पूरी गाड़ी दिखाई दी । उसकी गति और उसका शोर इतना अधिक था कि जैसे सारे वातावरण को ही उसने हिलाकर रख दिया हो । वल्ली को एक बारगी लगा कि उसकी बस भी हिल रही हो । गाड़ी के जाते ही फाटक खुला और बस चल पड़ी । इसके बाद आया एक बाजार—छोटा सा जिसमें थोड़ी भीड़-भाड़ । बाजार में से होकर बस एक खुली बड़ी सड़क पर आ गई । वहां भी बाजार था, पर यह खुला खुला, बड़ी-बड़ी दुकानें, उन पर सजा हुआ सामान । वल्ली यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गई । कितनी सजी सुंदर

चमकती दुकानें। इन पर लोग-बाग क्या खरीद रहे हैं वह तो जैसे अवाक रह गई।

इसके बाद आई वह जगह जहां बस को रुकना था। सभी सवारियां उतरीं, पर वल्ली, वह नहीं उतरी।

"ऐ मेमसाहब, तुम्हें उतरना नहीं," कंडक्टर ने कहा—"तीस पैसे में तुम यहीं तक आ सकती थीं।"

वल्ली ने कहा—"नहीं मुझे उतरना नहीं है। मैं इसी बस से वापिस जाऊंगी।" उसने फौरन अपनी जेब से तीस पैसे निकाले और कंडक्टर को दिये।

"क्यों, उतरना, क्यों नहीं ?"

"नहीं, कोई विशेष बात नहीं, मुझे तो केवल बस की सवारी करनी थी और कुछ नहीं।"

"अब जब तुम यहां तक आई ही हो, जरा नीचे उतरो, घूमो फिरो, इधर उधर देखो, कहां क्या है।"



"अकेले ही ? नहीं, नहीं, मुझे डर लगता है ।"

वल्ली की बातों में कंडक्टर को बहुत आनंद आ रहा था। उसने पूछा, "बस में अकेले आते वक्त क्या तुम्हें डर नहीं लगा था ?"

"नहीं, उसमें कोई डर नहीं लगा"—उसने उत्तर दिया।

"तो फिर नीचे उतरो, सामने की दुकान तक जाओ, कुछ घूमो फिरो, खाओ-पियो, इसमें डरने की कोई बात नहीं ।"

"नहीं, नहीं, मुझे नहीं जाना कहीं"

"अच्छा, ठीक है मैं ही कुछ तुम्हारे खाने-पीने के लिये ले आता हूं ।"

"नहीं, नहीं, मेरे पास ज्यादा पैसे नहीं हैं। तुम मेरा टिकट दे दो, सिर्फ टिकट ।"

"तुम्हारा कुछ भी खर्च नहीं होगा, खाने पीने का सामान मैं ही लाऊंगा अपनी तरफ से ।"

"नहीं, नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये"—उसने दृढ़ता से कहा।

कंडक्टर अपने कंधे उचका कर चल दिया। वह नीचे आ गया। वल्ली वहीं बैठी इंतजार कर रही थी। थोड़ी देर बाद ही बस के चलने का समय हो गया। इस बार सवारियां कम ही थीं ।"

कंडक्टर वल्ली के पास आया। टिकट देते हुये उसने फिर पूछा—"तुम्हारी मां तुम्हें खोज नहीं रही होगी ?"

"नहीं मुझे कोई नहीं खोज रहा होगा ।"

बस चल दी। लौटते वक्त वही सब दृश्य। वल्ली को इस बार भी उतना ही अच्छा लगा जितना उसे जाते समय लगा था। लेकिन तभी उसने देखा—सड़क के किनारे एक छोटी सी गाय मरी हुई पड़ी है। लगता था कि जैसे वह किसी तेज ट्रक से टकरा गई थी।

"क्या यह वही गाय थी जो जाते समय हमारी बस के आगे आगे भाग रही थी ?" वल्ली ने कंडक्टर से पूछा।

कंडक्टर ने अपना सिर हिलाकर हां कर दी। वल्ली को बहुत दुख हुआ। थोड़ी देर पहले यही गाय कितनी सुंदर और प्यारी लग रही थी। अब एकदम बेजान हो गई थी। उसकी सारी सुंदरता समाप्त हो गई थी। अब तो वह बहुत भयानक दिखाई दे रही थी। टांगे खुली, मुंह एक तरफ को, आंखें पथराई हुई, चारों तरफ खून ही खून—सब कुछ डरावना सा लग रह था।

बस चलती रही। वल्ली के मन में गाय की तस्वीर घूमती रही—मरी हुई गाय, भयानक, डरावने रूप में। उसका सारा जोश ठंडा पड़ गया था। अब तो

उसकी खिड़की से बाहर देखने की इच्छा भी खत्म हो गई थी।

वह सीट पर बैठ गई, एकदम चिपककर, उदास-उदास। बस गांव में पहुंच गई—तीन बजकर चालीस मिनट हो गये थे। बस की सवारियां उतरीं। वल्ली ने भी ऊपर से नीचे तक खुद को देखा—उतरते-उतरते कंडक्टर से बोली, "अच्छा-अच्छा फिर मिलेंगे।"

कंडक्टर ने हंसकर उत्तर दिया, "ठीक है मेमसाहब, जब भी बस की सवारी करनी हो, बेहिचक आ जाना। और हां, किराया लाना नहीं भूलना।"

वल्ली हंसी, कूदकर बस से उतर गई। भाग कर सीधी अपने घर गई।

जैसे ही घर में घुसी, उसने देखा मां सोकर भी उठ गई है और पड़ोस वाली चाची से बात कर रही है। यह चाची चटर चटर कर बहुत ज्यादा बोलती थी। कभी चुप नहीं होती थी। बस एक बार शुरू होने की देर थी।

वल्ली को देखते ही चाची ने कहा, "तुम कहां थी"—उनका पूछने का ढंग कुछ ऐसा था जैसे उन्होंने ख्वामख्वाह पूछा है क्योंकि उनको उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। वल्ली ने उत्तर नहीं दिया वरन् वह धीरे से मुस्करा दी। मां और चाची अपनी बातचीत में लगी रहीं।

"हां, बहन जी, आप ठीक कह रही हैं, हमारे आसपास और इस पूरी दुनिया में इतना कुछ है कि सबको जानना या समझना बहुत मुश्किल है।" मां चाची से कह रही थी—"और जब हम किसी के बारे में जानते भी हैं तो भी हम उसको पूरी तरह नहीं समझ सकते।"

"हां, आपने ठीक कहा।"—वल्ली बोल पड़ी।

"क्या ? तुम कुछ बोली ?" मां ने वल्ली से पूछा।

"हां मां, मैं कह रही थी, कि आप ठीक कह रही हैं। मैं भी यही मानती हूं। दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसे हम पूरी तरह जान ही नहीं सकते।"—वल्ली ने उत्तर दिया।

"देखो, क्या बित्ती सी लड़की"—चाची बोली, "और हमारी बातचीत में अपनी टांग अड़ा रही है। जैसे दादी हो।"

वल्ली अपने मन ही मन मुस्कराई और वहां से हट गई। वह अपनी मुस्कराहट मां और चाची को नहीं दिखाना चाहती थी क्योंकि इससे कोई लाभ भी नहीं था।

चित्रांकन —आर. के. लक्ष्मण

इंडोनेशिया

दादा जी को तोहफा

जसरान सफानो

दूर पहाड़ों पर एक छोटा सा गांव था। अकेला सा गांव। दूर-दूर बने घरोंवाला, शांत अकेला सा गांव जहां हो-हल्ले का नाम तक नहीं। पहाड़ों से एक नदी आती थी जो इस गांव के बीच से बहती थी। नदी का पानी साफ था और वह पहाड़ियों-चट्टानों के बीच मुड़ती, गिरती, रुकती हुई सी आती थी। गांव में आते-आते उसकी रफ्तार तेज़ हो जाती थी। इसी गांव में एक लड़का रहता था। इसका नाम बाकरी था। रात में जब गांव वाले अपने-अपने बिस्तरों में होते तो नदी के पानी की कलकल की आवाज़ उनको साफ सुनाई देती थी। रोज़ सुबह उनकी नींद एक दूसरी आवाज़ से खुलती थी। यह आवाज़ थी दूर नदी पार बजते ढोल की। ढोल के बाद मस्जिद की मीनार से गूंजती अज़ान की आवाज आती। रात में नदी की कलकल, सुबह में ढोल का बजना, उसके बाद अज़ान, ये सब मानो गांव वालों की जिन्दगी का एक हिस्सा बन चुकी थीं।

अज़ान की आवाज़ और किसी की नहीं—बाकरी के दादू की थी, जो पूरे गाँव को रोज़ सुबह सुनाई देती। उनकी आवाज़ बहुत बुलन्द और भरी हुई थी। जब वो अज़ान देते तो लगता जैसे जमीन से उठने वाली यह आवाज़ जन्नत तक पहुंच रही हो। बाकरी के दादू अपने काम के बड़े पाबन्द थे। कभी किसी दिन अपने काम में उन्होंने कोई कोताही नहीं बरती। लेकिन एक दिन की बात। सुबह हो गई पर अज़ान की आवाज नहीं आई थी। गांव में सभी को खाली-खाली सा लग रहा था।

बाकरी रहता था गांव के एक तरफ और दादाजान का घर था दूसरी तरफ। उसने आज अज़ान नहीं सुनी। वह परेशान हो गया, आज क्या बात है? दादू को क्या हुआ? कहीं बीमार तो नहीं हो गये? या फिर कुछ और काम तो नहीं निकल आया। लेकिन क्या काम हो सकता था? उसे सुबह उठकर रोज सबसे पहले नमाज़ पढ़ने की आदत थी। आज उसका मन ठीक नहीं था। दादू की फिक्र थी। क्या करे, पहले दादू की खोज-खबर करे या फिर मस्जिद में जा कर नमाज़ अदा करे। ठीक है, मस्जिद ही चला जाये। दादू की खबर भी लग जायेगी और अपनी नमाज़ भी हो जायेगी।



वह पहुंचा मस्जिद में। चारों तरफ देखा। दादू कहीं नज़र नहीं आये। सबसे पूछा, किसी को मालूम नहीं। क्या करे? कहां मालूम करे? क्या वे बीमार हैं? नमाज़ पढ़ते वक्त यही सब उसके दिमाग़ में घूमता रहा।

नमाज़ खत्म कर जल्दी-जल्दी दादू के घर की तरफ चल दिया। थोड़ी ही दूर गया था कि सोचने लगा, क्या खाली हाथ दादू के पास जाऊं? नहीं, खाली हाथ नहीं। कुछ न कुछ तोहफा लेकर जाना चाहिये। क्या ले जाये? एकदम विचार आया—अखरोट। क्योंकि दादू को अखरोट बहुत पसन्द हैं। ठीक है, वह अखरोट ही ले जायेगा।

सुबह का वक्त तो था ही, धुंध बहुत गहरी थी। फिर भी वह उस पहाड़ी की तरफ चल दिया जहां अखरोट के पेड़ थे। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी पर मस्जिद जाने से पहले ही उसने बड़ा कोट पहन लिया था। अब वह जैसे-जैसे पहाड़ी की तरफ बढ़ रहा था उतनी ही सर्दी ज्यादा महसूस कर रहा था। कोट के बटन पूरे बंद कर लिये, गले तक। फिर भी सर्दी अपना पूरा असर दिखा रही थी।

चलते-चलते भी वह कुछ न कुछ सोचता जा रहा था, जैसे, वह ज़्यादा से ज़्यादा अखरोट इकट्ठे करेगा। दादू बहुत खुश होंगे कि वह अखरोट लाया है। वह दादू को अपने हाथ से खिलायेगा। पूरी की पूरी गिरी निकाल कर देगा। अखरोट के छिलके, हां छिलकों को भी वह काम में ले सकता है। सख्त तो होते ही हैं। उनसे अच्छे-अच्छे, छोटे-छोटे खिलौने बनाये जा सकते हैं। सुंदर-सुंदर मालायें बनाई जा सकती हैं। दादू तो बहुत अच्छी माला बनाते हैं। उनकी बनाई हुई माला बिकती भी बहुत महंगी है। एक एक माला पचास रुपये की बिक जाती है। अगर वह सौ मालायें बनाले तो वह बहुत मालामाल हो सकता है। पर, सौ मालाओं के लिये बहुत सारे अखरोट चाहिये। जब दादू के पास इतना रुपया हो जायेगा तो फिर कोई फिक्र नहीं रहेगी। वह मन ही मन हिसाब-किताब करने लगा। एक माला के पचास रुपये तो सौ माला के···पचास, सौ, डेढ सौ···वह उंगलियों पर गिनने लगा ···लेकिन उलझ गया हिसाब उसने ज्यादा तो पढ़ा ही नहीं था। तीसरी में ही तो पढ़ता था···बार-बार गिनता, जोड़ता, गुणा-भाग करता और उलझ जाता। खैर छोड़ो। कितना ही हो जाये। दादू जरूर ढेर सारे अखरोट देखकर खुश होंगे। जब दादू खुश होंगे तो वह भी खुश होगा।

सोच-सोच कर मन ही मन खुश होता। सीटी बजाता जा रहा था। फिर मन के विचारों में एक झटका लगा, रुका और सोचने लगा, अगर···अगर गांव के दूसरे लड़के पहाड़ी पर उससे पहले पहुंच गये तो···फिर तो उन्होंने सारे अखरोट उठा लिये होंगे! अगर अकेला देखकर उसको उन्होंने पीट दिया? नहीं, नहीं, उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिये। वह चलता गया।



पहाड़ी का ऊपरी मैदान आया। अभी अखरोट के पेड़ दूर थे। सूरज थोड़ा निकला था, आसमान में लाली अभी छायी हुई थी। वह फिर चलने लगा। उसने देखा कि चमगादड़ वापस जा रहे हैं, क्योंकि दिन निकल रहा है तो उनका सोने का वक्त हो रहा है। वह तेज़ी से चलने लगा। अखरोटों के पेड़ों के बीच पहुंच कर ही उसने सांस ली। चारों तरफ नज़र दौड़ाई कहीं कोई नहीं था। जान में जान आई।

पेड़ों के झुरमुट में घुसा। देखा, अखरोट ही अखरोट बिखरे पड़े हैं। रात को शायद आंधी चली थी, जभी तो इतने अखरोट टूटे पड़े हैं। खुशी खुशी उसने अखरोट इकट्ठे करने शुरू कर दिये। अपने कोट की जेबों में भर लिये। उसके

कोट की जेब बड़ी थी। "कोट अगर खराब हो गया तो घर जाकर ठीक भी कर लेगा"—उसने सोचा।

अचानक—उसे कुछ शोर सुनाई दिया। कुछ लोगों के आने की आवाज़ थी। जरूर ये गांव के दूसरे लड़के हैं। वह मन में डरा, "वे ज़रूर नाराज़ होंगे, क्योंकि वह उनसे बिना कहे सुबह-सुबह ही आ गया था। कहीं उन्होंने मुझसे सारे अखरोट छीन लिये तो? अगर उन्होंने मेरी पिटाई कर दी? वे मुझे लालची भी कहेंगे और···? इससे पहले कि वे सब लड़के ऊपर आ जायें, उसे छुप जाना चाहिये।"

वह एक झाड़ी में छिप गया। ऐसी झाड़ी में जो चारों तरफ से बिल्कुल ढकी हुई थी। मन में डर। वह बार-बार खुदा का नाम ले रहा था।

"मुझे कोई देख न ले।" वह इतना चुपचाप कि उसकी सांस की आवाज़ भी सुनाई ना दे। वह ऐसी झाड़ी में था जहां से वह आने वालों को सिर्फ देख सकता था। उसने देखा—पांच लड़के हैं, वे सब उसी स्थान पर पहुंच गये हैं। सभी गांव के हैं और बड़े बड़े हैं।

पांचों लड़के इधर-उधर देखने लगे। परेशान से। एक-दूसरे से पूछने लगे—"क्या हमें बहुत देर हो गई है?"

दूसरे ने कहा, "एक भी अखरोट ज़मीन पर नहीं है।"

"क्या बदकिस्मती, इतनी दूर चलकर भी आये और नतीजा कुछ नहीं", तीसरा बोला।

"कोई हमसे पहले ही यहां पहुंच गया है", सबसे तगड़े लड़के ने कहा।

फिर अचानक जैसे सभी को ख्याल आया हो, "जरूर बाकरी यहां आया होगा, वही सबसे पहले उठता है, सुबह ही सुबह।"

एक लड़का बोला—"वह रोज सुबह मस्जिद में जाता है न, नमाज़ पढ़ने।"

बाकरी झाड़ी में छुपा छुपा सब सुन रहा था। मन का डर बढ़ता ही जाता था। जितना डरता उतना ही वह खुदा को याद करता। "हे अल्ला ताला, मेरी जान बचा।"

पांचों लड़के परेशान थे। क्या करें, उनको तभी घास पर पड़ी ओस की बूंदों पर पैरों के निशान दिखाई दिये। एक चिल्लाया—"देखो देखो, बाकरी के पैरों के निशान, वही सारे अखरोट उठाकर ले गया है।"

दूसरा बोला—"जल्दी चलो, अभी तो हम उसको पकड़ सकते हैं। रास्ते में ही होगा—उससे अखरोट भी छीन लेंगे।"

तगड़ा लड़का कुछ सोचता रहा। कुछ देर सोच कर बोला, "नहीं, यह ठीक नहीं होगा। कड़कती ठंड, इतने सवेरे उठना, मस्जिद जाना, फिर यहां इतनी दूर आना,

यह सब उसने किया और हम सब, मज़े से बिस्तरों में सोये रहे, उठकर अलसाये हुये यहां आ गये । इसलिये उन अखरोटों पर उसी का हक है, हमारा नहीं । अगर हमें अखरोट चाहिये तो सुबह-सुबह उठना चाहिये । उससे पहले यहां पहुंचना चाहिये । उससे छीनना तो सरासर बेईमानी होगी । एक बात और, हम सबको भी सुबह-सुबह रोज़ मस्जिद जाना चाहिये । नमाज़ में शरीक होना चाहिये ।''

यह सुनते ही बाकी सबके चेहरे उतर गये । यह तो सभी जानते थे कि वह ठीक कह रहा है । अगर वे आलसी न होते तो सारे अखरोट उन्हीं को मिलते । सभी चुपचाप, चल दिये वापस, अपने घरों की तरफ ।

झाड़ी में छुपा-छुपा बाकरी चुपचाप सब कुछ सुन रहा था । उसने देखा कि सब वापिस चल दिये हैं । उसका मन पसीज गया । उसने मन में खुदा का शुक्रिया अदा किया । उसकी जान जो बच गई थी । अगर उन लड़कों ने उसे देख लिया होता तो उसका भुर्ता बन गया होता । उसका ध्यान उन लड़कों के उतरे हुये चेहरों पर





गया । कितने दुःखी थे वे सब । उनको एक भी अखरोट नहीं मिला था आज । अचानक वह ज़ोर से चिल्लाया । उनको आवाज़ दी । "रुको, रुको" कहता हुआ उनके पीछे-पीछे भागा ।

सभी लड़के रुके । सबको ताज्जुब—"यह कहां से निकल आया । ऊपर पहाड़ी पर तो नहीं था ।" बाकरी उनके पास पहुंचा, हांफते-हांफते बोला—"मुझे माफ करना, दोस्तो, आज मैंने सारे ही अखरोट उठा लिये थे । लो, कुछ तुम भी ले लो । हम सब दोस्त हैं न, हम सबको मिल-बांटकर लेना चाहिये ।"

सब परेशान, यह क्या हुआ, कैसे हुआ । सबसे बड़ा लड़का बोला, "नहीं, नहीं, शुक्रिया, बाकरी, तुम सबसे पहले उठे हो, यहां पहुंचे, तुमने मेहनत की, अखरोट इकट्ठे किये, इन पर अब तुम्हारा ही हक है ।"

"बेवकूफी न करो ।" बाकरी ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"मैं सच कह रहा हूं । थोड़े अखरोट तुम भी ले लो । मैं बताता हूं ऐसा क्यों हुआ । आज दादू ने नमाज़ नहीं पढ़ी, वे मस्जिद नहीं गये । मैंने सोचा उनसे मिलने जाऊं तो कुछ अखरोट भी लेता जाऊं । शायद वे बीमार हों । अखरोट देखकर खुश हो जायेंगे । बस मैं उनको अपना हिस्सा दे दूंगा । बाकी सब तुम ले लो ।"

एक लड़का बोला, "हां, आज सुबह तुम्हारे दादू किसी से बात कर रहे थे । कह रहे थे कि उनको सर्दी लग गई है और जुकाम हो गया है । ठीक होने में कुछ वक्त लग जायेगा । फिर वे मस्जिद जायेंगे ।"

बड़ा लड़का कहने लगा—"हम ऐसा करते हैं, बाकरी के हिस्से के अखरोट हम आपस में बांट लेते हैं। फिर हम दादू के पास चलेंगे और बाकी सारे अखरोट उन्हीं को दे देंगे। वे जब ठीक होंगे तो हम उनकी बुलंद आवाज से उठती अज़ान फिर सुन सकेंगे।

सबने हां में हां मिलाई। धुंध साफ हो गई थी। सब लड़के खुश। एक-दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर चल दिये। सूरज अब पहाड़ी के ऊपर आ गया था।

चित्रांकन—मोएसमन एफेन्डी



ईरान

कवि और सूरज

साइरस तहबाज़

(कहानी के अंत में दी गई कविता आधुनिक ईरानी कविता के जन्मदाता नीमा यूशीज की है—लेखक)

उस लड़के को सूरज बहुत अच्छा लगता था। सभी वस्तुओं से ज्यादा अच्छा। सूरज की रोशनी में वह देख सकता था, सुन सकता था, गाना गा सकता था।

जब सूरज चमकता, उसका घर चमक उठता। पानी में नीलाई आ जाती, पेड़ों पर हरियाली छा जाती, पत्थरों-चट्टानों पर सफेदी आ जाती। हर वस्तु में अपना रंग आ जाता, ऐसा लगता जैसे सूरज की रोशनी में सभी जगह नई चेतना आ गई हो।

उसका दोस्त—मुर्गा—सुबह-सुबह जब बांग देता तो सभी लोग उसकी बांग सुनकर जाग जाते—भेड़ और चिड़िया भी उसकी बांग सुनकर अपना दिन शुरू करती। उसका दूसरा दोस्त—खरगोश—भी बांग सुनकर उठता, अपने कानों को हिलाता हुआ जंगल की तरफ चल देता। वह लड़का भी खरगोश को देखता हुआ उससे आगे-आगे चलता, रास्ते में रुक-रुक कर उसकी गर्म गर्म कमर पर हाथ भी फेरता।

उस लड़के को चिड़ियों से बहुत लगाव था। उसे उनका सुबह-सुबह जागते हुये चीचीं की आवाज़ करना अच्छा लगता। चिड़िया जब आसमान में उड़ती, उन्हें देखना उसे अच्छा लगता, सूरज की रोशनी में इन चिड़ियों के रंगीन पंख उसे बहुत लुभावने लगते।

लेकिन इन सबसे ज्यादा उसे अच्छा लगता, सूरज।

सूरज के छिपने पर मुर्गा अपने दड़बे में लौट आता। खरगोश अपने लम्बे कानों को सिकोड़ लेता और अपनी आंखें बन्द कर लेता। रात का बाज़ भी लौट आता। दूसरी सभी चिड़ियां डर कर गाना नहीं गातीं।

सूरज के छिपने पर सब जगह अंधेरा छा जाता, पृथ्वी पर कालिमा छा जाती। सभी जगह अंधेरा छा जाता, गहन अंधकार, काला अंधकार।

उस लड़के को अंधेरा बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। उसकी आंखों को



अंधेरे में कोई रंग नजर नहीं आता था। उसके कान कोई गाना नहीं सुन पाते थे। इसलिये वह भी सो जाता था।

एक रात उसने सपना देखा—वह बड़ा हो गया है। अब वह बड़ी ऊंची पहाड़ियों पर चढ़ सकता है। उसने तय किया—वह नजदीक के पहाड़ पर चढ़ेगा, सूरज को अपने हाथों में पकड़ेगा और अपने घर ले आयेगा, और फिर, फिर कभी कहीं अंधेरा नहीं होगा।

दूसरे दिन सुबह हुई, मुर्गा अभी बांग दे ही रहा था कि लड़का घर से निकल गया। खरगोश ने जब आंखें खोलीं तो वह जा चुका था।

"मुझे तो मालूम नहीं, वह कहां गया", मुर्गे ने खरगोश से कहा, "लेकिन वह इस तरफ गया था" और उसने पहाड़ पर जाने वाले रास्ते की तरफ इशारा किया।

खरगोश ने कहा, "हमें भी उसके पीछे-पीछे चलना चाहिये, उसे अकेला छोड़ना ठीक नहीं।"

खरगोश दौड़ा और दौड़ता ही गया। मुर्गा भी नाचता, कूदता उसके पीछे-पीछे भागा कि कहीं वह पीछे न रह जाये।

लड़का पहाड़ की तलहटी में पहुंच चुका था जब तक मुर्गा और खरगोश उसके पास पहुंचे। लड़का अपने मित्रों को अपने पास देखकर बहुत खुश हुआ। वह रुका, प्यार से उसने खरगोश को सहलाया। मुर्गे की तरफ हाथ हिलाकर उसने अपना प्यार उड़ेला।

लड़का खुश था कि अब वह अकेला नहीं था। पहाड़ तो काफी ऊंचा है। उसने जल्दी-जल्दी चढ़ना शुरू किया। उसे डर था कि उसके ऊपर चढ़ने से पहले ही सूरज कहीं दूर जा सकता है।

चढ़ते-चढ़ते मुर्गा थक गया। वह सुस्ताने के लिये एक बड़ी चट्टान पर बैठ गया। लेकिन लड़के ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसे अपनी धुन में थकने का ख्याल भी नहीं था।

खरगोश को रास्ता मालूम था। अपनी मजबूत टांगों से वह कितनी ही ऊंचाई तक कूद सकता था, किसी भी ऊंची पहाड़ी पर चढ़ सकता था। लेकिन फिर भी वह धीरे-धीरे चल रहा था जिससे कि लड़के के साथ-साथ चल सके।

पहाड़ एक अच्छे खासे जंगल की तरह था। कहीं बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं तो कहीं लम्बे-लम्बे पेड़ थे। इधर छोटी-छोटी झाड़ियां थी तो उधर लम्बी-लम्बी घास—कहीं पानी का गड्ढा तो कहीं सूखी धरती।

चारों तरफ हरियाली ही हरियाली। कहीं हल्के रंग में, तो कहीं गहरे रंग में। नई पत्तियों की हरियाली अलग चमक रही थी तो बारिश से धुली पत्तियों में अलग



निखार था ।

वहां दूसरे भी रंग थे—लाल, नारंगी, पीला, नीला, जामनी, बैंगनी···और भी न जाने कितने रंगों में खिले फूल । अलग-अलग तरह के पेड़, कहीं छोटे बौने से तो कहीं बड़े और लम्बे, झाड़ियां भी इसी तरह कहीं पतली छिटकी हुई तो कहीं घनी गहरी ।

वह लड़का जितने भी रंगों से परिचित अथवा अपरिचित था वे सभी वहां पर थे । और लड़के को यह भी मालूम था कि वहां सूरज है, पहाड़ की चोटी पर, उसकी इंतज़ार में ।

सफेद खरगोश लड़के से आगे-आगे दौड़ता रहा । लड़का भी चलता जा रहा था पर उसका ध्यान खरगोश के दौड़ने में और चिड़ियों की चींचीं में ज़्यादा था । वह इनमें इतना खोया था कि उसे मालूम ही नहीं हुआ कि कब वह पर्वत की चोटी पर पहुंच गया । अचानक उसने देखा कि रास्ता खत्म हो गया है । वहां न तो कोई झाड़ी थी, न कोई पेड़ । चारों तरफ लम्बी हरी घास के सिवाय कुछ न था और उसका दोस्त सफेद खरगोश उस घास में खेल रहा था ।

लड़का वहां रुका, उसने आसमान की तरफ देखा, आसमान में उसे सूरज दिखाई दिया । उसने पीछे मुड़कर उधर देखा जिधर से वे आये थे । उसने देखा, पेड़, झाड़ियां, चट्टान, लेकिन इन सबसे दूर पहाड़ की तलहटी में एक लम्बी पतली महीन सी भूरे रंग की एक लाइन । यह लाइन और कुछ नहीं, उसके गांव के मकानों की लाइन थी । उसको अपना घर यहां से इतना छोटा लगा कि वह ठीक से देख ही नहीं पा रहा था । सभी मकान एक धुंधली भूरी लाइन से लग रहे थे ।

मुड़कर वह आगे बढ़ा । ऊंची-ऊंची घास में से निकलकर वह पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया । वहां पहुंचकर वह रुका, नीचे की तरफ देखा, दूसरी तरफ ।

दूसरी तरफ भी पेड़ थे, झाड़ियां थीं और थी चट्टानें । नीचे, अंत में, दूर पर, मकानों की एक और भूरी लाइन थी । पहाड़ के दूसरी तरफ यह एक और गांव था, उसके अपने गांव की ही तरह ।

लेकिन सूरज, वह तो नहीं था—यहां—पहाड़ की चोटी पर ।

वह वहीं घास पर बैठ गया । सोचने लगा । उसने अपने-आपसे कहा, "सूरज यहां नहीं है । वह यहां कभी था भी नहीं । सूरज बड़ा होता है, काफी बड़ा, किसी भी पहाड़ से भी बड़ा । मेरे लिये उसके पास समय नहीं । उसके पास किसी के भी लिये समय नहीं ।"

वह घास पर लेट गया । खरगोश उसके पास खड़ा हो गया । अपनी आंखों को उसने हाथ की उंगलियों से ढक लिया । इसके बाद, अपनी उंगलियों के बीच में

छोटे-छोटे पतले-पतले छेद बनाकर, उन छेदों में से झांककर, आसमान में ऊपर सूरज की तरफ देखा। इस तरह फिर से उसे लगा, सूरज उसके पास है, बिल्कुल पास, जैसे उसके ही अपने हाथों में। अब उसे सूरज में वे सभी रंग दिखाई दिये जो उसने अभी तक देख रखे थे।

उसने देखा सूरज लाल है।

उसने देखा सूरज पीला है।

उसने देखा सूरज हरा है। पेड़ों के रंग जैसा, उनकी पत्तियों जैसा, खेतों में उगी घास के रंग जैसा।

उसने देखा सूरज में हर रंग है।
जितनी वस्तुओं का उसे ज्ञान था, वे सब सूरज में हैं।
जितनी वस्तुयें उसे पसंद थीं, वे सब सूरज में हैं।
उसने सूरज से बात की। सूरज को भी उसने कहते सुना।
"मैं सब जगह हूं,
सब जगह सभी वस्तुओं के साथ।
सभी व्यक्तियों के साथ और सभी व्यक्तियों के लिये।
जो मुझे प्यार करता है।
वह सभी को प्यार करता है।
जो मुझसे बात करता है,
वह सभी से बात करता है।"
लड़के ने कुछ नहीं कहा। सूरज ने सभी कुछ कहा।

उसने देखा, सूरज उसकी उंगलियों की पोरों में से खिसक रहा है। धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, उसके चेहरे तक आया, और फिर छाती पर आया। उसे अपने सीने पर गरमाहट महसूस हुई। यही गरमाहट उसके शरीर के प्रत्येक हिस्से में फैल गई।

लड़के ने आंखों पर से अपना हाथ हटाया और खड़ा हो गया।

खरगोश ने वापस उसी रास्ते पर दौड़ना शुरू कर दिया जिधर से वह आया था। खरगोश तेज़ी से दौड़ा और दौड़ कर एकदम उसी चट्टान पर पहुंच गया जहां मुर्गा उसकी इंतज़ार कर रहा था।

खरगोश ने कहा, "सूरज ने लड़के से बात की है।" इसके बाद खरगोश यह बात दूसरे खरगोशों से बताने के लिये भाग गया।

मुर्गे ने अपने पंख फैलाये, सिर को ऊंचा उठाया, और ऊंचे स्वर से गाने लगा। जितने भी ज़ोर से वह गा सकता था—उसने गाया।

मुर्गे ने गाना गाकर सभी चिड़ियों से कहा, "सूरज ने लड़के से बात की। सूरज ने लड़के से बात की।"

पवन ने मुर्गे के स्वर को सब जगह पहुंचाया। इस तरह आवाज़ पूरे जंगल में गूंज उठी, "सूरज ने लड़के से बात की, सूरज ने लड़के से बात की।"

सभी पेड़ों ने यह स्वर सुना, सभी घासों ने भी।
सभी पेड़ों ने चिड़ियों से कहा।
सभी चिड़ियों ने चट्टानों से कहा।
सभी चट्टानों ने बहते पानी से कहा।
बहते पानी ने पृथ्वी से कहा।
इसके बाद लड़का चल दिया वापस, पहाड़ से घर की तरफ।
घास ने उसके लिये बनाया रास्ता।
पेड़ों ने उसका स्वागत किया—अपनी टहनियां हिलाकर।
चिड़ियों ने उसका स्वागत किया—गाना गाकर।

अब उसने चिड़ियों की, पेड़ों की, चट्टानों की, पत्थरों की, सभी की भाषा समझ ली थी।

वह बड़ा हुआ, आदमी बन गया और फिर बना पिता। उसने चिड़ियों की चीं चीं को, पेड़ों की आवाज़ को, चट्टानों की लुढ़कन को, पानी की कलकल को स्वर-बद्ध कर दिया, इन सबको लिख लिया। उसने अपना यह काम सभी व्यक्तियों को दिखाया। पानी, पेड़, पत्थर और पक्षियों की भाषा कविता की भाषा होती है। यही मानवता की भाषा होती है।

मैंने उसकी वे कवितायें अपने पिता से सुनी थीं। मैंने फिर वे कवितायें अपने बेटे को पढ़कर सुनाई। उसकी कविताओं में से एक कविता यहां कह रहा हूं। वही कविता जो वर्षों पहले उस दिन वह पहाड़ की चोटी से लाया था :—

दूर, नदी किनारे घूमता एक बूढ़ा कछुआ
गर्मी के दिनों में लेटा,
धूप सेकता वह बूढ़ा कछुआ सोता,
शान्ति से नदी किनारे दूर,
नदी किनारे मैं हूं अकेला
हृदय में लिये अभिलाषा
सूरज से मिलने की उत्कंठा
लेकिन,
किसी एक क्षण के लिये भी



आंखें नहीं हूं कि मिला पाता
मेरे सूरज ने फेर लिया
मुझ से अपना मुंह दूर
दूर पानी में
लेकिन मुझे सभी कुछ सभी जगह
स्पष्ट हो गया है ।
मेरी बाधायें
मेरी शीघ्रतायें
मेरा सूरज अकेला नहीं है
दूर नदी किनारे

चित्रकार --निकलव नौखूमी

जापान

लोमड़ी का लड़का

(ननवोची नीमी: 1913—43)

सात लड़के चंद्रमा की रात में गांव की सड़क के किनारे-किनारे चले जा रहे थे। उन में कुछ तो छोटे बच्चे थे, जिन्होंने एक आध साल पहले ही स्कूल जाना शुरू किया था और दूसरे उनमें कुछ थोड़े बड़े थे। वे सबके सब पास वाले शहर में जा रहे थे जहां मंदिर में रात को बहुत बड़ा समारोह होने वाला था। वह शहर उनके गांव से लगभग एक मील दूर था।

चंद्रमा दूर आसमान में था। खिली चांदनी में जमीन पर पड़ती लड़कों की परछाइं बहुत छोटी थो। लड़के अपनी परछाई देखकर प्रसन्न हो रहे थे। परछाइं में उनके सिर कितने बड़े बड़े और टांगें छोटी छोटी लग रहीं थीं। वे सब हंस रहे थे। उनमें से कुछ ने आगे कुछ कदम बढ़कर अपनी परछाइंयों की शक्ल बदलने की कोशिश की। चांदनी रात में बच्चे हर तरह की अनोखी और अजीब कल्पनायें करते हैं।

सड़क जहां छोटी पहाड़ी के बीच से निकाली गई थी, वहां से थोड़ा नीचे को उतरती थी। जब वे पहाड़ी के पास पहुंचे, उनको बसंत की इस रात में बसंत बयार के साथ बांसुरी की हल्की सुरीली धुन सुनाई दी। यह आवाज़ एक समारोह से आ रही थी। इसे सुनकर उनकी चाल में तेजी आ गई। उनमें से एक छोटा बच्चा पीछे रह गया।

"जल्दी करो, बनरोकू, जल्दी," उन्होंने उसे आवाज़ दी।

बनरोकू नाम का यह बच्चा वास्तव में अपनी तरफ से दूसरे लड़कों के साथ आने की पूरी कोशिश कर रहा था। चंद्रमा की रोशनी में भी साफ नजर आ रहा था कि वह एक सुंदर, दुबला-पतला, छोटा बच्चा था जिसकी आंखे बड़ी-बड़ी थीं।

"मैं अपनी तरफ से काफी तेज चल रहा हूं।" उसने परेशानी के स्वर में उत्तर दिया, "लेकिन ये स्लीपर (लकड़ी की एड़ी के स्लीपर) ये मेरे नहीं हैं, मम्मी के हैं।" और वास्तव में उसकी पतली टांगें और छोटे-छोटे पैर बड़े स्लीपरों में अजीब से लग रहे थे।

शहर में पहुंचकर वे सबसे पहले बड़े बाजार में एक जूतों की दुकान पर गये।

बनरोकू की मम्मी ने उन लड़कों से उसके लिये एक स्लीपर खरीदने के लिये कहा था ।

योशीनोरी, जो उनमें सबसे बड़ा लड़का था, ने बनरोकू के कंधे पर हाथ रखा और दुकानदार की पत्नी से बोला, "सुनो, दादी मां, यह सीरोकू का बेटा है, वही सीरोकू, जो कनस्तरों का काम करता है । इसको स्लीपरों की एक जोड़ी चाहिये, जो इसके पैर में ठीक आ जाये । इसकी मम्मी ने कहा है कि वह स्लीपरों के पैसे बाद में दे देगी ।"

दूसरे लड़कों ने बनरोकू को आगे किया जिससे दुकानदार की पत्नी उसे देख सके । कनस्तरों वाले का यह छोटा लड़का उसके सामने सीधा और चुपचाप खड़ा था । बस अपनी बड़ी बड़ी आंखें कभी-कभी झपका लेता था ।

हंसते हुये उस महिला ने अपनी अलमारी से स्लीपरों के कुछ जोड़े उतारे जिनको वह समझती थी कि बनरोकू के पैर में ठीक आ जायेंगे । योशिनोरी, बनरोकू के पिता की भांति, नीचे उसके पास बैठ गया और एक एक जोड़े को बनरोकू के पैर से मिला मिला कर देखने लगा । बनरोकू शांत खड़ा रहा । कनस्तरों वालों का अकेला बेटा होने के कारण, वह एक तरह से बिगड़ा हुआ लड़का था । उसे अपना काम दूसरों से कराने की आदत पड़ गई थी ।

अंत में एक जोड़ी पसंद कर ली गई । जैसे ही बनरोकू स्लीपर की पट्टियों में पैर डाल रहा था, एक बहुत ही बूढ़ी औरत, जिसकी कमर झुक गई थी, दुकान में आई । बनरोकू और उसकी नये स्लीपरों की जोड़ी को देखकर वह कुछ बड़-बड़ाई—जैसे वह उन लड़कों से भी बोल रही हो और अपने आप से भी, "बेटा, मुझे तो मालूम नहीं कि यह किसका बच्चा है, लेकिन अगर तुम इतनी रात में नये स्लीपरों की जोड़ी पहनोगे तो तुम्हें ज़रूर लोमड़ी अपने वश में कर लेगी ।"

एक क्षण के लिये तो सब शांत हो गये । लड़कों ने बुढ़िया की तरफ इस तरह से घूरा जैसे वे बहुत डर गये हों । तभी योशी नोरी जोर से बोला, "नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं ।"

"ये तो सिर्फ अंधविश्वास की बात है," दूसरे ने कहा ।

सभी लड़कों ने सहमति में सिर हिलाया लेकिन फिर भी उनके चेहरों पर एक तरह की परेशानी झलक रही थी ।

"ठीक है", दूकानदार की पत्नी ने कहा, "ज़रा यह जोड़ा मुझे दो । मैं तुम्हारे लिये इसे ठीक कर देती हूं ।" इसके बाद उसने माचिस की तीली जलाने सा कुछ किया और तीली को हाथ में पकड़ कर बनरोकू के नये स्लीपरों की तली में कुछ देर के लिये कुछ किया । "देखो, इससे इन स्लीपरों की तली पर हल्का हल्का





काला दाग पड़ जायेगा और फिर ये नये नहीं रहेंगे । लो, अब सब कुछ ठीक ठाक है । वह असर भी खत्म हो गया । कोई लोमड़ी या बिज्जू तुम्हें प्रभावित नहीं कर सकता ।"

इसके बाद वे सब लड़के उस दुकान से निकल कर मंदिर के अहाते की तरफ चल दिये । वहां बाहर की तरफ ही एक मंच बना हुआ था । मंदिर में कुछ लड़कियां देव कन्याओं के रूप में नृत्य कर रही थीं । हर नर्तकी विस्मयजनक फुर्ती से दो दो चक्कर लेती हुई नृत्य कर रही थी । लड़के पूरी तन्मयता से देख रहे थे । बीच-बीच में वे अपनी आइसक्रीम भी खाते जाते थे लेकिन आंखें नर्तकियों पर ही टिकी हुई थीं । उन लड़कियों के चेहरों पर गहरे सफेद पाउडर का मेकअप था । इसीलिये उन लड़कों को यह पहचानने में समय लग गया कि इन लड़कियों में टोने की भी है । टोने की, जो गांव के पम्पघर में काम करती है ।

"देखो, देखो", लड़कों ने एक दूसरे के कान में फुसफुसाते हुए कहा, "वह बुढ़िया टोने को ।"

थोड़ी देर बाद जब उन्होंने काफी नृत्य देख लिया तो वे मंदिर के दूसरे कोने की तरफ चल दिये । उस कोने में वैसे तो अंधेरा था पर वहां इस समय आतिशबाजी और पटाखे चलाये जा रहे थे । तभी कण्डीलों से जगमगाते और घूमते मंच पर कठपुतलियों का खेल शुरू हुआ । भीड़ को चीरते हुये वे सब किसी न किसी तरह मंच के आगे तक पहुंच गये जहां से वे उस छोटी छज्जेनुमा स्टेज को ठीक तरह से देख सकते थे ।

एक कठपुतली नाच रही थी । लड़कों ने उसे देखा । कठपुतली न तो बड़ी उम्र के आदमी की तरह लग रही थी और न बच्चे की तरह ही । उसकी काली आंखें इतनी चमकदार थीं कि यह विश्वास करना मुश्किल था कि यह असली आदमी है या नकली । बीच बीच में कठपुतली अपनी आंखें भी झपकाती थी । लड़के यह तो जानते थे कि कठपुतली के पीछे इसे नचाने वाला खड़ा था, लेकिन फिर भी जब कठपुतली आंखें इधर उधर घुमाती थी तो वे एक बारगी डर जाते थे ।

तभी अचानक कठपुतली ने अपना मुंह खोला, लम्बी जीभ बाहर निकाली और इससे पहले कि आश्चर्य में लड़कों की चीख निकल जाती, उसने अपना मुंह बंद कर लिया । इतनी देर में ही लड़कों ने देख लिया था, कठपुतली का मुंह अंदर से पूरा लाल था । वे जानते थे कि यह कठपुतली वाले का ही काम है । अगर यह दिन का समय होता तो वे इसे देखकर हंस भी पड़ते—लेकिन इस समय कोई नहीं हंसा । कठपुतली, उसकी बार बार झपकती आंखें, लाल जीभ, लाल मुंह, और कंडीलों की रोशनी में बनती इन सबकी अजीबोगरीब परछाईयां । यह सब कुछ देखने में वास्तविक जरूर लग रहा था और वे लड़के इससे डर गये थे ।

उन्हें बनरोकू के नये स्लीपरों की याद थी और बुढ़िया के शब्द भी याद थे, "अगर तुम रात में नये स्लीपर पहनोगे तो लोमड़ी तुम्हें मोहित कर लेगी ।" उनको यह भी महसूस हो रहा था कि इस समारोह में उन्हें बहुत देर लग गई है । पटाखों की आवाज़ कम होती जा रही थी और भीड़ भी छटने लगी थी । जब उन्होंने घर जाने की सोची तो उन्हें घर जाने के लिये पहाड़ी के ऊपर से होकर और ऊबड़-खाबड़ खेतों से निकलकर रास्ते का भी ध्यान आया ।

वे घर के लिये चल दिये । चंद्रमा आसमान में अभी भी चमक रहा था । लेकिन उनका उत्साह अब ठंडा पड़ गया था, चंद्रमा की रोशनी भी अब कुछ अच्छी नहीं लग रही थी । वे सभी चुपचाप चले जा रहे थे, जैसे हर कोई अपने हृदय को टटोल रहा हो ।

जब वे पहाड़ी पर पहुंचे, एक लड़के ने अपने मुंह पर हाथ रखकर अपने साथ के दूसरे लड़के के कान में फुसफुसाते हुये कुछ कहा। दूसरे लड़के ने इसी तरह तीसरे लड़के के कान में फुसफुसाहट की। इस तरह कानों-कानों में से होती हुई यह भेद भरी बात बनरोकू को छोड़कर सबके पास पहुंच गई।

उन्होंने एक-दूसरे से कहा था, "दुकानदार की पत्नी ने टोना टोटका कुछ नहीं किया। उसने तो माचिस जलाने का सिर्फ बहाना किया था।"

लड़के चले जा रहे थे। सांस रोके, शांत, चुपचाप। सब के सब एक ही बात सोच रहे थे "लोमड़ी द्वारा वश में करने की बात का वास्तविक अर्थ क्या होता है? क्या लोमड़ी का असर बनरोकू के अंदर आ जायेगा? या फिर बनरोकू का दिमाग लोमड़ी के दिमाग में बदल जायेगा जबकि वह बाहर से ज्यों का त्यों रहेगा? अगर ऐसा हुआ तो संभव है कि बनरोकू पर लोमड़ी का प्रभाव हो ही गया हो। लेकिन हमें कैसे पता चले जब तक कि बनरोकू कुछ बोले ना?..."



ढलान आ गया था। यहां पर छोटी-छोटी घास का मैदान था। लड़के तेजी से चले जा रहे थे। सबके सब बनरोकू और लोमड़ी के बारे में ही सोच रहे थे।

यह रास्ता एक तालाब के साथ-साथ था। तालाब के चारों तरफ बेर की झाड़ियां थीं। जैसे ही वे तालाब के पास से गुज़रे, एक लड़के को हल्की सी खांसी आई। चुप्पी के इस वातावरण में खांसी की आवाज़ साफ सुनाई दी। शक से सबने एक-दूसरे की तरफ देखा। सब तरफ शांति। धीरे-धीरे उनकी समझ में आ गया कि यह खांसी की आवाज़ बनरोकू की ही थी।

खांसा वैसे बनरोकू ने ही था। इसका क्या कोई गहरा अर्थ था? जितना ज्यादा वे इस बारे में सोचते, उन्हें पक्का यक़ीन होता जाता कि यह सिर्फ खांसी ही नहीं थी। हो न हो यह तो लोमड़ी के चीखने जैसी आवाज़ थी।

"हूं-हूं—।" बनरोकू ने फिर से खंखारा।

इस बार तो उन लड़कों को कोई संदेह ही नहीं रह गया था। निश्चित रूप से उनके बीच में यह कोई लोमड़ी ही थी। वे डर गये। उनकी चाल में और भी तेजी आ गई।

बनरोकू का घर, गांव के दूसरे घरों से दूर, छोटी घाटी के बीच, संतरों के पेड़ों के झुरमुट में था। रहट (चरखी वाला कुआं) के पास बड़ी सड़क से जो छोटी पगडंडी निकलती है, उसी से उसके घर पहुंचा जा सकता है। आमतौर से रोज़ाना ही लड़के बनरोकू को उसके घर तक छोड़ने आते थे, क्योंकि उनको मालूम था कि बनरोकू एक छोटा सा, कमजोर और प्यार में बिगड़ा हुआ बच्चा था। उसकी मम्मी अक्सर साथ आने वाले लड़कों को संतरे और मिठाई दिया करती। वह हमेशा ही उनसे बनरोकू का ख्याल रखने को कहती। वैसे आज भी वे सब बनरोकू को समारोह में जाने से पहले उसे लेने उसके घर गये।

लड़कों का यह समूह अब रहट तक पहुंच गया था। उन्होंने देखा कि बनरोकू के घर तक के रास्ते पर लम्बी लम्बी घास उग आई थी। इस कारण अब वह रास्ता साफ नज़र नहीं आ रहा था। उनकी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। ऐसा लगा जैसे कि बनरोकू को उसके घर तक छोड़ने की अपनी आदत अब वे भूल गये हों। लेकिन वास्तव में वे भूले नहीं थे। वे आज डरे हुये थे—उन्हें आज इस छोटे बच्चे से डर लग रहा था।

अंत में बनरोकू अकेला ही अपने घर की तरफ चल दिया। लेकिन वह पीछे मुड़ मुड़कर देखता जाता था। उसे उम्मीद थी कि योशि नोरी तो कम से कम उसके साथ आयेगा ही। लेकिन योशि नोरी भी नहीं हिला।

अकेला, बनरोकू अकेला ही अपने रास्ते पर जा रहा था। घाटी में चांदनी छिटकी



हुई थी। कहीं पास से ही मेढकों की टर्र टर्र अस्पष्ट सी उसे सुनाई पड़ रही थी। अब जैसे ही वह अपने घर के पास को पहुंचा, उसे इस बात का ख्याल ही नहीं रहा कि बड़े लड़कों में से कोई उसके साथ क्यों नहीं आया। ऐसा आज पहली बार ही हुआ था। वैसे बनरोकू अभी इतना अधिक समझदार नहीं हुआ था, फिर भी कहां क्या हो रहा है इतना समझने की बुद्धि उसमें थी। वह यह भी जानता था कि उसे जब खांसी आई थी तो उन लड़कों ने एक-दूसरे के कान में क्या फुसफुसाया था और उनको कैसा लगा था।

बनरोकू सोचता रहा। समारोह में जाते समय सभी लड़कों का व्यवहार उसके प्रति कितना सद्भावपूर्ण था लेकिन नये स्लीपर पहनने के बाद से सब उससे दूर-दूर होने लगे थे। "वे सोचते थे कि एक लोमड़ी ने मुझ पर जादू कर दिया है", वह सोचता रहा, "और इसीलिये अब मुझे वे पसंद नहीं करते।" उसके मन को ठेस लगी। यहां तक कि योशिनोरी जो उससे उम्र में भी बड़ा था और हमेशा उसकी मदद करता था—आज रात उसका व्यवहार भी विचित्र था। अक्सर उसका यह दोस्त (योशिनोरी) उसकी कठिनाई को एकदम भांप लिया करता था। एक बार की बात—बनरोकू को सर्दी लग रही थी तो योशिनोरी ने फौरन अपनी गर्म जाकिट

उतार कर उसे दे दी थी। पर आज रात, आज रात जब बनरोकू को दूसरी बार खांसी उठी, तब भी योशि नोरी ने अपनी जाकिट नहीं दी।

अब वह अपने घर के पिछले दरवाजे पर जहां क्यारियों के बाड़े का सिरा था पहुंच गया था। जैसे ही उसने लकड़ी का छोटा दरवाजा खोला, उसे जमीन पर अपनी परछाई दिखाई दी। तभी उसके दिमाग में एक संदेह उठा, "हो सकता है मुझ पर लोमड़ी का जादू हो गया हो, मगर ऐसा हुआ तो मम्मी और पापा मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे?"

उसके पापा आज कनस्तरों के दुकानदारों की एक मीटिंग में गये थे। वे आज देर से लौटेंगे—इसलिये बनरोकू और उसकी मम्मी ने सोने की तैयारी शुरू कर दी। पापा का इंतजार करने से कोई लाभ नहीं था। बनरोकू वैसे अब स्कूल जाता था, पर अभी भी मम्मी के साथ ही सोता था। वास्तव में वह मां-बाप का इकलौता बेटा था, प्यार में बिगड़ा हुआ, कमजोर।

जब वे बिस्तर में लेट गये, उसकी मम्मी ने पूछा, "अच्छा बेटा, समारोह के बारे में बताओ।" बनरोकू क्या क्या करता है, मम्मी हमेशा ही सब कुछ जानना चाहती थी। जब वह स्कूल जाता मम्मी उससे एक एक मिनट का काम पूछती कि वहां उसने क्या क्या किया? जब वह पहली बाहर शहर गया, वह पूछती रही कि उसने वहां क्या क्या देखा? जब वह सिनेमा देखने गया, मम्मी ने उससे पूरी कहानी पूछी थी।

बनरोकू बातचीत में इतना होशियार नहीं था। जो कुछ भी वह देखता, सुनता, करता, वह मम्मी को जरूर बताता पर धीरे-धीरे, अटक अटक कर। लेकिन मम्मी, बड़े ध्यान से सुनती और उसकी एक एक बात का आनंद लेती।

"नर्तकियों में, मम्मी, एक वह लड़की भी थी, वह बुढ़िया सी पम्पघर वाली लड़की, टोने को", बनरोकू ने कहा।

"ऐसी बात है", उसकी मम्मी ठठाकर हंसी, "और दूसरी लड़कियां कौन-कौन थीं—तुम्हें मालूम है?"

बनरोकू ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें खोलीं जैसे वह याद करने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन उसकी अगली बात का समारोह से कोई सम्बन्ध नहीं था। "मम्मी क्या यह सच है कि अगर तुम रात में नये स्लीपर पहली बार पहनो तो लोमड़ी जादू कर देती है?"

उसकी मम्मी को आश्चर्य हुआ। कुछ देर के लिये वह पेशोपेश में पड़ गई। एक बार तो उसकी समझ में नहीं आया कि बनरोकू किसकी बात कर रहा है। लेकिन जल्दी ही उन्हें इस बात का अंदाज़ लग गया कि इस छोटे बच्चे के साथ क्या बीती होगी।

"किसने कहा यह ?" मम्मी ने पूछा ।

बनरोकू ने अपना सवाल फिर से दोहराया, "क्या यह सच है ?"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं"—बहुत पहले पुराने जमाने में लोग ऐसी बातों को मानते थे ।

"तो यह सब झूठ है ?"

"हां—यह सब झूठ है ।"

"पक्की बात"

"हां, हां, बिल्कुल पक्की ।"

कुछ क्षणों के लिये बनरोकू शांत हो गया । उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें एक-दो बार झपकाई । अंत में पूछा, "मम्मी, अगर ऐसा हुआ भी, तो आप क्या करोगी ?"

"अगर कैसा हुआ ?" मम्मी ने पूछा

"मेरा मतलब है, अगर लोमड़ी मुझ पर अपना जादू कर दे और इस तरह मैं एक लोमड़ी बन जाऊं तो आप क्या करोगी ?"

उसकी मम्मी बहुत ज़ोर से हंसी

"मम्मी, बताओ ? जवाब दो ।" परेशान सा होकर वह उठा और उसने मम्मी को झकझोर दिया ।

"अच्छा, अच्छा," मम्मी ने कुछ सोचते हुये कहा, "अगर तुम लोमड़ी बन जाओ, फिर तो हम तुम्हें अपने घर में नहीं रख सकते ।"

बनरोकू ने जैसे ही मम्मी की बात सुनी, वह उदास हो गया । "फिर मैं कहां जाऊंगा ?" उसने पूछा ।

"तुम—शायद करासून पर्वत पर चले जाओ" मम्मी ने कहा, "कहते हैं लोमड़ियां अभी भी वहीं रहती हैं ।"

"फिर आप और पापा क्या करेंगे ?"

उसकी मम्मी ने अपने चेहरे को गम्भीर बना लिया, जैसा कि अक्सर बड़े लोग बच्चों को चिढ़ाते वक्त करते हैं । "तब हम आपस में बात करेंगे कि हमारा प्यारा बनरोकू अब लोमड़ी बन गया है—इस दुनिया में अब हमारे लिये क्या है, कुछ नहीं, हमें भी अब आदमी की बजाय लोमड़ी ही बन जाना चाहिये ।"

"आप और पापा भी लोमड़ी बन जायेंगे ?"

"हां, तुम्हारा पापा और मैं नये स्लीपर खरीदेंगे और कल रात पहनेंगे और इस तरह हम भी लोमड़ी बन जायेंगे । तब हम तीनों मिलकर करासून पर्वत पर जा सकेंगे ।"





बनरोकू की आंखें और चौड़ी हो गईं, "क्या यह पश्चिम में है—जहां ऊंचे-ऊंचे पर्वत हैं ?"

"हां, हां, यह शिमाने प्रीफेक्चर में है—नारवा के दक्षिण पश्चिम में ।"

"क्या यह पर्वतों के बीच में है ?"

"हां, और देवदार के पेड़ों से ढका हुआ ।"

"क्या वहां शिकारी नहीं होते ?"

"तुम्हारा मतलब बंदूकधारी शिकारियों से है ? वे तो वहां जरूर होंगे—क्योंकि वहां कोई आदमी तो रहता नहीं, बस जानवर ही जानवर हैं ।"

"अगर शिकारी हमें अपना निशाना बनाने लगे, तब हम क्या करेंगे ।"

"हम एक गहरी गुफा में छिप जायेंगे और एक कोने में दुबक जायेंगे । शिकारी हमें देख ही नहीं पायेंगे ।"

"लेकिन जब बर्फ गिरेगी, हमारे पास खाने के लिये भोजन नहीं होगा और जब हम भोजन की तलाश में बाहर निकलेंगे, शिकारियों के कुत्ते हमें देख लेंगे ।"

"तब हम अपनी जान बचाने के लिये एक साथ भागेंगे ।"

"आपकी और पापा की बात तो ठीक है । आप दोनों बड़े हैं, तेजी से भाग सकते हैं पर मैं तो अभी बच्चा ही हूं । मैं पीछे रह जाऊंगा ।"

"हम तुम्हें अपने पंजों में लेकर भाग लेंगे"

"जब शिकारी कुत्ते हमारे पीछे होंगे ?"

उसकी मम्मी चुप हो गई । जब वह फिर बोली तो उसकी आवाज में चिढ़ाने वाली बात नहीं थी । "ठीक है, तब मैं तुम्हारे पीछे धीरे-धीरे आऊंगी ।"

"क्यों ?"—बच्चे ने पूछा ।

"क्योंकि, इस तरह शिकारी कुत्ता मुझे अपने दांतों में दबोच लेगा । वह मुझे तब तक पकड़े रहेगा जब तक कि शिकारी नहीं आ जायेंगे और वे मुझे बांध नहीं लेंगे । इस दौरान तुम्हें और तुम्हारे पापा को सुरक्षित जगह पर पहुंचने के लिये काफी समय मिल जायेगा ।"

बनरोकू इस बात से भौचक्का रह गया । घबराहट भरी आंखों से उसने मम्मी को घूरा, "नहीं, मम्मी, नहीं", वह चिल्लाया "तब हम आपके बगैर रह जायेंगे ।"

"लेकिन बेटा, और कोई तरीका भी तो नहीं है", मम्मी ने धीरे से कहा, "मम्मी तो तुम्हारे पीछे धीरे-धीरे, घिसटती हुई सी ही आयेगी ।"

"नहीं, मम्मी, आप नहीं, आप नहीं," बनरोकू फिर चिल्लाया । परेशानी में वह इधर-उधर मचला, मचलता ही रहा जब तक कि उसने तकिया बिस्तर से नीचे नहीं गिरा दिया । तब वह कुछ क्षणों के लिये मम्मी से चिपट गया । उसकी मोटी-मोटी

आंखों से आंसू गिर रहे थे ।

मम्मी की आंखों में भी आंसू आ गये । उन्होंने धीरे से अपनी बांह से आंसू पोंछ दिये । धीरे से उठीं, तकिये को नीचे से उठाया और आहिस्ता से बनरोकू के सिर हाने लगा दिया ।

चित्रांकन—तिकिचि मियोशो

कोरिया

यूनी और बैल

ओ योंग-सू

सभी लोगों को बैलों से लगाव होता है पर यूनी को बिल्कुल नहीं था। उसे तो घोड़े पसंद थे। घोड़ा समझदार जानवर होता है क्योंकि वह बहुत से काम करता है। वह फुर्तीला भी होता है, उसकी सवारी भी की जा सकती है, जहां चाहो, घोड़े को ले जाओ, और फिर, तांगागाड़ी में जोत लो। बैल, वह तो किसी भी काम का नहीं। सिर्फ खेत में हल चलाने के काम ही तो आता है। यूनी को बैलों के सींगों से तो डर लगता ही था, उसे बैलों की एक और आदत से चिढ़ थी। वह आदत थी, बैलों का हर समय कुछ न कुछ खाते रहना—जुगाली करना। यह उसे बिल्कुल भी पसंद नहीं था।

एक दिन कुछ ऐसा हुआ कि यूनी के दिल में बैलों के प्रति घृणा और बढ़ गई। उसका गांव छोटा सा ही था—लगभग दस घरों का गांव। सभी घर पास-पास थे। इन घरों के सामने एक बहुत बड़ा खाली मैदान था जिसे गांव के लोग खलिहान के रूप में काम में लेते थे।

गांव में चारों तरफ धान के खेत थे। खेतों के बीच में टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियां—रास्ते बने हुये थे। गांव से कुछ दूर पर पहाड़ियां थी। धान का यह खलिहान गांव के बच्चों का खेलने का मैदान भी था।

बसंत का मौसम शुरू हो गया था। यही समय था धान की बुवाई का। खलिहान के पास ही एक पुराना—बूढ़ा सा पेड़ था। इस पेड़ की डालियां झुककर नीचे लटक रही थीं जैसे वह जमीन को छू रही हों। इसी पेड़ से एक बैल बंधा रहता था। उसका रंग भूरा, आंखें काली काली, पेट काफी बड़ा काला भूरे रंग का, खुरों पर भी गहरे काले काले निशान—बस यही था उस बैल का रंग-ढंग। पेड़ की लटकती डालियों में हरियाली थी।

उस दिन यूनी दोपहर में खाना खाकर सो गया था। सोकर उठा तो उसे गेंद खेलने की सूझी। उसके पास एक गेंद थी जो पुरानी थी और एक-आध जगह से उधड़ी हुई भी थी। उसी गेंद को लेकर वह खलिहान पर खेलने चल दिया।



खलिहान पर बैल तो था ही। उस दिन यूनी को उसकी शक्ल और भी भद्दी लगी। क्योंकि यूनी को देखकर बैल ज़ोर से रम्भाने लगा था। उसकी आंखे कटोरों की तरह फैल गईं। कुछ देर तो यूनी उसको देखता रहा। उसकी हरकतें भी यूनी को कुछ अजीब सी लगी। अपने शरीर पर बैठी मक्खियों को वह पूंछ से उड़ा रहा था। उसकी आंखें अब दूर, घाटी के पार, आड़ू के पेड़ों की तरफ थी। वह जुगाली कर रहा था। यूनी को लगा जैसे बैल को कुछ चिंता नहीं और फिर बैल का ध्यान भी यूनी की ओर नहीं था। वह तो लगातार पेड़ों की तरफ ही देखे जा रहा था।

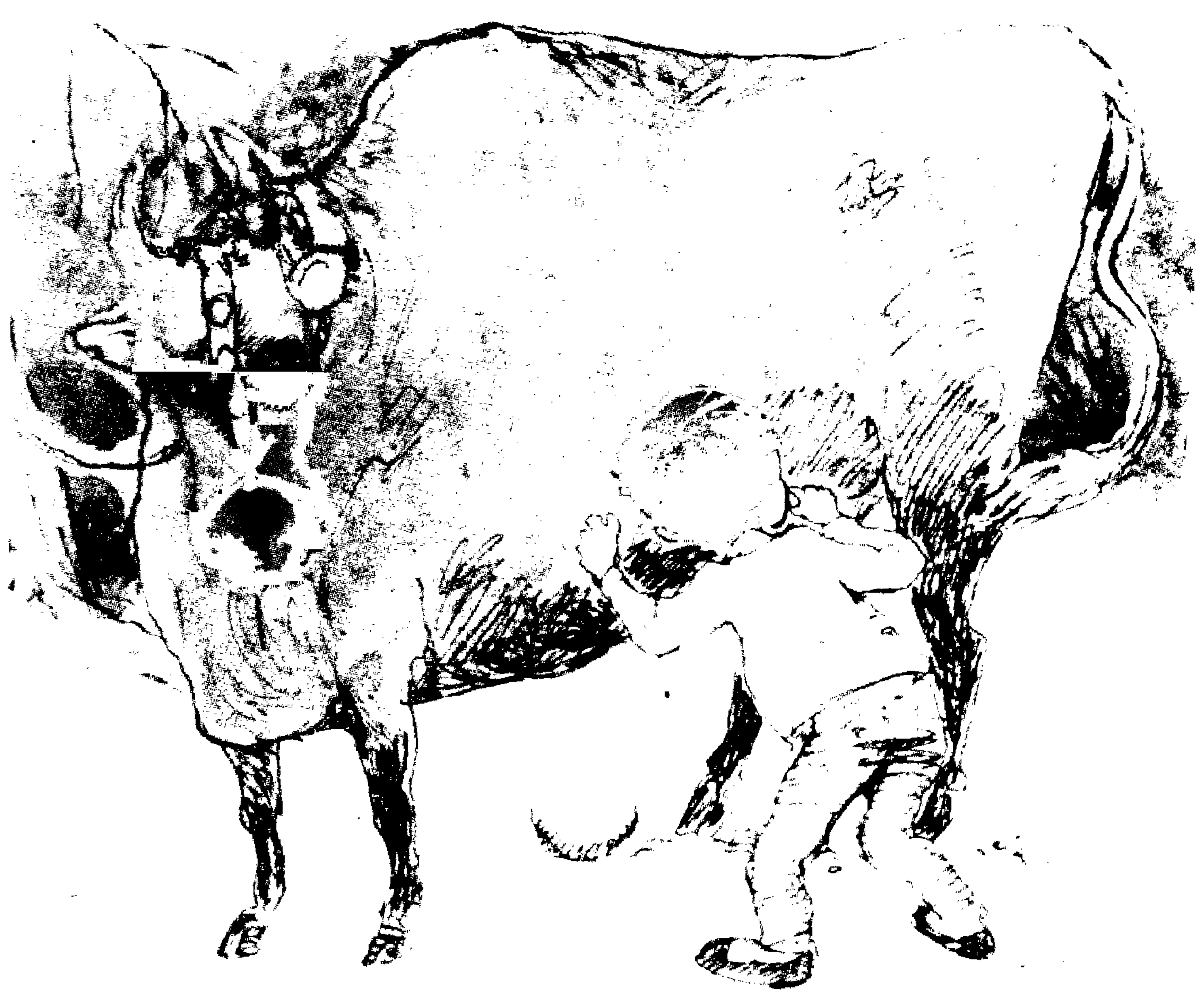
यूनी का डर कुछ कम हुआ। वह धीरे धीरे बैल के पास गया। जैसे ही वह बैल के पास पहुंचा, बैल ने, अचानक अपना ध्यान पलटा और यूनी की तरफ देखा। यूनी इसके लिये तैयार नहीं था। वह जहां था, वहीं रुक गया। अपनी गेंद उसने कसकर पकड़ी और हाथों को कमर की तरफ छुपा लिया। यूनी को लगा जैसे बैल उसकी गेंद छीनना चाहता हो। लेकिन बात ऐसी नहीं थी। बैल तो अपना मुंह इधर-उधर घुमा कर अपने पेट और बगल को जीभ से चाट रहा था और पूंछ को हिलाये जा रहा था। यूनी को अंदर से डर लग रहा था। वह बैल को देखता

रहा। पर बैल, बैल ने फिर अपना मुंह सीधा किया, आंखें बंद कीं और जुगाली करने में मस्त हो गया।

यूनी ने अपनी गेंद अपने हाथों में कस कर पकड़ रखी थी। उसका ध्यान फिर बैल के सींगों पर गया। वह सोचने लगा, "घोड़े के सींग क्यों नहीं होते ? अगर बैल और घोड़े में लड़ाई हो जाये, तो कौन जीतेगा ?" जितना वह सोचता उतना ही उसका विश्वास पक्का होता जाता कि ऐसी लड़ाई में जीत बैल की ही होगी। बैल के पास लम्बे लम्बे सींग जो हैं। यूनी को तो घोड़ा ही पसंद था, बैल नहीं। यह सोच कर कि घोड़ा लड़ाई में हार जायेगा, उसे दुख हुआ।

यूनी ने देखा बैल लगातार कुछ खा रहा था। उसे आश्चर्य भी हुआ, क्योंकि जब से वह यहां आया था, बैल ने एक बार भी अपने मुंह में कुछ नहीं रखा, फिर भी वह मुंह चला रहा था। आखिर वह क्या खा रहा था, क्यों जबड़ों को इस तरह घुमा रहा था ? क्या चीज़ चबा रहा था ? काहे की जुगाली कर रहा था ? ऐसे ही प्रश्न यूनी के मन में उठते रहे।

खड़े-खड़े काफी देर हो गई थी। उसे ख्याल आया वह तो खेलने आया था।



बैल के पास से हट कर मैदान में आया। गेंद खेलना शुरू किया। अकेला था और अकेले में गेंद को उछालो और पकड़ो। यही खेल हो सकता था। वह गेंद ऊपर उछालता और फिर कैच करता। फिर उछालता और कैच करता। इस बार उसने गेंद को सामने की दीवार पर फेंका। दीवार से टकराकर गेंद लौट कर आई और उसने कैच करनी चाही। पर…गेंद…हाथ में नहीं आई। वह एक तरफ को निकल गई। लुढ़कते लुढ़कते वह पहुंच गई—बैल के नीचे।

गेंद जब लुढ़क रही थी तो यूनी उसे पकड़ने के लिये उसके पीछे पीछे भाग रहा था। जब गेंद बैल के नीचे पहुंच गई तो वह भी बैल के नजदीक ही पहुंच गया था। उसने देखा गेंद ठीक बैल के नीचे है। वह क्या करे, कैसे उठाये, परेशान हो गया। बैल अभी भी अधखुली आंखों से जुगाली कर रहा था। उसे गेंद से या यूनी से कोई मतलब नहीं था। वह अपनी मस्ती में खड़ा था। लगता था उसे जुगाली करने और पूंछ हिलाने के अलावा और कोई काम नहीं था। यूनी समझ गया कि बैल को पता नहीं कि गेंद उसके नीचे थी। इसलिये उसे गेंद चुपके से उठा लेनी चाहिये। उसने अपनी आंखें बैल की आंखों में जमाये रखीं। मन में गेंद का ध्यान धरा, कदमों को धीरे धीरे बैल के पेट के नीचे की तरफ बढ़ाने लगा। बैल के बिल्कुल पास जाकर उसने सांस रोकी और गेंद उठाने के लिये नीचे झुका। लेकिन यह क्या—जैसे ही वह गेंद उठाने लगा, बैल ने अचानक अपना सिर जोर से हिलाया। उसके गले में बंदे घुंघरू बज उठे। उसी समय उसने अपनी पूंछ भी घुमाई।

यूनी एकदम घबरा कर सिर के बल गिरा। वह हड़बड़ा कर बड़ी मुश्किल से पीछे हटा। मुट्ठी भींचता हुआ और पैर पटकता हुआ बोला, 'बेवकूफ !' बैल अपने में मस्त, बेखबर था। उसने अपने कान झटके और फिर जुगाली करने लगा। जैसे वह यूनी को कह रहा हो, मुझे तुम्हारी कोई चिंता नहीं।

यूनी परेशान। वह पालथी मार कर एक तरफ बैठ गया। ठोड़ी पर हाथ रख कर और कोहनी को घुटने पर टिकाकर सोचने लगा, "गेंद कैसे उठाऊं ? क्या बैल उठाने देगा ? रोकेगा तो नहीं ? पर गेंद तो मेरी है, उसकी तो नहीं, फिर वह क्यों नहीं उठाने देगा ? ठीक है…एक डंडी ले आता हूं। लेकिन डंडी से कैसे उठाऊंगा ?' जितना सोचता, उतना ही उसे बैल पर गुस्सा आता। परेशान और दुखी। उसने कनखियों से बैल की तरफ देखा। अब उसकी आंखें बन्द थीं। वह अब सो रहा था। लेकिन मुंह, मुंह से अभी भी वह जुगाली कर रहा था। यूनी को लगा—यह अच्छा अवसर है। उसे अपनी गेंद उठा लेनी चाहिये। अब उसने कनखियों से देखने के बजाय पूरी तरह से देखा कि बैल वास्तव में सो रहा

था। वह झुका, बैल के नीचे गया और कदम बढ़ा कर उसने हाथ गेंद की तरफ फैलाया।

लेकिन फिर, एकदम बैल ने अपनी पूंछ घुमाई। पूंछ सीधी सटाक से यूनी के बायें गाल पर लगी। वह दर्द से तिलमिला उठा। गाल को हाथ से सहलाया। बैल के नीचे से एकदम बाहर आया। उसकी सांस तेजी से चल रही थी। गाल में दर्द हो रहा था। सूरत रोनी सी हो गई थी। बस आंसू निकलने बाकी थे।

वह सोचता ही रहा कि क्या हो गया। क्यों हुआ? थोड़ी देर पहले भी वह गिर गया था। उस समय कोहनी में चोट भी लगी थी। थोड़ा खून भी निकला था। लेकिने इस बार, इस बार तो आंसू निकलने ही वाले थे। डर से वह पूरी तरह कांप रहा था।

आंखों में आंसू थे, पर वह रोया नहीं। उसका डर क्रोध में बदल गया। उसे बैल पर क्रोध आ रहा था। गुस्सैली आंखों से उसने बैल को इस तरह देखा जैसे अभी उसको समाप्त कर देगा। सुबकते सुबकते वह जोर से बोला, "नालायक, बेवकूफ, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा, मेरी गेंद क्यों नहीं देता।"

बैल चुपचाप, अपनी जुगाली में मग्न। 'यह मेरी गेंद है'—सुबकी भरते हुये वह फिर बोला। उसने मुट्ठी बांधकर बैल की तरफ घूंसा ताना। फिर उसे ख्याल आया, यह बैल है घोड़ा नहीं, इसके पास सींग हैं, उसकी मुट्ठी बैल के सींगों का मुकाबला नहीं कर सकती। अगर इसके पास सींग नहीं होते तो बदला लेने की कोशिश भी की जाती।

बैल ने अपनी जीभ निकाली, अपने नथुनों पर फिराई, और आंखें बंद कर लीं। जैसे वह भी अपना गुस्सा दिखा रहा हो। यूनी को अपने उस गाल पर दर्द महसूस हुआ जहां बैल ने पूंछ जमाई थी। उसे लगा जैसे गाल पर कोई कीड़ा काट रहा हो। उसने उस जगह पर हाथ फेरा। गाल को सहलाता हुआ बैल से बोला, 'ठीक है, मैं पापा को बुलाकर लाता हूं, वो तेरी खबर लेंगे।'

होठों को सिकोड़ते हुये वह घर की ओर चल दिया। घर पहुंचा, देखा पापा-मम्मी दोनो गायब। कहीं बाहर गये हुये थे। नौकरानी रसोई में थी। वह चूल्हा जला रही थी। यूनी उसी से जिद्द करने लगा। उसको जब काम नहीं करने दिया तो वह बाहर आई। गेंद ढूंढ़ने।

दोनों उसी स्थान पर पहुंचे। देखा, वहां बैल ही नहीं था। इधर-उधर नजर दौड़ाई, देखा बैल दूर एक खेत में चल रहे हल में जुता हुआ था। पीछे पीछे मालिक था। खलिहान का मैदान खाली और गेंद—गेंद का कोई अता पता नहीं चला।

चित्रांकन—किम यंग-जु

मलेशिया

पड़ोसी

इस्माइल अहमद

सम्पादकीय टिप्पणी—मलेशिया के निवासी विभिन्न धर्मों को मानते हैं। शहरी-करण के नये विकास के कारण विभिन्न धर्मों के अनुयायी जब एक साथ रहने लगते हैं तो धर्मों के मत-मतान्तर के कारण कभी कभी भ्रम पैदा हो जाते हैं। लेकिन जैसा कि इस कहानी में दिखाया गया है, सद्भाव तथा मित्रता से ऐसी कठिनाइयां आसानी से दूर की जा सकती हैं।

जब ज़लेला और उसका परिवार तमन सेन्टोसा हाउसिंग कोलोनी में रहने आये उसकी दोस्ती जल्दी ही मी लिंग, जो पड़ोस में ही रहती थी, के साथ हो गई। दोनों लड़कियां एक ही कक्षा में पढ़ती थीं और रोज़ाना इकट्ठे ही स्कूल आती-जाती थीं। अपने खाली समय में भी वे एक साथ रहतीं और खेलती थीं। उनकी दोस्ती उस समय तक बढ़ती ही गई जब तक कि एक शाम मी लिंग की मम्मी अपने घर एक कुत्ता न ले आई।

"देखो बेटे, मैं तुम्हारे लिये एक पिल्ला लाई हूं। यह मेरी और तुम्हारे पापा की तरफ से तुम्हारे जन्मदिन का एक तोहफा है।"

"मेरे लिये?" मी लिंग खुशी से झूम उठी। वह पिल्ले को प्यार करती रही। उससे कहने लगी, "तुम कितने सुंदर हो, तुम्हारा क्या नाम रखूं—ठीक है, मैं तुम्हें जोहान कहूंगी, हां जोहान ठीक रहेगा।"

लेकिन पड़ोस में रहती ज़लेला की मम्मी को जब पिल्ले का पता चला तो वह परेशान हो गई। ज़लेला के परिवार के धर्म के अनुसार, कुत्ते गंदे होते हैं और पिल्लों को घर में पालना नहीं चाहिये। उन्होंने अपने पति से इस बारे में बात करनी चाही लेकिन वे तो इस बात से जैसे एकदम बेफिक्र थे। "ठीक है, जब तक पिल्ला हमारे घर में नहीं आता, ठीक ही है"—वे बोले।

"लेकिन आप रात भर पिल्ले का चिल्लाना और भौंकना तो सुनते ही होंगे—"



"हां शायद पिल्ले को अभी अपने नये घर की आदत नहीं हुई है और उसे अपनी मां की याद आती होगी। इसलिये वह भौंकता रहता है।"

लेकिन इतनी बात से उन्हें तसल्ली नहीं हुई। उनको एक ही डर था—ज़लेला अब उस पिल्ले के साथ खेला करेगी। अंत में उन्होंने तय किया कि ज़लेला को मी लिंग के घर जाने से रोक देना चाहिये।

"लेकिन, मम्मी, मैं वहां क्यों नहीं जा सकती?" ज़लेला ने पूछा।

"पिल्ले की वजह से।"

"लेकिन उसमें बुराई क्या है? मैं उसके साथ नहीं खेलती।"

"मैं जानती हूं, लेकिन बेटी हमारे धर्म में कुत्ते को छूने तक की मनाही है।"

ज़लेला उदास हो गई। उसे कोई उत्तर नहीं सूझा। लेकिन वह चुपचाप मम्मी को बिना बताये, मी लिंग के घर खेलने के लिये जाती रही।

एक दिन शाम के समय ज़लेला दौड़ती हुई घर आई और घर के पिछवाड़े की तरफ भाग गई। मम्मी को कुछ शक हुआ, वे भी ज़लेला के पीछे पीछे। वहां देखा, ज़लेला अपने घुटने को रगड़ रगड़ कर धो रही है।

"क्या हुआ ज़लेला?" उन्होंने पूछा, आश्चर्य का नाटक सा करते हुये।

"मम्मी—जोहान ने मेरे घुटने पर अपनी जीभ फेर दी।"

सुनते ही मम्मी एकदम गुस्से में लाल हो गई। "मैंने तुमसे पहले ही नहीं कहा था मी लिंग के घर मत जाया करो। तुमने मेरी बात क्यों नहीं मानी?"

"मम्मी मुझे माफ कर दो। प्लीज़, मम्मी, नाराज न हो। देखो मैंने अपना घुटना साफ कर लिया है।"

"वह तो मैं देख रही हूं—लेकिन तुम अब कभी भी मी लिंग के घर नहीं जाओगी—बस इससे आगे कुछ नहीं।"

"लेकिन, मम्मी, वह तो मेरी अच्छी सहेली है।"

उसी समय मी लिंग आ गई। "अरे, परेशान न होओ, आन्टी", उसने आग्रह भरे स्वर में कहा, "जोहान तो सिर्फ ज़लेला के साथ खेलन की कोशिश कर रहा था।"

ज़लेला की मम्मी इस बात से और नाराज़ हो गई। "क्या कहा, कुत्ते के साथ खेलना। तुम दोनों जानती हो यह हमारे धर्म के खिलाफ बात है। अगर कोई कुत्ता तुम्हें छू भी जाये, तो तुम्हें अपने शरीर के उतने हिस्से को एक बार तो मिट्टी और पानी से साफ करना होगा और फिर छह बार साफ पानी से।"

"लेकिन जोहान तो साफ है"—मी लिंग ने दृढ़तापूर्वक कहा। "मैं उसे रोज़ नहलाती हूं। वह ज़रा भी कहीं से गंदा नहीं है। आप उसे एक बार देखें तो सही।"

कहते कहते उसने जोहान की तरफ इशारा किया जो उसके साथ-साथ ही आकर पीछे खड़ा हो गया था।

"मैं जानती हूं वह साफ है, मी लिंग, लेकिन हमारे लिये अभी भी वह एक गंदा जानवर ही है। बस सारी बात यही है।"

मी लिंग को जोहान के बारे में कहने के लिये और कुछ नहीं सूझा और वह समझ नहीं सकी कि ज़लेला की मम्मी क्या कहना चाह रही है। वह बस इतना ही जानती थी कि उसे जोहान को गंदा कहा जाना अच्छा नहीं लगा।

अचानक कुत्ते ने अहाते में इधर उधर दौड़ना शुरू किया—अपनी पूंछ को हिला हिला कर और खेल-खेल में भौंकता रहा। "अरे, नहीं, इस कुत्ते को यहां से ले जाओ। अन्दर मत आने दो," ज़लेला की मम्मी परेशान होकर चिल्लाई।

मी लिंग को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह एकदम डर गई। बिना कुछ कहे वह जोहान के साथ वहां से भाग आई। घर आकर उसने अपनी मम्मी को सारी बात सुनाई।

"मी लिंग, तुम जानती हो कि उनके धर्म में कुत्तों के साथ खेलने की इजाज़त नहीं है," उसकी मम्मी ने उसे तसल्ली दी।

"लेकिन मम्मी, उन्होंने मेरे जोहान को गंदा क्यों कहा। मैं तो उसे बहुत साफ रखती हूं", मी लिंग ने आंखों में आंसू भर कर कहा। उसकी मम्मी कुछ नहीं बोली।

उसकी मम्मी के मना करने के बावजूद भी ज़लेला मी लिंग के घर जाती रही। इस घटना का इन दोनों लड़कियों पर कोई असर नहीं था क्योंकि उनके लिये उनकी दोस्ती ज्यादा महत्वपूर्ण बात थी। ज़लेला ने भी महसूस किया कि मी लिंग को जोहान बहुत अच्छा लगता है।

जोहान पड़ोसियों के लिये परेशानी का कारण बना रहा। वह रात भर भौंकता रहता, बिल्लियों के पीछे भागता रहता और इस तरह शोर मचाता रहता।

एक बार इतवार के दिन, दोपहर बाद मी लिंग ज़लेला के घर खेलने गई। जैसे ही दोनों लड़कियां बैठीं, जोहान आकर दरवाज़े पर बैठ गया। ज़लेला की बिल्ली, कोरेंग, घर से आई और इन लड़कियों के पास बैठ गई। अचानक जोहान आवेश में आकर अहाते में भागा, सीधा बिल्ली की तरफ। कोरेंग डर कर कूदी और सीधी घर की तरफ भागी, जोहान उसके पीछे-पीछे। घर के अन्दर कोरेंग टेलीविज़न के ऊपर से कूदी। जोहान भी उसके पीछे—लेकिन वह टेलीविज़न के ऊपर रखे फूलदान से टकरा गया। फूलदान ज़मीन पर, पड़ाक और टुकड़े-टुकड़े हो गया।



शोर सुनकर ज़लेला की मम्मी कमरे में आई, "अरे मेरे खूबसूरत फूलदान को क्या हुआ," वे चिल्लाई। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था।

जोहान कमरे में बीचोंबीच खड़ा गुर्रा रहा था। उसको देखते ही, उन्होंने झाड़ू उठाई और उससे कुत्ते को मारना शुरू किया। चोट खाकर भौंकता हुआ कुत्ता घर से बाहर भागा।

मी लिंग खड़ी थी, अकेली, आंखों में आंसू भरे। बिना कुछ कहे सुने वह भी जोहान के पीछे-पीछे अहाते से बाहर भागी। ज़लेला भी एकदम भौचक्की रह गई। वह जानती थी कि मम्मी इस समय बहुत गुस्से में है और अब वह बिलकुल भी मी लिंग के पास नहीं जाने देगी। सिर्फ जोहान के ही कारण।

उसी रात, जब मी लिंग के पापा घर आये, उन्होंने अपनी बेटी की आंखों में आंसू देखे। सुबकते सुबकते मी लिंग ने पापा को सारा किस्सा कह सुनाया।

"ठीक है, अगर जोहान बिल्ली के पीछे-पीछे उनके घर में जायेगा और उनके फूलदान को तोड़ देगा तो वह नाराज होंगी ही।"

"अब हम क्या करें ?" मी लिंग की मम्मी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता, मेरी समझ से, मी लिंग को अब कुछ समय के लिये ज़लेला से मिलना-जुलना नहीं चाहिये।" उन्होंने अनमने पन से जवाब दिया।

मी लिंग चकित रह गई। उसे अपने पापा की बातों पर और ताज्जुब हुआ। वह अपने कमरे में गई, जो कुछ भी आज हुआ उसके बारे में सोच-सोचकर वह दुखी और उदास थी।

उस रात ज़लेला भी सो न सकी। वह सोचती रही कि जोहान के कारण मी लिंग से उसकी दोस्ती टूट गई। वह सोचती रही, क्या मुझे मी लिंग से कुत्ते को हटाने की बात कहनी चाहिये। लेकिन नहीं, वह जानती थी अपनी सहेली से ऐसी बात नहीं कह सकती, क्योंकि मी लिंग को अपना कुत्ता बहुत प्यारा था। ज़लेला, मी लिंग को भी खोना नहीं चाहती थी लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसकी सहेली जोहान को भी छोड़ना नहीं चाहती थी।

इधर, कुछ हफ्तों तक जोहान का भौंकने का क्रम चलता रहा। लेकिन अब उसकी आवाज बदलती जा रही थी। पहले वह धीरे-धीरे रिरियाता फिर गुर्राकर भौंकता, फिर ज़ोर ज़ोर से हु हु करता, उसके रोने-चिल्लाने से अजीब सा डर लगने लगता। मी लिंग को चिन्ता हो गई। कहीं जोहान बीमार तो नहीं हो गया। लेकिन उसके पापा ने उसे यकीन दिलाया कि ऐसी कोई बात नहीं है।

रोज़ाना हर रात को जोहान का यह अजीब तरह से भौंकना और हल्ला करना चलता रहा। पड़ोसियों को इससे परेशानी होती गई—क्योंकि वे जानते थे कि कुत्ते का रात को इस तरह भौंकना अपशकुन होता है। अफवाह फैलने लगी कि इसका मतलब होता है—कुत्ता या उसका मालिक किसी गम्भीर दुर्घटना का शिकार होने वाले हैं। ऐसी बातें सुन सुनकर मी लिंग और ज़्यादा उदास रहने लगी।

इस दौरान, मी लिंग और ज़लेला आपस में मिली नहीं। वे दोनों स्कूल में एक-दूसरे को देखतीं, लेकिन वे बात नहीं करतीं, घर भी अलग-अलग ही जाती। आखिर एक दिन आ ही गया जब ज़लेला ने अपनी सहेली से बात करने की हिम्मत की। वह मी लिंग के पास जाकर पूछने लगी, "क्या तुम अब मेरी सहेली बनना नहीं चाहती ?"

"क्यों नहीं, मैं तो चाहती हूं। लेकिन तुम तो जानती ही हो, हमें मिलने की मनाही है।"

"और यह सब जोहान की वजह से ही।"

"मैं जानती हूं, लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं ?"

"ठीक है..."

"ठीक क्या ?"

"तुम नाराज तो नहीं होगी अगर मैं कुछ कहूं।"

"नहीं, वही हम तो आपस में सहेली हैं।"

"फिर, मी लिंग, मेरे विचार से तुम उसे बांधकर रखा करो।"

"बांधकर"

"हां, एक रस्सी से बांधकर उसे अपने अहाते में ही रखो। तब हम दोनों फिर से मिल सकेंगी।"

"लेकिन मेरी समझ से वह बंधना पसंद नहीं करेगा। उसे अभी तक अपनी मर्ज़ी से घूमने-फिरने की आदत पड़ गई है। अगर मैंने उसे बांध दिया तो वह और ज़ोर से भौंकेगा।"

"उससे क्या फर्क पड़ेगा, हम दोनों सहेलियां तो मिल सकेंगी।"

"लेकिन इससे बात बनेगी नहीं। इससे पड़ोसी और नाराज़ हो जायेंगे। वे फिर उसे मार भी सकते हैं।"

"मूर्ख मत बनो। वे उसे मार नहीं सकते। और मुझे विश्वास है, कुछ दिनों के बाद उसे बंधकर रहने की आदत पड़ जायेगी। और अब भी, जब वह आज़ाद है, बंधा नहीं है, तब भी हर वक्त भौंकता ही रहता है।"

मी लिंग कुछ क्षणों के लिये सोचने लगी। अंत में उसने उत्तर दिया, "ठीक है, आज रात मैं उसे बांधकर देखती हूं क्या होता है।"

दोनों लड़कियां खुश हो गईं और एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर घर के लिये चल दीं।

उसी रात मी लिंग ने पोर्च में जोहान को एक रस्सी से बांध दिया। लेकिन कुत्ता लगातार भौंकता ही रहा। इससे मी लिंग और अधिक उदास हो गई वह बार-बार कमरे से बाहर निकलकर, उसके पास आती, उसे पुचकारती, उसके सिर और कमर पर हाथ फेरती। "देखो भैया, चिल्लाते नहीं। मैंने तुम्हारे भले के लिये ही तुम्हें बांधा है। इस तरह तुम्हें फिर कोई झाड़ू से पीट नहीं सकेगा। और देखो, अब मैं और ज़लेला फिर से सहेली बन सकते हैं।" लेकिन जोहान चिल्लाता रहा और मी लिंग को प्यार करता रहा।

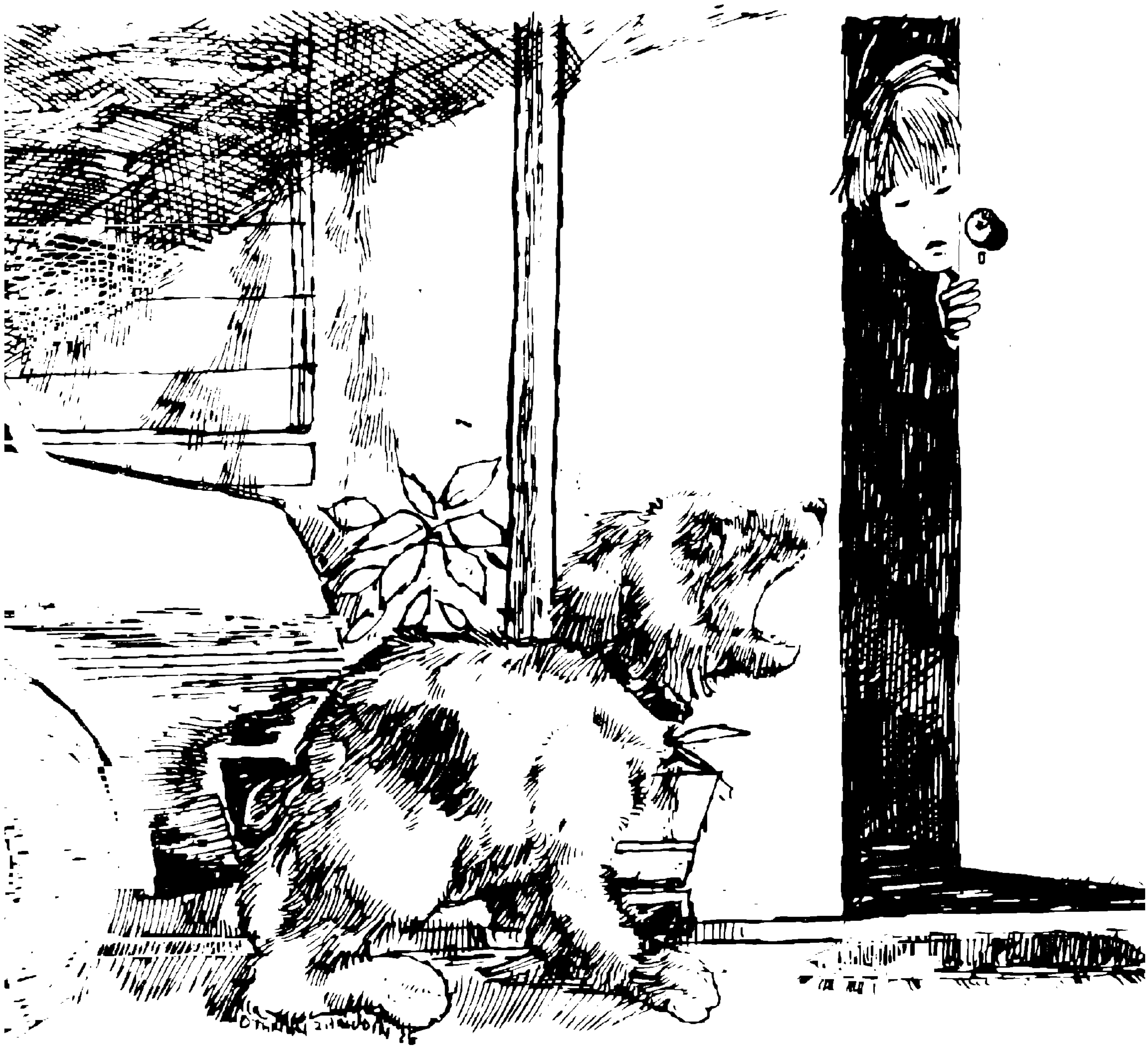
जैसे ही मी लिंग उसे चुप कराकर अन्दर जाती, वह और ज़ोर ज़ोर से भौंकना

शुरू कर देता। मी लिग फिर उठ कर बाहर भागती। उसके मम्मी पापा चुपचाप यह सब देखते रहे, कुछ नहीं बोले।

रात बढ़ती जा रही थी। मी लिग कुत्ते को चुप कराने के लिये पांच बार उठकर बाहर आई थी। थक कर और परेशान होकर उसने उसकी रस्सी खोलने की सोची। "ठीक है, मैं तुम्हें खोल देती हूं। लेकिन वायदा करो—तुम अब चुप रहोगे और कहीं नहीं जाओगे।" कुत्ता चुप हो गया जैसे वह मी लिग की सारी बात समझ रहा हो। फिर वह धीरे से गुर्राया और उसने सड़क की तरफ देखा।

"ऐ क्या बात है? चुप रहो। मैं तुम्हें खोल दूंगी, लेकिन इधर उधर नहीं घूमना।" उसने कुत्ते को खोलते हुये कहा। लेकिन जैसे ही मी लिग घर में गई, कुत्ता वहीं बैठ गया सड़क की तरफ मुंह करके।

रात में बिल्कुल शांति थी। बस दूर से कभी-कभी मेढ़कों के टर्राने की आवाज आ रही थी। अचानक बारिश शुरू हो गई। धीरे-धीरे मी लिग को नींद आने लगी



लेकिन अधकचरी नींद। उसने सपना देखा, वह ज़लेला और जोहान के साथ है और तीनों चले जा रहे हैं, चले जा रहे हैं। रास्ते का कहीं कोई अंत नहीं। चलते चलते वे एक गुफा के पास पहुंच गये। उसने झांका—अन्दर गहराई और अंधेरा उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। तभी अचानक, जोहान का पैर फिसला और वह उस अंधकार की गर्त में गिर गया।

मी लिंग चीखती हुई उठ गई। वह बिस्तर से एकदम कूदी और अहाते की तरफ भागी। पौ फूट रही थी। उसे जोहान कहीं दिखाई नहीं दिया। उसकी चीख फिर निकली और उसके मम्मी पापा दौड़कर उसके पास आये।

तीनों ने अहाते की तरफ देखा। कुत्ते का कहीं नामों निशान नहीं था। मी लिंग ने उसे आस पड़ोस में सब जगह ढूंढ़ा। वह "जोहान जोहान" कहकर ज़ोर-ज़ोर से पुकारती रही पर कहीं कोई पता नहीं चला। निराश होकर वह घर लौट आई और पोर्च में वहां आकर बैठ गई जहां जोहान सोया करता था। वह अपने आप से बोलती रही "अगर मैंने उसे बांधा नहीं होता तो ऐसा कभी नहीं होता। उसे बंधने से घृणा थी। इसी कारण वह भाग गया।"

उसकी मम्मी ने उसे तसल्ली दी, "बेटा, दुःखी नहीं होते। हम तुम्हें जल्दी ही दूसरा कुत्ता ले देंगे।"

"लेकिन मम्मी वह जोहान जैसा अच्छा तो नहीं होगा। मुझे दूसरा कुत्ता नहीं चाहिये। मैं बाहर जोहान को ढूंढ़ने जा रही हूं। मैं इतना जानती हूं कि वह अभी मरा नहीं है।"

इस घटना की खबर सारे पड़ोस में फौरन फैल गई। जब ज़लेला ने सुना वह तुरन्त अपनी सहेली के घर गई। जैसे ही मी लिंग ने उसे देखा वह ज़लेला के गले में बाहें डाल कर रोने लगी।

"मी लिंग, रोओ नहीं" ज़लेला ने कहा, लेकिन वह स्वयं भी उदास हो गई।

"मुझे मालूम है वह मर गया है।"

"नहीं, नहीं ऐसा नहीं, वह जिन्दा है, हम दोनों मिलकर उसे ढूंढ़ेंगे।"

"मैं जानती हूं—वह मर गया है। कल रात मैंने सपना देखा कि वह एक गहरी खड्ड में गिर गया है और उसके बाद वह दिखाई नहीं दिया।

"मूर्ख नहीं बनते। चलो, अभी चलकर ढूंढ़ते हैं। वह उसी नदी के किनारे होगा जहां हम मछली पकड़ने जाते थे।"

इस प्रकार दोनों लड़कियां सड़क पर निकल गईं। सुबह का समय था। मौसम में ठंडक थी। घास पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। पूर्व में, सूरज धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था। चूंकि यह इतवार का दिन था इसलिये सड़क पर भीड़-भाड़ नहीं थी।

जैसे ही वे सड़के के उस तरफ़ नदी किनारे पहुंचीं, उन्होंने पानी पर कुछ तैरता देखा। मी लिंग का हृदय धड़क रहा था। ज़लेला को पीछे ही छोड़कर एकदम आगे की तरफ़ भागी। जब वह नदी के किनारे पहुंची, उसने देखा कि यह जोहान ही है। उसके शरीर पर बहुत सारे चोट के निशान और घाव थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि किसी कार से वह टकरा गया हो और उस टक्कर ने उसे दूर ताल में फेंक दिया था। मी लिंग बेहोश सी हो गई।

बाद में उसी सुबह ज़लेला ने अपनी सहेली मी लिंग को जोहान को दफनाने में मदद की। मी लिंग ने उसे अपने घर के पिछले भाग में दफना दिया। उसके सिर के तरफ उन दोनों लड़कियों ने एक पौधा रोप दिया। मी लिंग इसके बाद उसकी कब्र के पास झुकी और कांपती आवाज़ में बोली "मेरे प्यारे, शांति से आराम करो। यह पौधा मुझे हमेशा तुम्हारी याद दिलाता रहेगा। मैं इसे पानी दूंगी और देख-भाल करूंगी—जब तक कि यह बड़ा और सुन्दर न हो जाये। आराम से सोओ। मैं तुम्हारी कब्र की हमेशा देखभाल करूंगी।"

ज़लेला जो उसके पास ही कब्र पर झुकी हुई थी अपनी सहेली के शब्दों से अत्य-धिक द्रवित हुई। दोनों ही लड़कियां रो पड़ीं। चुपचाप दोनों खड़ी हुई, एक-दूसरे का हाथ अपने हाथ में लिये वापस चली गईं।

जैसे ही वे मी लिंग के घर के सामने वाले भाग में आईं, उन्होंने ज़लेला की मम्मी को एक छोटी टोकरी लिये हुये दरवाजे से अंदर आते हुये देखा। पहले तो ज़लेला डरी कि उसकी मम्मी उसको मी लिंग के घर देखकर नाराज़ होगी। लेकिन वे इन दोनों लड़कियों के पास ही आईं। उन्होंने मी लिंग के कंधे पर हाथ रख कर धीरे से कहा, "मुझे बहुत दु:ख है कि तुम्हारा पिल्ला मर गया है। मैं जानती हूं कि तुम उसे बहुत प्यार करती थी। लेकिन तुम ज़रा समझने की कोशिश करो कि तुम्हारे पास जब कुत्ता था तो मैं ज़लेला को क्यों तुम्हारे पास आने से रोकती थी। मुझे उम्मीद है कि तुम एक-दूसरे की सहेली बनी रहोगी। यह भी मैं जानती हूं कि तुम्हारे कुत्ते की जगह कोई नहीं ले सकता, लेकिन मैं तुम्हारे लिये देखो कुछ लाई हूं। इससे तुम अकेलापन नहीं महसूस करोगी।"

अपनी बात खत्म करके ज़लेला की मम्मी ने मी लिंग को एक टोकरी दी। उसने टोकरी में जब झांका तो देखा कि उसमें बिल्ली का एक छोटा बच्चा है, अभी जिसकी आंखें भी नहीं खुलीं। "अरे कितना सुन्दर बिल्ली का बच्चा है", मी लिंग बोली। उसको उठाकर उसके सफेद बालों के गुदगुदेपन से अपने मुंह को सहलाते हुये कहने लगी, "मैं जानती हूं जोहान तुझसे ईर्ष्या नहीं करेगा। मुझे यकीन है जब उसे पता



चलेगा कि मुझे नया दोस्त मिल गया है तो वह बहुत खुश होगा। उसके छोटे पौधे की देखभाल करने में तुम मेरी मदद करोगे न।" उसकी आंखों में आंसू भर आये थे। वह ज़लेला की मम्मी की तरफ मुड़कर कहने लगी, "बहुत बहुत शुक्रिया, आण्टी, मैं इस बच्चे को भी उतना ही प्यार करूंगी जितना कि जोहान को करती थी। और ज़लेला, वह तो हमेशा मेरी पक्की सहेली रहेगी—हमेशा।"

चित्रांकन—ग्रोथमन बिन हाजी जैनुदीन

नेपाल

जादू भरी बांसुरी

माधव धीमीरे

सुकुमार जैसे ही उस छोटे से गांव के धूलभरे रास्ते पर मुड़ा, सूरज छिपने लगा था। इस लड़के की उम्र ग्यारह साल के आस-पास थी। दूर हिमालय का तेजस्वी मनोरम दृश्य था। पर्वत की ऊंची चोटियों पर स्वर्णिम लालिमा फैली हुई थी। सुकुमार अकेला था। इस गांव में वह किसी को जानता भी नहीं था। लेकिन उसे आशा थी कि गांव में कोई न कोई मिल ही जायेगा जो रात भर अपने पास ठहरा लेगा। दूर कहीं से एक लड़की की आवाज आ रही थी जो अपनी मां को बुला रही थी। इससे उसे अपनी मां की याद आ गई थी जिसका स्वर्गवास हो चुका था। मां की याद आते ही उसने अपनी बांसुरी निकाली और अपने होठों से लगाई।



उसे ऐसा लगता था जैसे बांसुरी पर धुन बजाकर वह अपनी मां को बुलाता हो, जिस प्रकार दूर वह लड़की अपनी मां को बुला रही थी ।

बांसुरी बजाते हुये वह खड़ा ही था कि एक अधेड़ उम्र की स्त्री अपने सर पर घास का भारी गट्ठर लिये उसी रास्ते पर उसके पीछे पीछे आई । वह उस गांव के सरपंच की पत्नी थी । वह स्त्री रुकी और खड़े होकर सुकुमार की बांसुरी सुनने लगी । सुकुमार को जब इस बात का अहसास हुआ तो वह उस स्त्री की तरफ देखने लगा । दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा, दोनों को ऐसा लगा जैसे कि वे एक-दूसरे को पहले से ही जानते हों ।

उस स्त्री ने पूछा, "बेटा, तुम कहां जा रहे हो ?"

"मां, मैं तो इस गांव में अजनबी हूं । रात बिताने के लिये जगह ढूंढ रहा हूं," उसने जवाब दिया ।

उन दोनों ने एक-दूसरे को मां-बेटा कहा था । यह क्या केवल स्नेह के कारण था अथवा इसका कोई गहरा अर्थ था ?

उस स्त्री को यह सुनकर आश्चर्य हुआ । लड़का गांव में किसी को नहीं जानता था और न ही उसका कोई ठिकाना नज़र आता था । वह वहीं खड़ा रहा —प्रसन्नता से बांसुरी बजाता रहा जैसे उसे किसी बात की चिंता ही न हो ।

"बेटा, मेरे साथ आओ," स्त्री ने कहा, "तुम सुन रहे हो न, यह तुम्हारी बहन ही मुझे आवाज़ लगा रही है । मैंने जब तुम्हारी बांसुरी सुनी तो मेरे हृदय में ऐसा लगा कि तुम भी मुझे अपनी तान से बुला रहे हो । आओ बेटे, मेरे साथ चलो, घर चलें ।"

बांसुरी बगल में दबा कर वह उस स्त्री के पीछे पीछे उसके घर चल दिया ।

सुकुमार पांच वर्ष का ही था जब उसकी मां स्वर्ग सिधार गई थी । उसे अपनी मां की याद बस इतनी ही थी कि दो सुंदर आंखें और नीले मनकों की माला जो वह हमेशा अपने गले में पहनती । उसे विश्वास था कि उसकी मां सदा उसके हृदय में है ।

उसकी यह बांसुरी उसके पिता ने उसे उपहार में दी थी । मां की मृत्यु के बाद उसके पिता सोने से पहिले रोज़ बांसुरी बजाते थे । बांसुरी की मधुर तान सुनकर ही यह लड़का रोज सो जाता था । एक बार रात के समय जब उसके पिता बांसुरी बजा रहे थे, सुकुमार ने उनसे पूछा, "मां कहां है ? अब हम उनको क्यों नहीं मिल सकते ?"

पिता ने बांसुरी एक तरफ रखी, उनकी आंखों में उदासी झलक आई, बोले, "तुम्हारी मां अब देवताओं के घर में रहती है । वह वैसे तो दूर, आसमान से भी



दूर हैं—पर वह सदा हमारे दिलों में है ।"

सुकुमार ने पूछा, "आपने अपने दिल में कभी उनसे बात की है ?"

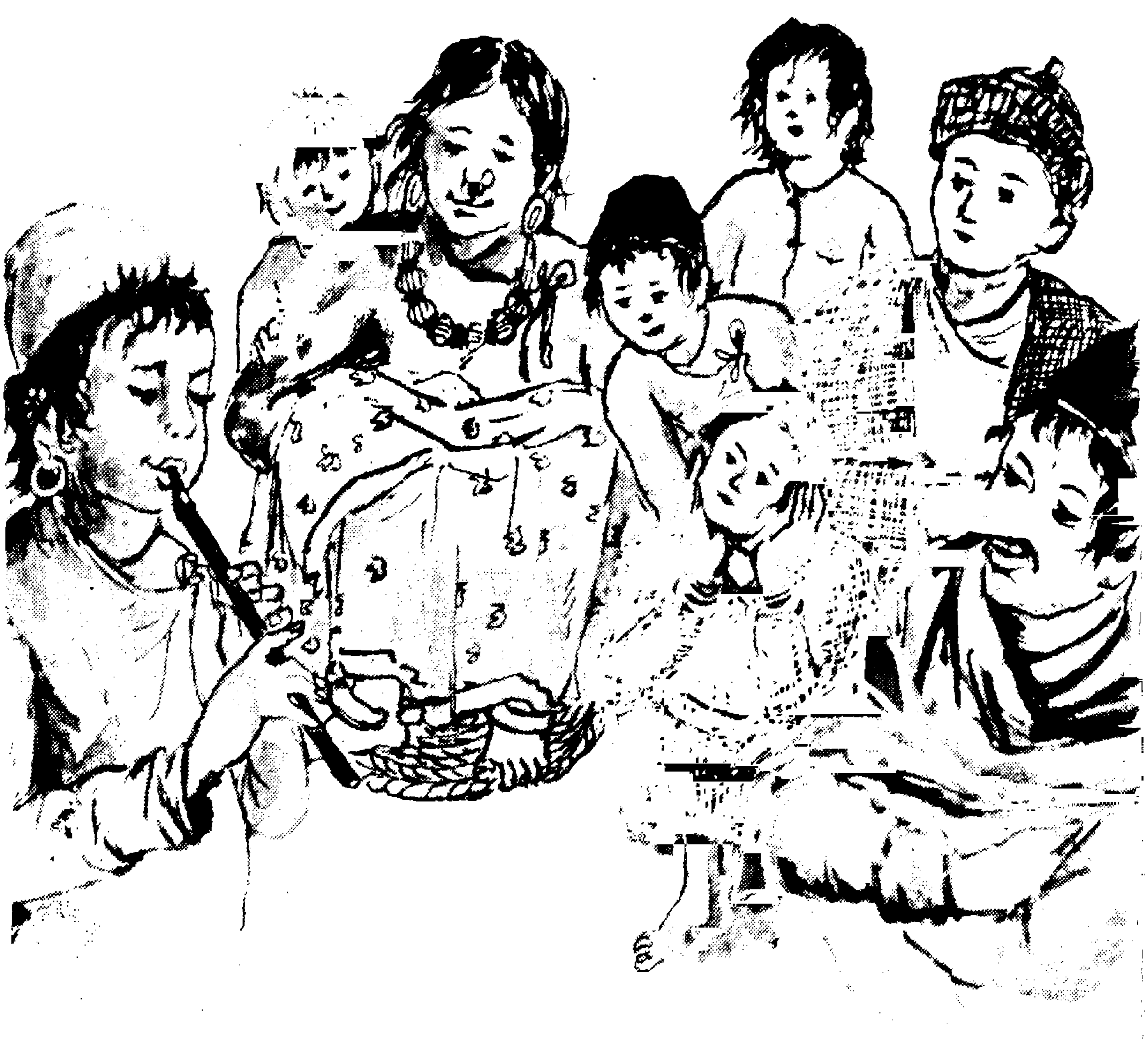
लड़के की तरफ देखते हुये उन्होंने कहा, "हां बेटा, जब जब मैं बांसुरी बजाता हूं—"

"ऐसी बात है, मैं कैसे बताऊं, मैं उनसे मिलने का कितना इच्छुक हूं ? आप मुझे भी एक बांसुरी ला दो । जब भी मैं उसे बजाऊंगा, मुझे भी ऐसा लगेगा कि वह मेरे साथ हैं ।"

थोड़े ही दिन बाद, सुकुमार के पिता ने उसके लिये एक सुन्दर सी बांसुरी बना दी और उसे बजाना भी सिखा दिया । उसके पिता ने उसे और भी बहुत कुछ सिखाया । जैसे चंद्रमा की छिटकी चांदनी में सुन्दरता होती है, बरसती बूंदों से गीत बनते हैं । यह सब क्या है, क्यों है । अक्सर उसके पिता कहते "खुश रहो और खुश होकर ही अपनी बांसुरी बजाओ । क्योंकि जब तुम्हारी मां इन मधुर तानों को सुनेगी तो वह भी प्रसन्न होंगी ।"

सुकुमार ने अपना सारा समय बांसुरी सीखने में लगाया। एक दिन जब वह नौ वर्ष का हो गया, उसके पिता ने कहा, "बेटा, अब तो तुम अपने पिता यानि मुझ से भी अच्छी बांसुरी बजा लेते हो। लेकिन मैं तुम्हें आज वह बात बताना चाहता हूं जो मैंने तुम्हें इससे पहले कभी नहीं बताई। सभी लोग, चाहे वे कैसे भी हों, बांसुरी की मधुरता को पहचानते हैं। जब भी तुम बांसुरी बजाओ अपने हृदय में स्नेह और सद्भाव रख कर बजाओ। तुम्हारे प्यार को सभी लोग बांसुरी की मधुरता से समझेंगे। इस प्रकार तुम अपनी सच्ची मां को प्राप्त कर सकोगे।

इस बात के कुछ दिनों बाद ही, सुकुमार के पिता की भी मृत्यु हो गई। वह अकेला रह गया, उदास और दुखी, उसने अपनी बांसुरी भी उठा कर रख दी। अगले छह महीनों तक उसे छुआ तक नहीं। वह अकेला बैठा चुपचाप रोता रहता—इसी तरह अपना दिन बिताता। अब वह अनाथ जो हो गया था। वह रहने के लिये अपने चाचा के पास चला गया। वहां, फिर से, उसने बांसुरी बजानी शुरू की। वह बांसुरी दूसरों को दिखाने के लिये नहीं बजाता था वरन् उनको अपना प्यार दिखाने



और इस प्रकार उनका स्नेह प्राप्त करने के लिये वह बांसुरी बजाता था।

पर अंदर से वह बेचैन था। एक दिन उसने अपनी बांसुरी उठाई और अपने चाचा के घर को छोड़ कर चल दिया। एक ऐसे सफर पर जिसका कोई ठिकाना नहीं। चलते चलते वह बांसुरी बजाता जाता, रास्ते में चलते लोग उसे घेर लेते, उसकी बांसुरी का आनंद उठाते, झूम झूम कर बांसुरी की तान पर नाचने लगते। लेकिन वह इस दुनिया में अकेला था। उसे अपने माता-पिता जैसा स्नेह कहीं से प्राप्त नहीं होता था। अधिकांश लोग अपने में और अपनी समस्याओं में ही उलझे रहते थे। उनके पास सुकुमार के लिये बेकार समय नहीं था। उसकी बांसुरी की धुन समाप्त होती और वे चल देते। किसी के भी पास उसके लिये समय नहीं था। जब तक कि आज अचानक सरपंच की पत्नी से उसकी मुलाकात नहीं हुई, जिसने उसे बेटा कह कर पुकारा। इस बार उसे लगा कि उसे अपनी सच्ची मां एक बार फिर से मिल गई है।

जैसे ही दोनों घर के अहाते में घुसे, उसने बगीचे में एक लड़की को घूमते देखा। यह उस स्त्री की छोटी लड़की थी सयपात्री। थोड़ी देर पहले यही अपनी मां को आवाज़ लगा रही थी। उस स्त्री ने सुकुमार की तरफ देखा और कहा, "बेटी, मैं अपने साथ एक बहुत अच्छा लड़का लाई हूं। यह हमारे साथ ही रहेगा, नहीं, मेरा मतलब है, मैं तुम्हारा भाई घर लाई हूं।"

दोनों बच्चे शरमा कर खड़े रहे, कुछ नहीं बोले। लेकिन दोनों खुश थे। सयपात्री का कोई भाई नहीं था—उसे भाई मिल गया और सुकुमार को एक बहिन मिल गई। वे घर में घुसे। शाम हुई—सुकुमार बैठा देखता रहा कि यह स्त्री किस प्रकार लैंप की रोशनी में शाम का खाना बना रही थी। उसे बहुत प्रसन्नता हुई। इसी प्रसन्नता और आनंद का अभाव उसके जीवन में सदा रहा था।

शाम होते ही सरपंच अपने घर आया। बिना कुछ कहे ही उसने सुकुमार की तरफ एक अजीब दृष्टि से देखा। उसकी दृष्टि से ही सुकुमार कुछ उदासी और अशांति महसूस करने लगा। उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "आज सड़क पर इस लड़के से मेरी भेंट हो गई। यह बहुत अच्छी बांसुरी बजाता है।"

खाना खाते समय सरपंच ने सुकुमार से कुछ नहीं कहा। खाने के बर्तन वगैरह जब हट गये तो उसने अपनी बांसुरी निकाली और धीरे धीरे बजानी शुरू की। पूरा परिवार चुपचाप बैठा रहा बांसुरी की तान में तन्मय। दोनों—सरपंच और उसकी पत्नी—ने महसूस किया कि उसकी तान उनके दिलों को छू रही है, किसी जानी-पहचानी हृदय तंत्री को छू रही है। सयपात्री को लगा कि उसका यह नया भाई उसके परिवार के सदस्यों से बातचीत करने का प्रयत्न कर रहा है। अपनी

बांसुरी की तान के द्वारा। जब वह अपनी बांसुरी बजा चुका तो वह सोने के लिये उठा। उस स्त्री ने सुकुमार के मुंह और सिर पर हाथ फेरा, उसे प्यार किया और उसे "शुभ रात्रि" कहा।

दूसरे दिन सुबह सुकुमार जल्दी ही उठ गया और जाने की तैयारी करने लगा। पर उस स्त्री ने उसे रोक लिया, कहने लगी—"अब हम मां बेटा हैं। मैं तुम्हें अब यहां से जाने नहीं दूंगी।" इस तरह सुकुमार उसी परिवार के साथ रह गया।

सयपात्री भी सुकुमार को बहुत स्नेह करने लगी थी। लेकिन उसे लगा कि अभी सुकुमार के बारे में उसे बहुत कुछ समझना है। अधिकतर वह इसी बात पर आश्चर्य करती कि सुकुमार इतना चुप-चुप क्यों रहता है। दिन में वह उसे लेकर गांव में इधर उधर जाती—अपनी सहेलियों और मित्रों से मिलवाती।

एक दिन दोनों बच्चे पास की नदी पर गये। सुकुमार चुपचाप एक पत्थर पर बैठ गया, पानी की तरफ एकटक देखता रहा। सयपात्री अपनी उत्सुकता को रोक न सकी। उसने पूछा, "भैया, तुम क्या सोच रहे हो ?"

"प्यारी बहन, तुम्हारे पास तुम्हारी मां है और वह तुम्हें स्नेह भी बहुत करती है क्योंकि तुम उनकी बिटिया हो न। लेकिन, मेरी मां नहीं है। और मैं अपनी मां से सिर्फ बांसुरी बजाकर ही मिल सकता हूं।"

सयपात्री को उसका उत्तर सुनकर धक्का सा लगा। "लेकिन मेरे भैया, क्या मेरी मां, तुम्हारी मां नहीं है ? क्या मैं तुम्हारी बहन नहीं हूं ?" उसने पूछा।

अटक अटक कर उसने उत्तर दिया, "हां, तुम तो मेरी बहन हो और वो मेरी मां भी है···लेकिन···"

"लेकिन क्या—भैया ?"

तुम्हें तो अपने पिता का स्नेह भी मिलता है लेकिन मेरे पास वह नहीं है।"

"लेकिन क्या मेरे पिता तुम्हारे पिता नहीं हैं ?"

"नहीं, मैं अभी तक उनके हृदय में अपनी जगह नहीं बना पाया हूं।"

"ठीक है, मैं आज रात ही उनसे बात करूंगी कि वे तुम्हें और ज्यादा स्नेह करें।"

"नहीं, नहीं, बहिन, ऐसा नहीं करना। अभी ऐसे ही ठीक है। मैं अपनी बांसुरी बजाकर उनके हृदय में अपना स्थान बनाऊंगा।"

उसी दिन रात में जब दोनों बच्चे सोने चले गये, सयपात्री के पिता ने धीरे धीरे उसकी मम्मी से बात करनी शुरू की, "देखो, अनाथों पर अधिक विश्वास नहीं करना चाहिये। वे काफी समय तक एक जगह पर नहीं टिकते। सुकुमार भी ऐसा ही करेगा। एक दिन वह उठेगा और चला जायेगा। जब तक नहीं जाता, इधर

उधर मटरगश्ती करेगा और हमारे सहारे यहां रहता रहेगा । सयपात्री पर इसका बुरा असर पड़ेगा ।"

उस स्त्री को अपने पति की बातें सुनकर गहरा आघात लगा । "सुनो, ठीक है वह एक अनाथ है, लेकिन क्या यही एक कारण नहीं है कि हमें उसके मां बाप बन जाना चाहिये । ओह, मैं विश्वास भी नहीं कर पाती कि कभी कभी आप कैसी कठोर बातें कह जाते हैं ।"

इस तरह बातचीत समाप्त हो गई और वे दोनों सो गये ।

घर का जीवनक्रम सामान्य की भांति चलता रहा । बसंत की बहार आई, गांव में हरियाली छाई और गुलाब के फूल खिल गये थे । इस मौसम में गांव की प्रथा के अनुसार गांव की नवयुवतियां घाटू नृत्य के लिये इकट्ठी हो गई ।

बसंत की एक ऐसी शाम सुकुमार खिड़की में बैठा पूर्ण चन्द्रमा को देख रहा था । चांदी सी फैली चांदनी और आसमान में दौड़ लगाते बादल मानो उससे कह रहे हों "छेड़ो, बांसुरी पर अच्छी तान छेड़ो ।" उसने बांसुरी निकाली, उसका मन कर रहा था बांसुरी बजाने को । उसकी पूरी कोशिशों के बावजूद भी वह अभी तक सयपात्री के पिता के मन को जीत नहीं पाया था । यह उसे एक कठिन काम लग रहा था । उसने सोचा, अब यहां इस तरह रहने की बजाय यहां से चले जाना ही अच्छा है ।

दूसरे दिन पौ फटने से पहले ही वह चुपचाप घर से निकल गया । घर के सभी लोगों को उसी तरह सोता छोड़कर । बाहर निकल कर वह रुका, मुड़ा, मन ही मन उसने सयपात्री और उसकी मां को प्रणाम किया, विदा कही और अपने रास्ते पर चल दिया ।

सवेरा होने तक वह गांव से दूर देवदार के पेड़ों की पहाड़ी तक पहुंच गया । एक बार तो उसने कल्पना की कि सयपात्री उसका नाम लेकर उसे बुला रही है । वह सोचने लगा कि सयपात्री के उठने तक उसे रुकना चाहिये था और मिल कर ही आना चाहिये था । लेकिन अब वापिस तो जाया नहीं जा सकता । इस प्रकार वह फिर जैसे अपने रास्ते पर चल दिया । दिन भर वह चलता रहा, पहाड़ी से होकर, घाटियों में से निकलता, शाम होते होते वह पर्वत की चोटी पर पहुंच गया । वहां देवी का एक मंदिर था । उसने रात भर वहां रुकने का निश्चय किया । अंदर मंदिर में पहुंचकर उसे अकेलापन महसूस हुआ । वह उदास हो गया । उसके मन में एक तान घूम रही थी—वह बजाना चाहता था—पर इस तान में उदासी थी । उसे लगा कि सयपात्री और उसकी मां को छोड़ने से वह एक बार फिर अपने परिवार से अलग हो गया है । वह ऐसी तान छेड़ना चाहता था जिससे

सयपात्री को मालूम हो जाये कि वह उससे कितना स्नेह करता था। लेकिन उसके दिल से उदासी की तान ही निकल रही थी। वह वहीं बैठ गया, मंदिर में, उसके आंसू बह निकले, धीरे धीरे वहीं बैठा रोता रहा, चुपचाप अपने आप।

जब वह जागा, सुबह हो चुकी थी। सूरज की रोशनी मंदिर की खिड़की की दरारों में से निकल कर मंदिर में आ रही थी। देवी के गले में फूलों की माला लटक रही थी, मुख के चारों तरफ एक आभा थी। उसे देवी की उस मूर्ति में सयपात्री और उसकी मां नजर आई। ऐसा लगा जैसे वे मूर्ति की बांहों द्वारा उसे अपने गले लगाना चाहती हो। अचानक उसे कुछ संदेह हुआ। वह एक दुविधा में था—वह आगे चलता जाये या फिर सयपात्री और उसके परिवार में लौट आये? वह धीरे धीरे मंदिर से बाहर आया और एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया। दिन भर वह वहीं बैठा रहा—सोचता रहा कि क्या करे?

उस रात भी वह उसी मंदिर में सोया। सपने में उसे सयपात्री दिखाई दी। उसने देखा कि वह उसके सामने ही खड़ी है मानो उसे अपने पीछे पीछे आने का इशारा कर रही हो। वह बोलने लगा तो सयपात्री ने अपनी उंगली होठों पर रखकर चुप रहने का इशारा किया। जब वह सोकर उठा तो वह जानता था कि निर्णय हो गया है। उसे घर लौटना होगा।

इस बात को पूरा एक साल हो चुका था जब वह इस गांव में आया था और सरपंच की पत्नी के साथ उसके घर गया था। उसे याद था जब पहली बार सयपात्री को देखा था। वह मिट्टी के टीले पर लगे तुलसी के पौधे के सामने खड़ी थी। उस समय उस ढेर पर एक दिया भी जल रहा था। आज रात जब वह घर लौटा, उसने देखा कि टीले पर दिया जल रहा है। लेकिन घर के अहाते में गांव के लोग इकट्ठे हो रहे थे। सबके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी।

सुकुमार चुपचाप घर में घुसा। अन्दर सयपात्री अपनी मां की गोद में लेटी हुई थी। उन्होंने ऊपर को सिर उठाया। उसे देखते ही वह स्त्री जोर से बोली, "मेरे बेटे, देखो तुम्हारी बहिन को क्या हो गया है? लोग कहते हैं कि यह ठीक हो जायेगी, लेकिन, मैं क्या करूं, मैं नहीं जानती।"

सुकुमार उनके पास धीरे धीरे पहुंचा। उसके चेहरे पर आंसू ढुलक पड़े। हाथ बढ़ाकर उसने अपनी बहिन को सहलाया।

"जिस रात तुम गये, उसी दिन इसको बहुत तेज बुखार हो गया। कल से तो यह ऐसी ही है—बिल्कुल बेहोश। मेरे विचार से इसकी आत्मा तो तुम्हें ढूंढने गई है। अब तुम वापिस आ गये हो। बेटा, कुछ करो, यह ठीक हो जाये, होश में आ जाये।"





सुकुमार वहीं बैठ गया, चुपचाप अडिग, उसके हाथ सयपात्री के मुंह को सहला रहे थे। उसने अपनी बांसुरी निकाली, धीरे धीरे बजानी शुरु की। बांसुरी की तान जैसे ही कमरे में गूंजी, सयपात्री की पलकें भी फड़फड़ाने लगीं। उसके पिता, कमरे में आ गये थे—वे एक प्याले में पानी लाये। उन्होंने पानी लड़की के होठों से लगाया। धीरे धीरे उसने आंखें खोलीं। सुकुमार को देखकर वह बड़-बड़ाई "मेरे भैया, मेरे भैया, तुम आ गये हो।"

अपनी बांसुरी को नीचे रखकर वह बोला, "हां मेरी बहिन, मैं यहीं हूं। यह मैं ही हूं—तुम्हारा भैया।"

अचानक सयपात्री के पिता सुकुमार के पास आये। आंखों में आंसू भर कर उन्होंने सुकुमार को अपने सीने से लगा लिया "सच, बेटा, तुम मेरे अपने बेटे हो, मैं अब तुम्हें कभी नहीं जाने दूंगा, कभी नहीं।"

मां वहीं बैठी रही, आंखों से खुशी के आंसू बह निकले थे। सयपात्री और सुकुमार ने एक दूसरे की तरफ देखा और मुस्कराये।

गांव के ही एक निवासी ने कहा, यह तो वास्तव में घाटू की कहानी की तरह ही है। घाटू—जो हमारे नेपाल के प्रसिद्ध पवित्र नृत्यों में से एक है।

चित्रांकन—टेक बीर मुखिया

पाकिस्तान

टुन्नु और गधा

अनवर एनायतुल्लाह

(सम्पादकीय टिप्पणी—इस कहानी की अन्तिम घटना को छोड़कर तथा अन्य भागों को छोटाकर काफी संक्षिप्त किया गया है।)

टुन्नु और सफ़दर—दोनों भाई बहन थे। दोनों ही बच्चे सुंदर और प्यारे थे। उनकी कोठी खूबसूरत पहाड़ी पर बसे छोटे से कस्बे में थी जहां उनके पापा कृषि विभाग में अच्छे पद पर थे। उनके पापा की अपने पद के कारण पूरे कस्बे में अच्छी इज्जत थी और सभी लोग उन्हें 'डाक्टर साहब' कहते थे। टुन्नु और सफ़दर शरारती किस्म के बच्चे थे। दोनों ही मम्मी को बहुत परेशान करते थे। परंतु वे थीं तो मम्मी। इसलिये सब कुछ सहन करती थीं। उन्होंने दो जानवर पाल रखे थे। एक तो जर्मन नस्ल का कुत्ता जिसको वे टाइगर कहते थे और एक छोटा हिरन। हिरन उनकी कोठी के पिछले हिस्से में बंधा रहता था। टाइगर सदा टुन्नु के साथ ही रहता था। जहां वह जाती, वह भी साथ ही जाता।

टुन्नु थी तो लड़की पर उसका स्वभाव, उसकी शरारतें, उसके खेलकूद सब कुछ लड़कों जैसा होता था। ज्यादातर वह बाहर ही खेलने जाती थी। कोठी के बगीचे में तैरने के लिये एक स्वीमिंग पूल बना हुआ था जिसमें पापा दोनों बच्चों को तैरना सिखाया करते थे। टुन्नु को तैरना अच्छा लगता था। मम्मी टुन्नु से थोड़ा परेशान रहती थी। वह हमेशा चाहती कि वह एक लड़की की तरह रहे, घर के कामकाज में हाथ बंटाये। अक्सर मम्मी कहती, "किसी ने कभी सुना है कि लड़कियां इस तरह घूमती फिरें। इसको तो असल में लड़का होना चाहिये था।"

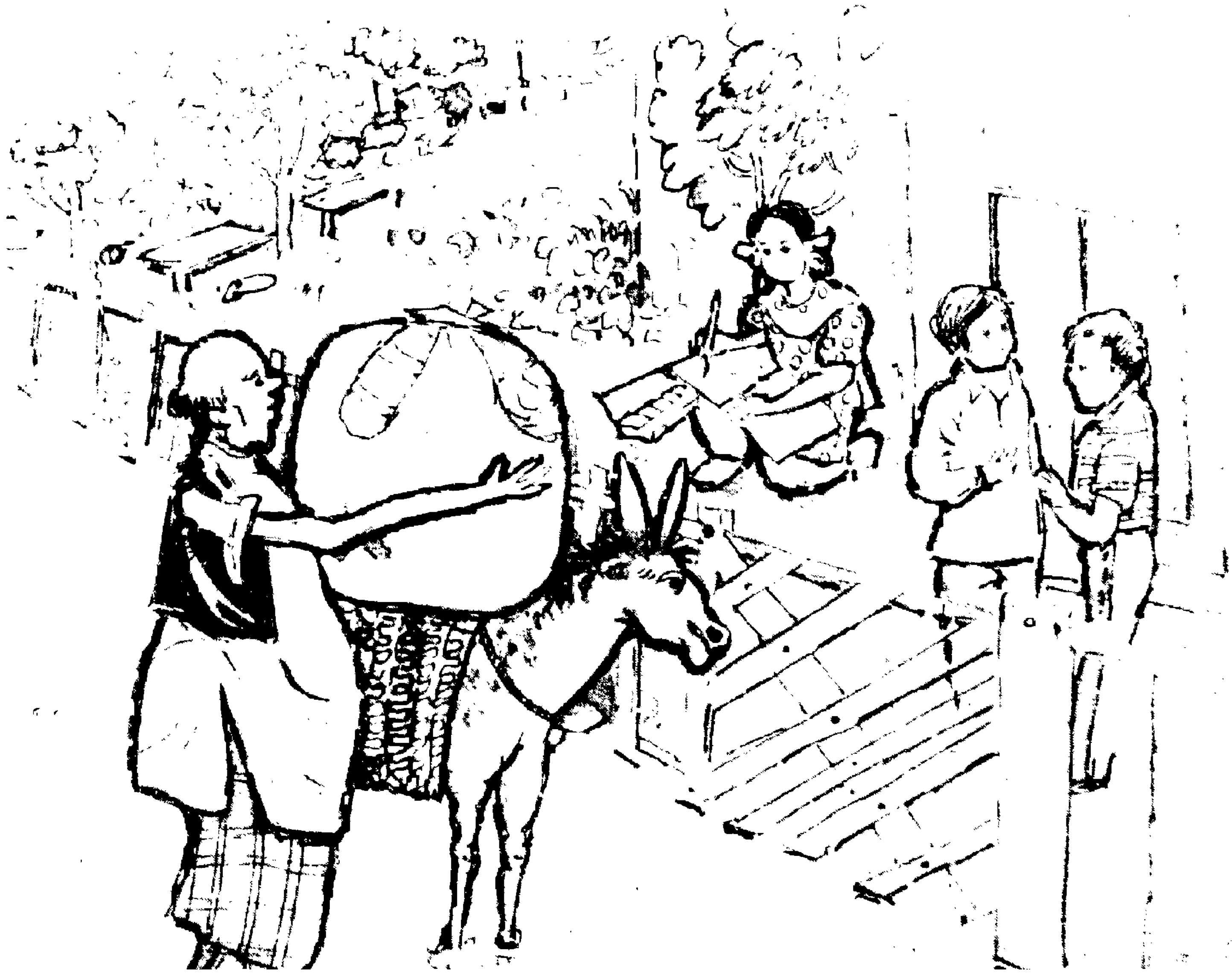
पापा भी हंस कर जवाब देते, "ठीक कहती हो। हमारा परिवार है ही कुछ बेतर-तीब सा। असल में टुन्नु को लड़का होना चाहिये और सफ़दर को लड़की।"

"बच्चों को बिगाड़ने में आपका भी तो उतना ही हाथ है," मम्मी और नाराज होकर कहतीं।

एक दिन की बात । इतवार की छुट्टी थी । पापा सुबह ही सुबह शिकार के लिये चले गये । आजकल बत्तखों का मौसम था । पास की झील में थीं भी बत्तखें काफी । मौसम सुहावना था । उनके घर उनका एक चचेरा भाई, जो सफ़दर के बराबर का ही था, आया हुआ था। नाश्ता करने के बाद तीनों बच्चों ने बाहर बगीचे में खेलने का तय किया । उन्होंने एक पेड़ के नीचे चटाई बिछाई । घर से ड्राइंग की कापी और खिलौने ले आए । टुन्नु ने एक चिड़िया की तस्वीर बनाकर उसमें रंग भरना शुरू किया । लेकिन उसका मन उसमें नहीं लग रहा था । उसका ध्यान सफ़दर और चचेरे भाई की ओर ही था । क्योंकि वे दोनों घर बनाने का खेल खेल रहे थे । थोड़ी देर बाद ही वह रंग भरना छोड़ कर उन दोनों में ही जाकर मिल गई ।

खेलते हुये उन्हें कुछ ही देर हुई थी कि उन्हें कोठी से बाहर गधे के रेंकने की आवाज़ सुनाई दी । वे समझ गये कि धोबी आ गया है । धोबी हमेशा ही इतवार को आता था । उसके गधे की पीठ पर धुले हुये कपड़ों की गठरी होती थी ।

धोबी को आया जानकर तीनों बच्चे खेलना छोड़कर उठे और गेट खोलने के लिये भागे । धोबी की मोटी तोंद, गंजा सिर और लम्बे-लम्बे बेढंगे से हाथ । उसे देखकर बच्चों को बड़ा मजा आता था । जब भी वह आता, बच्चे हमेशा उसे छेड़ते और चिढ़ाया करते थे ।



जैसे ही गधा अपने मालिक के साथ कोठी के अंदर घुसा, सफ़दर ने टुन्नु से कहा, 'जाओ, मम्मी से कहो कि धोबी आया है।'

टुन्नु बोली, 'तुम खुद ही जाकर बताओ। देखते नहीं, मैं काम रही हूं।' और यह दिखाने के लिये कि वह काम कर रही है—उसने रंग भरना शुरू कर दिया।

सफ़दर अपने चचेरे भाई को लेकर घर के अंदर गया। वहां देखा कि मम्मी पड़ोस में किसी के घर गई हुई थी। वे दोनों मम्मी को बुलाने चले गये। टुन्नु बगीचे में अकेली रह गई। उसका मन तो लग नहीं रहा था रंग भरने में। दोनों भाई चले ही गये थे। उसने ड्राइंग की कापी और रंग वगैरह एक तरफ रखे। इधर-उधर नज़र दौड़ाई। उसने देखा कि उसका कुत्ता टाइगर पेड़ पर उछलती कूदती एक गिलहरी के साथ खेल रहा था। टुन्नु को यह खेल पसंद आया। फिर उसने देखा कि धोबी अभी तक खड़ा है। उसने उससे बात करना शुरू की। परन्तु धोबी की भाषा किसी की भी समझ में नहीं आती थी और बच्चे हमेशा उसका मज़ाक ही उड़ाते थे। इसलिये वह ज्यादातर चुप ही रहता था। उसने अपने गधे को एक पेड़ से बांधा और धुले कपड़ों की गठरी उतार कर कोठी के अंदर चल दिया।

अब टुन्नु बगीचे में बिलकुल अकेली रह गई। वह क्या करे, उसे कुछ सूझा नहीं। उसने देखा गधा वहीं बंधा है। उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं। उसे कोई देख भी नहीं रहा था। यहां तक कि इस वक्त बूढ़ा माली भी वहां नहीं था। वह शायद अपनी कोठरी में आराम कर रहा था। उसे एक शरारत सूझी। जल्दी से उसने गधा खोला और उसे खींच कर कोठी के पिछवाड़े की तरफ ले गई। उसके मन में गधे की सवारी करने की आई। वह बहुत खुश हुई।

इतने में उसे मम्मी के आने की आवाज़ सुनाई दी। उसके होश फाख्ता। अगर मम्मी ने गधे को कोठी के अंदर देख लिया तो खैर नहीं। घबराकर वह गधे को छुपाने की जगह ढूंढ़ने लगी। उसके मन में आया, गधे को कहीं छिपा दिया जाये। धोबी अपने गधे को ढूंढ़ेगा, जब उसे नहीं मिलेगा, वह हल्ला करेगा। ढूंढ़ ढांढ कर जब वह थक जायेगा तो बगैर गधे के वह अपने घर लौट जायेगा; और फिर, फिर तो उसे गधे की सवारी करने का पूरा समय मिलेगा। खूब मज़ा आयेगा। सोच-सोच कर वह खुश होती रही।

पहले जब भी धोबी आता था। बच्चे गधे को बहुत तंग करते थे। गधे को भी आदत पड़ गई थी जैसे कि वह भी इन बच्चों को पहचान गया था। लेकिन आज, आज टुन्नु गधे के साथ बड़े अच्छे ढंग से पेश आ रही थी। गधा भी एकदम खुश। वह सोच रहा था टुन्नु शायद आज उसे बढ़िया खाना देगी, साफ-सुथरी जगह में



रखेगी। यही सोच-सोचकर वह टुन्नु के पीछे-पीछे चल रहा था। बेचारा गधा, उसे क्या मालूम कि उसके साथ क्या सलूक होने जा रहा है।

टुन्नु ने गधे को पकड़ कर कोठी का चक्कर लगाया। उसे कहीं ऐसी जगह नहीं दिखाई दी जहां वह उसे बांध सके। समय कम था। मम्मी की आवाज़ पास आती जा रही थी। उसे डर भी लग रहा था कि कहीं कोई देख न ले। तभी उसे दूर कोने में, बरामदे के कोने में, बाथरूम का बाहर का दरवाजा कुछ खुला सा नज़र आया। यह बाथरूम एकदम अलग था और घर के लोगों के काम नहीं आता था। जब कोई मेहमान आता तो वही इसका इस्तेमाल करता, क्योंकि एक दरवाज़ा बाहर इस तरफ कोठी के पीछे बरामदे में खुलता था और दूसरा दरवाज़ा अंदर मेहमान घर में। "यहां बाथरूम में इस गधे को खड़ा कर दिया जाये। किसी को मालूम भी नहीं पड़ेगा, और फिर, बाथरूम की तरफ किसका ध्यान जायेगा," टुन्नु ने सोचा।

यह सोचकर टुन्नु गधे को लेकर बाथरूम तक गई। धीरे से दरवाज़ा खोला। गधे को अंदर किया और जल्दी से दरवाज़ा बंद कर, बाहर से चटकनी लगा दी।

इसके बाद जल्दी से भाग कर वह बगीचे में आई और अपनी कलर बुक के पास आकर बैठ गई। सफ़दर और उसका चचेरा भाई अभी तक लौट कर नहीं आये थे। उसने राहत की सांस ली, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। चुपचाप रंग भरने लगी। थोड़ी ही देर में दोनों लड़के लौट कर आ गये। वह चुपचाप अपने काम में लगी रही, मानो कुछ हुआ ही नहीं।

अचानक कुछ शोर सुनाई दिया। टुन्नु ने ध्यान से सुना। यह धोबी की आवाज़ थी। वह धोने के लिये मैले कपड़ों की गठरी लेकर घर से बाहर आ गया था, पर उसे अपना गधा कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। कपड़ों की गठरी उसने बरामदे में रखी और घर में चारों तरफ इधर-उधर घूम कर अपना गधा ढूंढ रहा था। लेकिन सब बेकार। गधा कहीं नहीं मिल रहा था। उसने बच्चों से पूछा। दोनों लड़कों ने तो कह दिया, "हमें नहीं मालूम", 'टुन्नु बोली, 'गधा रस्सी तुड़ाकर जंगल की तरफ भागा था—मालूम नहीं कहां चला गया।' धोबी परेशान, वह चिल्लाता, सिर पीटता जंगल की तरफ चल दिया।

थोड़ी देर तो घर में शांति रही। लेकिन तभी एक मेहमान आ गये। उनके आने की कोई उम्मीद भी नहीं थी। वे पापा के पुराने दोस्त अली साहब थे। वे कभी कभी आते रहते थे। जब भी आते, उनको मेहमान घर में ठहराया जाता। वे लम्बे और छरहरे बदन के थे। छोटी पकी दाढ़ी, मूंछे साफ और सिर पर थोड़ा गंजापन।

उनके आने से थोड़ी हलचल सी हुई। मम्मी ने तपाक से उनका स्वागत किया और उनको मेहमान घर में ले गई। मेहमान घर कोठी में बरामदे के दूसरे कोने में था।

अब टुन्नु थोड़ी परेशान हुई। उसे लगा अली साहब क्या आये एक परेशानी आ गई। लेकिन क्या करे? मेहमान घर में मम्मी नौकर के साथ झाड़-पोंछ में लगी थी और अली साहब से बात भी कर रही थी। उधर टुन्नु दोनों भाइयों को छोड़-कर भी नहीं जा सकती थी। वह मन ही मन मनाने लगी—अली साहब अभी बाथरूम में न जायें—कम से कम तब तक न जायें जब तक कि वह गधे को वहां से निकाल न दे।

उधर गधे महाशय चुपचाप बाथरूम के अंधेरे कोने में थे। उसको ख्याल था कि टुन्नु उसके लिये खाने-पीने का कुछ बढ़िया सामान ला रही होगी।

अली साहब कुछ साफ सुथरे किस्म के आदमी थे। वे हमेशा दिन में दो बार नहाते थे और आज तो वे सफर के कारण थक गये थे। आज उनको नहाने की खास जरूरत महसूस हो रही थी। उन्होंने सूटकेस से धुले हुये कपड़े निकाले, जूते उतारे और चप्पल पहन कर सीधे बाथरूम में घुस गये। वे बाथरूम में मेहमान

घर के अंदर के दरवाज़े से गये । अंदर जाते ही, उन्होंने चटकनी लगा ली

अंदर वैसे तो अंधेरा घुप था । लेकिन अली साहब अक्सर आते रहते थे । उनको बाथरूम वगैरह की पूरी जानकारी थी । उनको मालूम था पानी का टब कहां होता है, खूंटी किधर है, आदि, आदि । इसलिये उनको अंधेरे के कारण कुछ खास परेशानी नहीं हुई थी । धुले हुये कपड़े उन्होंने खूंटी पर टांगे और पानी के टब की तरफ बढ़े । लेकिन यह क्या, अंधेरे कमरे में भी किसी छोटे सुराख से आ रही हल्की रोशनी में उन्होंने जो कुछ भी देखा, उससे वे सकते में आ गये । बेचारे अली साहब, उनकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे ।

गधे महाशय सपनों में खोये थे । अली साहब की आवाज़ और आने जाने की खटपट से गधे ने मन ही मन लड्डू फोड़े 'लगता है मेरा खाना आ गया ।' अली साहब तो जल्दी में घुसे थे । उनको तो गधा दिखाई नहीं दिया था लेकिन गधे ने देख लिया था । उसने देखा कि न तो खाना आया, न दाना आया, न घास और न चारा । इतनी ज़्यादती, इतनी बेइज़्ज़ती । खाने-दाने की बजाये ये क्या दुबले, पतले और गंजे अली साहब । गधे को गुस्सा आ गया । वह अपने को रोक नहीं सका । ज़ोर से रेंक कर वह अली साहब पर कूद पड़ा ।

वे बेखबर थे, घबरा गये । अचानक यह क्या बला आ गई । हड़बड़ाहट में इतना ही मालूम हुआ कि कोई लम्बा चौड़ा भद्दा सा जानवर है जो अजीबो गरीब आवाज़ निकाल रहा है । बेहाल और परेशान होकर वे मदद के लिये चिल्लाये ।

चप्पल वहीं छोड़ वे दरवाज़े की तरफ भागे । हड़बड़ाहट में वे उस दरवाज़े की तरफ भागे जो बाहर की तरफ खुलता था और जिसे टुन्नु ने बाहर से बंद कर रखा था । उन्होंने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, पर बेकार । वह तो खुल ही नहीं रहा था । वे यही समझ कर परेशान रहे कि मैंने तो चटकनी अंदर से बंद की थी । यह बाहर से किसने बंद कर दी । ज़रूर यह कोई भूत प्रेत का काम है । अली साहब की घिग्घी बंध गई ।

अली साहब का चीखना चिल्लाना और गधे का रेंकना सुनकर घर के सभी लोग दौड़े, मम्मी, बच्चे और नौकर—अली साहब को क्या हुआ ? टुन्नु को मालूम तो था ही कि क्या हुआ होगा ।

अली साहब को लगा था कि यह कोई भेड़िया है जिसने उन पर हमला किया है। अब उन्हें पक्का यक़ीन हो गया था । उन्होंने सुना कि झनझनाहट करती हुई बाल्टी लुढ़क रही है । इसके बाद ऐसा लगा कि जैसे किसी ने जग फेंक कर मारा हो । यह कोई ऐसा-वैसा भेड़िया नहीं वरन भेड़िये की शक्ल में कोई भूत है । अली साहब उसके हमले से बचने के लिये इधर उधर हटते तो कभी बाल्टी से, तो कभी टब



से, टकरा जाते और ऐसे में वे और ज़ोर से मदद के लिये चिल्लाते।

अली साहब चूंकि मेहमान घर की तरफ से बाथरूम में घुसे थे इसलिये सभी लोग उधर ही दौड़े थे। बाहर के दरवाज़े पर किसी का ख्याल नहीं गया था। नौकर दरवाज़े को तोड़ने की कोशिश में थे। मम्मी बाहर खड़ी परेशान हो रही थी और हाथ मल रही थी। इतने में कहीं से ज़ोर ज़ोर से भौंकता हुआ टाइगर भी आ गया। मम्मी ने उसे भौंकने से रोका नहीं। उल्टे उससे मम्मी कहने लगी, 'टाइगर अंदर जाओ, किसी भी तरह, और देखो क्या बात है।'

टाइगर ने ही वास्तव में मामले को सुलझाया। अंदर के दरवाज़े से बाथरूम में जाने की बजाये उसने कोठी का पूरा चक्कर लगाया और बाथरूम के पिछले दर-वाज़े पर पहुंचा। उसी दरवाज़े पर जिसे टुन्नु ने बाहर से बंद कर रखा था। दरवाजे को बंद देखकर टाइगर और ज़ोर से भौंकने लगा।

अब अली साहब अंदर और परेशान। बाथरूम में अन्दर उनको अजीबो गरीब आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। एक तरफ से आदमियों की आवाज़ें दूसरी तरफ जानवरों की आवाज़ें। उनको लगा कि भूत-प्रेत के साथी इकट्ठे हो गये हैं और उनको खत्म करने पर तुले हुये हैं। वे और ज़ोर से चिल्लाने लगे। इससे शोर और बढ़ गया।

टुन्नु की हालत खराब। उसे टाइगर पर गुस्सा आ रहा था कि बेकार में शोर मचा रहा है और मन में डर भी लग रहा था कि पोल खुल जायेगी। क्या करे? अब मम्मी भी टाइगर के पास बाहर के दरवाज़े पर पहुंच गई थी। आते ही मम्मी ने फौरन चटकनी खोली। दरवाज़ा खुलते ही, एकदम अली साहब बाहर निकले। वे हांफ रहे थे, मुंह खुला हुआ, डरे हुये, परेशान। उनके पीछे पीछे गधा भी बाहर आया। उसको देखते ही अली साहब भागे, गधा उनके पीछे, दोनों बगीचे की तरफ, पौधों को कुचलते हुये, गमलों को तोड़ते हुये। गधा तो जल्दी से जल्दी इस घर से बाहर निकलना चाहता था और अली साहब···। वे तो मुसीबत से बचना चाहते थे। हांफने की वजह से या घबराहट में उनकी सांस उखड़ने लगी थी।

नौकरों ने दौड़ कर अली साहब को बगीचे में ही रोक लिया। काफी देर बाद, अली साहब के सिवा सबकी समझ में आया कि सब कुछ ठीक ठाक था। सब उनको समझाने लगे कि बाथरूम में उनके साथ यह धोबी का गधा था। लेकिन अली साहब नहीं मान रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था, 'गधा बाथरूम में कैसे पहुंचा?' उनको यक़ीन था कि ज़रूर यह कोई भूत ही था जो दोनों दर-वाज़ों के बंद होते हुये भी अंदर पहुंच गया। ज़रूर वह दीवार कूद कर हवा बन-कर पहुंचा। उनका विचार था कि भूत प्रेत जैसे चाहें वैसी शक्ल बदल सकते हैं, जहां चाहें वहां पहुंच सकते हैं।

उधर मम्मी बच्चों से पूछताछ कर रही थी। अब उनकी समझ में आया कि यह किसने शरारत की होगी। अब सब कुछ बर्दाश्त के बाहर था। बच्चो, आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि टुन्नु की कैसी गत बनी होगी। जब तक अली साहब को यह घटना याद रहेगी—टुन्नु भी अपनी पिटाई नहीं भूल सकती।

चित्रांकन—मोहम्मद वासिम

फिलिपाइन

एक भाग्यशाली बालक

न. व. म. गोजन्जलेज

(सम्पादकीय टिप्पणी—फिलीपाइन में लोग अनेक भाषायें बोलते हैं। उन सभी भाषाओं के शब्द मूल कहानी में आये हैं, कहानी के प्रारंभ को सरल बना दिया गया है। जहां-तहां स्पष्टीकरण के रूप में कुछ वाक्य भी जोड़ दिये गये हैं—जिससे कि फिलीपाइन से बाहर के बच्चों को यह समझ में आ सके।)

जुलाई की गर्म रात। जूलियो पत्र लिख रहा था—और किसी को नहीं—वह लिख रहा था अपने मकान मालिक, का पोन्सो को। यह पत्र वह अपने बेटे के लिये लिख रहा था। उसका बेटा जोसे मानसालय शहर में पढ़ने के लिये जाना चाहता था। इसी शहर में का पोन्सो रहता था।

ये लोग एक साल पहले मिन्डोरो के इस द्वीप पर रहने के लिये आये थे क्योंकि जहां वे पहले रहते थे वहां जूलियो को खेती के लिये कुछ भी ज़मीन नहीं मिल सकी थी। जो कुछ भी हो इससे उसने अपने आपको एक प्रकार से भाग्यवान ही माना था क्योंकि का पोन्सो ने उसे अपने किरायेदार के रूप में रखना मंजूर किया था।

"प्रिय दोस्त"—उसने लिखना शुरू किया। कुछ समय पहले उसकी पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया था। का पोन्सो उस समय उसका पड़ोसी था और इस प्रकार से वह उसके नवजात बच्चे का अभिभावक बन गया था। उसके बाद से ही दोनों ने एक-दूसरे को दोस्त कहना शुरू कर दिया था। जूलियो अपना पत्र ताग लोग (फिलीपाइन की एक भाषा) भाषा में लिख रहा था, अपने बेटे की स्कूल-कापी से उसने पन्ना फाड़ा था और वह चाव से उस पर झुका हुआ था।

काफी महीने हो गये थे जब उसने लिखने के लिये अपने हाथ में कुछ पकड़ा था। इससे पहले तो बस जब वह मानसालय के म्युनिसिपल कार्यालय में घर के लिये एक अर्जी देने गया था—तब उसने पैन का प्रयोग किया था और उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ था कि उसने खाली फार्म को साफ-साफ भर दिया था।



उस अर्जी से कुछ नहीं हुआ था। वैसे का पोन्सो ने उसे विश्वास दिलाया था कि जो कुछ भी उससे होगा, वह करेगा, और सम्बन्धित अधिकारी से भी वह बात करेगा। अब वह पैन की बजाय पेंसिल से लिख रहा था। जूलियो को विश्वास था कि पत्र इतना साफ तो लिख ही सकता था कि का पोन्सो पढ़ सके।

"यह पत्र मेरे लड़के जोसे के बारे में है," उसने लिखा—"वह छठी कक्षा में पढ़ता है।" उसने यह नहीं लिखा कि जोसे को यहां मिन्डोरो आने के बाद एक वर्ष खराब करना पड़ा था "चूंकि घर में रहकर वह भैंसों की भी देखभाल नहीं कर सकता। मैंने सोचा कि शहर में रहकर यदि वह स्कूल जायेगा तो यह ज्यादा अच्छा होगा।"

दीवार के सहारे वह कमर लगाकर बैठ गया। उनके पास एक कमरे का ही मकान था—फर्नीचर के नाम पर बस एक लम्बी लकड़ी की तिपाई ही थी। वह फर्श पर बैठा था और इस तिपाई के एक कोने पर उसने लिखने के लिये कागज वगैरह रखे हुए थे। तिपाई कमरे के एक कोने में थी। दूसरी तरफ इस पर स्टोव रखा था। उसके दाहिने तरफ उसकी पत्नी और छोटी लड़की मच्छरदानी लगाकर लेटे हुये थे। जोसे भी वहीं था। दरवाजे के साथ धान के बोरे के पास उल्टे सीधे ढंग से वह लेटा हुआ था। दोपहर के बाद से वह घर के बाहर ही रहा। का पोम्सो की एक भैंस नदी के दूसरी तरफ नये रोपे गये धान के खेत में चली गई थी—उसी को ढूंढने में वह लगा रहा। जोसे थका हुआ था—उसे नींद आ गई। नींद में उसने खुर्राटे भरने शुरू कर दिये। अब वह बारह साल का हो गया था।

मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था। उसकी पीली लौ टिमटिमा रही थी। खाने की भीनी भीनी गंध आ रही थी—भुनी हुई मछली जो कटोरियों से बिखरकर इधर-उधर फैल गई थी और तिपाई पर सूख गई थी। सूखने से मछली का और तिपाई की लकड़ी का रंग एक जैसा हो गया था। वे बहुत ही गरीब थे। पर जूलियो की आदत इस गरीबी से कुछ परेशान होने की नहीं थी। नहीं तो कभी का पागल हो गया होता। लेकिन जो भी था ठीक था। उसने कमरे में एक नजर दौड़ाई। गंध उसकी नाक में घुस गई। उसने मच्छरदानी की तरफ देखा और फिर देखा जोसे की तरफ जो दरवाजे के पास पसरा हुआ था। वह फिर पत्र लिखने में लग गया।

"मित्र, मेरा लड़का जोसे", वह लिखता जा रहा था, "बहुत ही मेहनती किस्म का लड़का है। मित्र, क्या तुम उसे अपने घर में ठहरने के लिये कुछ जगह दे सकते हो। तुम उससे जो चाहो, काम कराओ, किसी भी किस्म का। वह चावल पका सकता है, और मुझे यक़ीन है, वह बर्तन तक साफ कर सकता है।"

जूलियो को ध्यान आया जब वह त्यौहार के दिनों में तीन महीने पहले का पोन्सो के घर गया था। काफी बड़ा घर था उसका, बहुत सारे नौकर चाकर। फर्श इतने चिकने और चमकते कि चलते चलते अपनी शक्ल देख लो। फर्श पर जब कोई चलता, एक नौकर कपड़ा लिये पीछे पीछे चलता। उसका काम बस यही होता कि वह आपके पांव से गिरती धूल के धब्बे साफ करे।

"मुझे आशा है तुम इसे बहुत बड़ी दिक्कत नहीं मानोगे," जूलियो लिखता रहा। अपने मन में उठते विचारों को वह जोड़ता और लिखता रहा। उसके मन में कहीं डर भी था कि का पोन्सो कहीं उसके पत्र को उल्टा न समझे। लेकिन वह लिखता रहा। धीरे धीरे लेकिन जम कर, लिखते लिखते वह रुक भी जाता, जो कुछ लिखता उसे पढ़ता, बार बार पढ़ता। "मित्र, जो कुछ भी तुम हमारे लिये करोगे हम उसका बदला अवश्य चुकायेंगे। यह भी सच है कि हमारे ऊपर आपके पहले ही से बहुत अहसान हैं, लेकिन मेरी पत्नी और मैं स्वयं इन अहसानों का बदला चुकाने के लिये हमेशा तैयार हैं।"

अंतिम वाक्य को उसने फिर पढ़ा। अपनी पत्नी का ज़िक्र करते ही उसे याद आया कि उनके यहां आने के पहले महीने में ही का पोन्सो ने उनके लिये चावल के पांच बड़े बोरे भेजे थे। बाद में उसने सुना कि फसल के समय उसे इन चावलों के दुगने दाम देने होंगे। शायद ब्याज लेने वाली बात, लेकिन यह उस तरफ रिवाज ही ऐसा था। और फिर जूलियो तो एक ऐसा व्यक्ति था जो कभी किसी बात की शिकायत ही नहीं करता था। इसके अतिरिक्त, उसने का पोन्सो को सदा ही अपना घनिष्ट मित्र माना। और कुछ नहीं—बस एक सच्चा और पक्का दोस्त।

अचानक वह सोचने लगा—जोसे कैसे का पोन्सो के घर में काम करेगा। उसे तो वहां की बहुत सी बातों की आदत ही नहीं है। कभी अगर यह लड़का किसी कुर्सी से टकरा गया और कुछ बर्तन तोड़ दिये···और···इसी प्रकार वह सोचता रहा—लड़के की चिंता में घुलता रहा।

"और मित्र, मैं चाहता हूं तुम जोसे को अपना ही बेटा मानो। अगर वह कभी गलती करे तो उसकी पिटाई भी कर दो। वास्तव में मैं चाहता हूं कि वह तुम्हें अपने दूसरे पिता के रूप में माने।"

जूलियो को लगा कि आगे अब कुछ नहीं रह गया—लिखने या कहने के लिये—उसने अपने जीवन का आज सबसे बड़ा लम्बा पत्र लिखा था। कुछ क्षणों के लिये लगा जैसे कि उसकी उंगलिया सुन्न हो गई हों। वह सोचता था—यह भी अच्छा मज़ाक है, क्योंकि उसने जीवन में कभी भी एक पृष्ठ भी नहीं पूरा लिखा था। उसने अपनी कमर दीवार से लगाई और अपने आप पर मुस्कराया।



ठीक है, पत्र पूरा हो गया था। शुरू में उसे डर था कि वह कभी भी पत्र नहीं लिख पायेगा। लेकिन अब तो लिख लिया था। उसे लगा, पत्र ठीक लिखा गया था। दूसरे दिन वह इस पत्र के साथ जोसे को जरूर भेज देगा।

दूसरे दिन सुबह—छह बजे का समय। बारह वर्ष का लड़का—भैंस पर बैठा नदी के किनारे किनारे शहर की तरफ जा रहा था। भैंस की चौड़ी पीठ पर उस का हल्का सा बोझ। भैंस के पीछे पीछे उसके पिता चल रहे थे। नदी के मोड़ तक वे उसे छोड़ने आये। नदी से निकलकर एक छोटा नाला बांसों के झुरमुट के पास सड़क पर से बह रहा था। भैंस पानी में पैर रखने से पहले जरा रुकी। उस के पिता ने एक डंडी उठाकर भैंस को लगाई। पिता ने फिर वह डंडी लड़के को दे दी जैसे यह एक बहुत बड़ा तोहफा हो।

पिता नाले के इस तरफ ही खड़े रहे। "देखो, पत्र का ख्याल रखना"—इधर खड़े-खड़े ही उन्होंने ज़ोर से कहा, "देखो—तुम्हारे कमीज की जेब में है न पत्र ?"

लड़के ने जेब टटोली। जब उसे पत्र मिल गया, उसने कहा, "नहीं, पापा, मैं इसे खोऊंगा नहीं।"

"और भैंस का भी ख्याल रखना, जूलियो ने फिर कहा," "मैं एक दो दिन में इसे लेने के लिये शहर आऊंगा। मैं बस रोपाई का काम खत्म करना चाहता हूं।"

तब जूलियो घर की तरफ वापिस चल दिया। घर में काम काफी था—वह उसी काम के बारे में सोचता हुआ चल दिया। लेकिन तभी उसे याद आया कि लड़के को कुछ और भी बताना है। रुक कर फिर उसने आवाज लगाई, "और देखो वह पत्र,"—वह ज़ोर से चिल्लाया, "ध्यान रखना—जैसे ही शहर पहुंचो—का पोन्सो को देना है। अच्छे लड़के की तरह रहना और जो भी वे कहें वही करना। मेरी सब बातें याद रखना।"

भैंस पर बैठे ही जोसे ने ज़ोर से उत्तर दिया, "हां पापा हां—याद है", चलता रहा। अपने साथ उसने अपने कपड़ों की छोटी गठरी भी बांध रखी थी—और चावलों का एक छोटा पैकट भी। यह चावल उसके शहर में रहने के लिये एक हफ़्ते के लिये काफी थे। स्कूल के पढ़ने वाले किसान के लड़कों के लिये यह एक आवश्यक प्रथा थी कि वे सीधे सादे ढंग से रहें। जोसे के लिये यह और भी जरूरी था। वैसे वह का पोन्सो के घर रहने के लिये जा रहा था। पर जूलियो यह नहीं चाहता था कि कोई उलाहने दे कि एक हफ्ते के खाने की जरा सी बात को भी वह भूल गया था।

लड़का अब अपने पिता की दृष्टि से ओझल हो गया था। रास्ते में लम्बे लम्बे धान के खेत थे। उनकी हरी पत्तियां सुबह के सूरज के प्रकाश से चमक रही थीं।



जोसे को पिता का ख्याल आया। उसके मन में अचानक अपनी कमीज की जेब में रखे पत्र को पढ़ने की उत्सुकता हुई। उसने सड़क के किनारे एक छायादार पेड़ के बीच अपनी भैंस रोकी। पास ही झाड़ी में बैठी चिड़िया ने गाना गाया। जोसे पत्र पढ़ रहा था। चिड़िया का गाना भी उसे सुनाई दे रहा था।

वह एक एक शब्द पढ़ रहा था। पहले तो उसे पत्र में लिखी अपने पापा की भाषा ही समझ में नहीं आई। पढ़ते पढ़ते जैसे ही एक एक वाक्य का अर्थ उसे समझ में आया, उसका मन खुशी से नाच उठा। उसे लगा कि वह दुनिया का सबसे ज़्यादा भाग्यवान बालक है और चिड़िया भी उसी के लिये गाना गा रही है। उसे दूर से नदी के बहते पानी की कलकल भी सुनाई दी। वहीं से, जहां वह और उसके पापा अलग हुये थे। चिड़ियों का गाना—नदी की कलकल—जैसे सारे वातावरण में यही हो, पूरी दुनिया में यही हो।

चित्रांकन—एडगर सोलर

सिंगापुर

बिल्ली जो याद रहेगी

वायलेट बिलकिन्स

सम्पादकीय टिप्पणी—इस कहानी की कुछ घटनाओं को छोड़ देने से कुछ संक्षिप्त किया गया है।

"म्याऊं, म्याऊं" युसुफ जिस सड़क से जा रहा था उसके पास वाले नाले से एक पतली आवाज आई। वह रुका और सुनने लगा। आवाज़ फिर आई, "म्याऊं, म्याऊं"।

युसुफ ने नाले में झांका। एक छोटा, बिल्ली का बच्चा, दुबला-पतला, धूल से लथपथ, पानी से भीगा, युसुफ की तरफ कातर दृष्टि से देख रहा था। युसुफ नाले में नीचे उतरा, बिल्ली के बच्चे को उठाया। नाला आधे हिस्से में लकड़ी के तख्तों



से ढका था, उस तख्ते पर उसको रख दिया। बिल्ली का बच्चा तख्ते पर खड़ा हुआ —असहाय, निराश और उदास। "बेचारी छोटी पूसी", युसुफ बोला, "आओ, मैं तुम्हें अपने साथ घर ले चलूंगा।"

युसुफ की मम्मी बिल्ली के बच्चे को देखकर खुश नहीं हुई। "युसुफ, तुम जानते हो हमने नये फ्लैट के लिये कोशिश कर रखी है। यह भी तुम्हें मालूम है कि नये फ्लैट में नियमों के अनुसार हम कोई पालतू जानवर नहीं ले जा सकते। और बिल्ली तो हम बिल्कुल ले ही नहीं जा सकते। पहले से ही हमारे पास तीन जानवर हैं और नये फ्लैट में जाने से पहले हमें उन तीनों की चिंता है। हम चार जानवर किस-किस को देंगे। मैं तुम्हें यह भी बता दूं—किसी को पालतू जानवर दे देना कोई आसान काम नहीं है।"

लेकिन युसुफ ने मम्मी के आगे हाथ-पैर जोड़कर उनको मना लिया। मम्मी ने चेतावनी दे दी, "यह समझ लो कि हमेशा ऐसा नहीं होगा।"

युसुफ ने वायदा किया कि जब वक्त आयेगा तो वह पूसी के लिये घर ढूंढ लेगा। उसने उसको खिलाया-पिलाया और उसकी सफाई की। जब बिल्ली के बच्चे को साफ किया, तो सबको यह देखकर बहुत ताज्जुब हुआ कि वह तो बर्फ की तरह सफेद है। आंखें नीली और खूबसूरत हैं।

महीने बीत गये। युसुफ का पूसी में शौक बढ़ता गया। वह उसे इतनी अच्छी लगने लगी कि उसके दिमाग से नये फ्लैट में जाने की बात ही निकल गई। हो सकता है उन्हें फ्लैट मिले ही नहीं, और फिर, फिर तो वह पूसी को अपने पास ही रख सकेगा।

पूसी बड़ी होकर बिल्ली बन गई। वह अच्छी लगने लगी। लम्बे रेशमी बाल और सुन्दर सीधी गुच्छेदार पूंछ। घर में पहले से जो तीन बिल्लियां थीं यह उनसे बिल्कुल अलग थी। उनके बाल भी छोटे थे और पूंछ भी मुड़ी-तुड़ी थी। युसुफ उन तीनों की बजाय इसी बिल्ली को बहुत प्यार करता था।

जब घर में मालूम हुआ कि पूसी मां बनने वाली है तो सभी को बहुत खुशी हुई। घर में पूसी के नाम का हल्ला हो गया। सब उसकी और उसके होने वाले बच्चों की ही बात कर रहे थे।

एक दिन जब युसुफ स्कूल से वापिस आया तो उसे मालूम हुआ, उन्हें नया फ्लैट मिलने वाला है। उसे धक्का सा लगा। अब—पूसी का क्या होगा? उसके होने वाले बच्चों का क्या होगा?

अब युसुफ के पापा-मम्मी ने उसे जोर देकर कहा कि पूसी को अब कहीं-न-कहीं छोड़ना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि पूसी को जानवर निर्दयता अवरोधक संघ

(यह एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जो एस. पी. सी. ए. के नाम से विख्यात है) को दे देंगे। संघ वाले उसकी देखभाल करेंगे। जब उसको बच्चे हो जायेंगे संघ वाले उसके बच्चों के लिये और उसके लिये किसी अच्छे घर को भी ढूंढ़ देंगे।

युसुफ चुपचाप सुनता रहा। एक शब्द भी नहीं बोला। अंदर से उसे रोना आ रहा था। वह चिल्लाकर कहना चाहता था कि वे पूसी को उससे अलग नहीं कर सकते।

उस रात उसे नींद नहीं आई, वह बिस्तर में करवटें बदलता रहा। आखिर जब वह सो गया तो उसने सपना देखा। पूसी एक पिंजरे में बन्द है और बाहर आने के लिये म्याऊं-म्याऊं कर रही है। वह दु:खी होकर चिल्ला रही थी। उसने पूसी को प्यार करने के लिये उस पर हाथ फेरा। उसे कुछ मुलायम-मुलायम सा लगा। ···उसकी नींद खुल गई। उसने देखा पूसी उसके साथ ही बिस्तर में लेटी है—धीरे-धीरे म्याऊं म्याऊं कर रही है। युसुफ ने सोचा पूसी जानती है कि उसे यहां से जाना है। अब वह म्याऊं म्याऊं कर यही कह रही है कि वह युसुफ के साथ ही रहना चाहती है।

पूसी आज से पहले कभी उसके बिस्तर में नहीं आई थी। जब वह इधर-उधर खाने की तलाश में नहीं घूमती थी तब वह तिनकों के अपने बिछौने में ही रहती थी। युसुफ की मम्मी को बिल्लियों का बिस्तर में सोना कतई पसंद नहीं था इसलिये यदि मम्मी को आज पूसी का आना मालूम हो गया तो वह नाराज़ होंगी।

दूसरे कमरों से सोने के खर्राटों की आवाज आ रही थी। युसुफ धीरे से उठा, पूसी को उठाया, बाहर के दरवाज़े तक धीरे-धीरे अपने पंजों के बल आया, आहिस्ता से दरवाजा खोला, बिना किसी आवाज़ किये पूसी को बाहर किया और धीरे से उसके कानों में बुदबुदाया, "पूसी, अच्छी बनो, जाओ—अपने बिछौने पर।"

पूसी ने युसुफ की तरफ देखा, एक बार को हिचकिचाई और फिर अपने बिछौने की तरफ चल दी।

अपने कमरे में आते हुये युसुफ ने घड़ी की तरफ देखा। सुबह हो रही थी। पांच बज चुके थे। मम्मी अब उठने ही वाली होंगी—नाश्ता बनाने के लिये। उसके उठने का भी तो यही समय था, उसको स्कूल जल्दी जो जाना होता था। स्कूल-बस उसे और उसकी बहिन को लेने सात बजे आ जाती।

बिस्तर में लेटे वह पूसी के बारे में ही सोचता रहा—क्या करे ? क्या न करे ? शायद उसकी क्लास का कोई बच्चा उसे लेले। सभी बच्चे, जिन्होंने भी पूसी को देख रखा था, उसे लेना चाहते थे। लेकिन अब तो वह बच्चे देने वाली थी। ऐसी हालत में क्या वे बच्चे उसे लेने को तैयार होंगे ? ठीक है, वह सोचता रहा,

उनसे पूछूंगा, और अगर उन्होंने मना कर दिया ? फिर वह कुछ और सोचेगा। पूसी आखिर उसकी है, वह ऐसी जगह नहीं दी जा सकती, जहां वह उसे फिर देख भी न सके।

उसकी पलकें नींद से भारी हो रही थीं। जैसे ही वह सोने को हुआ, उसे एक विचार सूझा। ठीक है, उसकी दादी का पुराना घर भी है। पिछले दो सालों से खाली ही पड़ा है। अगर पूसी को कोई लेने को तैयार नहीं हुआ वह उसे वहां, पुराने घर में छिपा सकता है। और फिर, वहां जाने की तो कोई कभी सोच भी नहीं सकता।

अलार्म बज गया था। घर के सभी लोग उठ गये थे। पर युसुफ, वह तो गहरी नींद में मस्त। उसे अलार्म का मालूम ही नहीं हुआ। टीना ने ही उसे खूब झकझोरा जब तक कि वह उठ नहीं गया। उसकी आंखों में अभी नींद भरी थी। टीना ने कहा, "जल्दी करो, साढ़े छह बजने वाले हैं। तुम हमें भी बस के लिये देर कर दोगे।" टीना देर होने की शिकायत करती ही रही लेकिन युसुफ, वह तैयार हुआ ठीक बस के पहुंचने से दो मिनट पहले।

स्कूल घर से काफी दूर था और रास्ता भी भीड़-भाड़ वाला था। युसुफ चुपचाप बस में पीछे की तरफ बैठ गया। अपने चारों तरफ क्या हो रहा है—कैसा शोर है इस सबसे बेखबर। वह सोचता जा रहा था—उसे जल्दी-जल्दी तय करना चाहिये, स्कूल लम्बी छुट्टियों के लिये बंद होने वाला है, सिर्फ एक ही हफ्ता बाकी है। इसी में उसे मालूम करना है कि पूसी को लेने के लिये कोई तैयार है या नहीं।

स्कूल बंद होने का आखिरी दिन भी आ गया। पूसी को लेने के लिये कोई तैयार नहीं हुआ, थोड़ी देर के लिये भी नहीं। युसुफ ने अपने किसी साथी का बुरा भी नहीं माना। सबके साथ वही दिक्कत थी। ज्यादातर लोग नये मकानों में जा रहे थे। सबको अपने-अपने पालतू जानवरों की परेशानी। जिनके पास पालतू जानवर नहीं भी थे, उनको भी कह दिया गया था कि वे कोई जानवर साथ न रखें। उनको शायद जल्दी ही नये मकानों में आना पड़े, इसलिये स्कूल में भी सब बच्चे यही बात करते रहते थे कि नये मकानों में जब जायेंगे तो पालतू जानवरों का क्या होगा ?

दादी के पुराने मकान के अलावा अब कोई इलाज नहीं था। युसुफ ने अपनी योजना के अनुसार काम कर ही दिया। उस खाली मकान पर वह बहुत बार गया था। यह लकड़ी के तख्तों का बना छोटा-सा मकान था जिसकी मरम्मत नहीं हुई थी। इधर-उधर से तख्ते निकले हुये थे। मकान से लगा हुआ ही था एक ढलवा

सा सायबान। इसका मिट्टी का फर्श था। दादी मां ने जलाने की लकड़ी यहां इकट्ठा कर रखी थीं। उस कमरे में बस एक दरवाजा, जो बगीचे में खुलता था और रोशनी के लिये थी एक छोटी सी खिड़की।

युसुफ ने सोचा—पूसी के लिये यह सायबान ठीक रहेगा। उसने वहां सफाई की, फिर वह सारे मकान में चारों तरफ ऐसी कोई चीज़ ढूंढ़ता रहा जिसे पूसी के नीचे बिछा सके और जिससे उसे आराम मिल सके। उसे एक छोटा बक्सा मिल गया जिसमें वह पूसी के खाने का सामान रख देगा। एक कोने में उसने पुराने कम्बल और घास से बिछौना बनाया।

युसुफ ने जब ये तैयारियां शुरू कीं तो उसके मन में एक तरह की अपराध भावना सी आई। उसका अक्सर घर से गायब होना अब घर के लोगों को मालूम होने लगा था।

"युसुफ, तुम आजकल कहां जाते हो ?" उसकी बहन ने उससे पूछा। मम्मी उस समय पास मे ही थी। उन्होंने भी कहा, "हां, तुम कहां जाते हो ? तुम हमेशा घर से बाहर रहते हो, जब भी कुछ काम बताना चाहूं मिलते ही नहीं।"

इसके बाद से वह ज़रा सावधान रहने लगा। बिल्ली के लिये घर ठीक करने में अब उसे आनंद आने लगा था। अब वह घर से निकलने से पहले यह देख लेता कि घर में उसके करने का कोई काम तो बाकी नहीं है।

थोड़ा-थोड़ा करके अब उसने लगभग आधा डिब्बा पाउडर वाला दूध इकट्ठा कर लिया। उसके ख्याल से यह कोई चोरी नहीं थी। उसने अपने जेब खर्च को भी इसी काम के लिये लगाने की सोची। उसे मिठाई खाने का बहुत शौक था। लेकिन मिठाई के बगैर अगर काम चल सकता है तो वह बचे हुये पैसों से एक हफ्ते में सार्डिन के दो छोटे डब्बे खरीद सकता है। वह सोचता रहा, पाऊडर का दूध और कहां से लिया जाये। अपनी गुल्लक के पैसों को उसने जोड़ा। ठीक है—इनसे एक बड़ा डिब्बा खरीदा जा सकता है। लेकिन वह कितने दिन चलेगा, वह सोचता रहा।

फ्लैट में जाने का समय नज़दीक आता जा रहा था। घर का सामान बांधा जा रहा था। हर कमरे में रस्सी से मजबूत बंधे बक्से ही बक्से। मम्मी बहुत काम कर रही थीं और पापा, पापा तो फ्लैट को ठीक करने में लगे हुये थे—कहीं कुछ बनवाना—कहीं कुछ लगवाना।

युसुफ ने पूसी को उसके नये घर की आदत डालने की कोशिश की। वह उसको वहां कितनी ही बार ले गया लेकिन वह वहां रहती ही नहीं थी। एक दिन उसने पूसी को बंद कर दिया—नये घर में। दरवाजे को अच्छी तरह बंद कर जल्दी

से अपन घर की तरफ चल दिया। लेकिन जब इधर-उधर से घूम-घाम कर वह घर पहुंचा तो देखता क्या है, पूसी पहले से ही वहां मौजूद है, उसकी इंतजार कर रही है। वह सोचने लगा—उसे पूसी के कमरे की खिड़की भी बंद करनी चाहिये थी, वही एक रास्ता है जहां से पूसी बाहर आ सकती है।

एक दिन—शनिवार को, मम्मी ने ऐलान कर दिया कि वे अगले हफ्ते ही नये मकान में चले जायेंगे। सब तैयारी हो चुकी है, पुरानी तीनों बिल्लियों के लिये घर ढूंढ़ लिये गये थे, नये फ्लैट की सफाई हो चुकी थी, पर्दे सिल गये थे, बल्बों पर सुंदर-सुंदर शेड लगाये गये थे। "पापा अपने आफिस से लम्बी छुट्टी लेंगे—सारा काम वे खुद देखेंगे। मंगलवार को दोपहर बाद वे पूसी को ले जायेंगे। युसुफ, याद रखना कि वह तैयार रहे, ध्यान रहेगी न यह बात?"

युसुफ ने कोई जवाब नहीं दिया। वह यही सोचता रहा कि पूसी को उसके नये घर सोमवार की रात को ले जाये या मंगलवार की सुबह को। घर के सब लोग काम में लगे होंगे। पूसी का किसको ख्याल होगा।

सोमवार के दिन, सभी लोग काम में लगे रहे। सुबह के वक्त युसुफ अपनी चीजें बटोरने में लगा रहा। दोपहर में खाना खाने के बाद मम्मी चाहती थी कि वह नये फ्लैट में उनकी मदद करे। वे वहां गये। फ्लैट आठवीं मंजिल पर था। ऊपर की खिड़कियों से जब उसने देखा कि सूरज छिपने को है और अंधेरा होने लगा है तो वह परेशान हो गया। वह यहां था और पूसी उधर।

जब वे घर पहुंचे अंधेरा हो चुका था। पूसी म्यांऊ म्यांऊ करती उदास सी इधर से उधर घूम रही थी। युसुफ ने उसे एक प्लेट में दूध भर कर दिया। उसने लपलप कर दूध पिया, अपना मुंह साफ किया, युसुफ के पास गई और उसका हाथ चाटने लगी। युसुफ को पूसी की खुरदुरी जीभ अच्छी नहीं लग रही थी पर उसने हाथ हटाया नहीं। पूरी शाम वह पूसी के साथ ही रहा, उसे नये घर (दादी वाले) में ले जाने का मौका ढूंढ़ता रहा। लेकिन उसे ऐसा मौका नहीं मिला।

मंगलवार की सुबह और दिनों की बजाय कुछ ज्यादा ठंड थी, काम करने के लिये एक तरह से अच्छा दिन था। युसुफ के मम्मी-पापा सुबह सुबह ही फ्लैट पर चले गये। इस वक्त उसे वह मौका मिल गया जिसकी उसे तलाश थी। वह जल्दी से पूसी को लेकर घर से निकल गया। सड़क का रास्ता छोड़कर गलियों से निकला, कहीं ऐसा न हो कि सड़क पर मम्मी-पापा अचानक मिल जायें। दादी के मकान पर पहुंचा, सायबान खोला—

"पूसी इधर आओ," उसने एक कोने की तरफ इशारा करते हुये कहा, "देखो,



तुम्हारे लिय कितना अच्छा बिछौना है । आओ, आओ अब यह तुम्हारा नया घर हैं, मुझ से तो तुम्हें अब अलग ही होना होगा ।"

—"म्याऊं, म्याऊं···" पूसी युसुफ की टांगों से चिपकी रही । युसुफ ने झुककर उसे पुचकारा ।

"चलो, उधर लेटो किसी तरह की कोई चिंता नहीं करो—मुझे जब भी वक्त मिलेगा मैं तुम्हारे पास जरूर आऊंगा ।"

पूसी उसकी तरफ देखती हुई—जाकर अपने बिछौने पर बैठ गई । जब युसुफ वापिस चलने के लिये दरवाजे की तरफ बढ़ा—वह हिली-डुली नहीं । लगता था जैसे वह समझ गई है कि उसे यहीं रहना है ।

युसुफ वक्त पर ही घर पहुंच गया । जब उसके मम्मी-पापा दोपहर का खाना डब्बे में बंद बाहर से ही लेकर आये तो वह काम में लगा था । किसी ने भी पूसी का कोई जिक्र नहीं किया । युसुफ को इससे बड़ा ताज्जुब लगा । उनको कब ख्याल आयेगा कि पूसी घर में नहीं है ।

"अच्छा, युसुफ, जैसे ही घर की सफाई का काम खत्म हो जायेगा हम पूसी को संघ (एस. पी. सी. ए.) लेकर चलेंगे । ज़्यादा अच्छा होगा अगर तुम उसके सोने के लिये कोई कपड़ा घर से ही ले लो । अगर उसे वहां रख लिया गया तो वह अपने नये घर में किसी को परेशान नहीं करेगी ।

युसुफ के हाथ में यह आखरी प्लेट थी जिसको वह कपड़े से सुखा रहा था । उसने पापा की आवाज सुनी । वे पूसी को बुला रहे थे । "पूसी···पूसी" टीना भी उनके साथ ही आवाज लगा रही थी । युसुफ खुश था—पूसी को ढूंढ़ने में उन्होंने युसुफ से कोई मदद नहीं मांगी थी ।

सवा दो बज गये । पापा ने पूसी को ढूंढ़ना बंद कर दिया । "अब कोई फायदा नहीं—अगर वह हमें इस समय मिल भी जाती है हम तब भी संघ नहीं पहुंच सकते । मैं उनको फोन करके सब कुछ बता दूंगा ।"

टीना परेशान हो गई । "हम क्या करेंगे, अगर हम उसे वहां से चलने के वक्त तक भी नहीं ढूंढ़ पाते । उसे तो हमारा नया घर मालूम ही नहीं ।"

"चिंता नहीं करो । वह यहां लौटकर जरूर आयेगी । मैं रोज़ इस घर में उसको देखने आऊंगा । आज के इस शोर और धमाचौकड़ी से शायद वह परेशान हो गई ।"

शाम होने तक सारा परिवार नये फ्लैट में पहुंच गया । मम्मी इस बात पर जोर देती रही कि हम अपना पुराना घर साफ शीशे की तरह चमकता छोड़कर जायेंगे । आज इतना काम था कि घर में युसुफ को भी पसी का ध्यान नहीं आया ।

फ्लैट अच्छा बना था। इसमें सोने के तीन कमरे थे—युसुफ अपना कमरा देख-कर खुश हुआ। यह कमरा छोटा था लेकिन साफ और आरामदायक। रात को खाना खाने के वक्त सब फर्नीचर भी ठीक जगह पर रख दिया गया था। खाना बनाने का तो अब समय नहीं था। इसलिये सब नीचे ही पास के एक होटल में खाना खाने गये।

पापा ने उनको लिफ्ट प्रयोग के बारे बताया। उन्होंने इधर-उधर कूड़ा-कचरा फेंकने के बारे में चेतावनी दी। लिफ्ट बहुत सारे फ्लैटों के लिये थी इसलिये इसको साफ-सुथरा रखना जरूरी था। उन्होंने यह भी बताया कि जब लिफ्ट रुक जाये तो क्या करना चाहिये—कभी-कभी ऐसा हो भी जाता था।

जब वे खाना खा रहे थे युसुफ को पूसी की याद आई। उनके खाने में से मछली का कुछ टुकड़ा बच गया था। उसने सोचा इस टुकड़े को पूसी के लिये ले चलूं। लेकिन तभी उसने इरादा बदल दिया। हो सकता है पापा को कुछ शक हो जाये और वे सवाल पूछने लगें।

फ्लैट पर वापिस आकर पापा ने टेलीविजन खोल दिया। युसुफ भी सबके साथ एक पॉप कार्यक्रम देखने लगा। उसे ऐसे कार्यक्रम पसंद थे पर उसे नींद आने लगी। पापा ने उसे उठाकर सोने के लिये भेज दिया।

दूसरे दिन सुबह ही, नाश्ते के बाद, युसुफ ने कहा कि वह घूमने जा रहा है जिससे कि वह अपने आस-पड़ोस को जान सके। घर से निकल कर वह जल्दी-जल्दी पूसी को देखने चल दिया। वहां फ्लैट के बहुत सारे ब्लाक थे। उसे उम्मीद थी कि वह रास्ता नहीं भूलेगा। यह उसकी दादी के घर से दूर भी नहीं था।

जब वह वहां पहुंचा तो देखा पूसी म्याऊं म्याऊं कर रही है और दरवाजे पर खरोंचे लगा रखी है। जैसे ही वह अंदर घुसा—पूसी लपक कर एकदम उसकी गोद में आ गई और उसे प्यार करने लगी। वह यह दिखाना चाहती थी कि युसुफ के आने से वह कितनी खुश है। उसने पूसी को नीचे छोड़ा, दोनों एक साथ घूमने निकले—युसुफ और पूसी। पूसी ने पुराने घर का रास्ता पकड़ लिया था—युसुफ ने उसे उठाया और वापिस उसके सायबान में ले आया। वहां उसने उसे एक प्लेट में दूध दिया और सार्डिन दिये। पूसी ने पेट भर कर सब कुछ खाया और हमेशा की तरह अपने-आपको साफ किया।

युसुफ ने घास-फूंस बिछाकर उसका बिछौना ठीक-ठाक किया। उसके बाद उसने बक्से में देखा कि पूसी के खाने-पीने का सामान ठीक है या नहीं। उसने दूध के डिब्बों की गिनती की। वह इस बात का निश्चय करना चाहता था कि उसके स्कूल खुलने तक के लिये दूध होना चाहिये। स्कूल खुलने पर तो उसे फिर जेब

खर्च मिलने लगेगा । तभी वह और सामान खरीद सकेगा ।

× × ×

छुट्टियों में यह सिलसिला चलता रहा । युसुफ पूसी की और उसके खाने आदि की देखभाल करता । उसे सिर्फ एक ही बात का दुःख था । उसके पापा रोज़ पुराने मकान में यह देखने जाते कि पूसी वापिस आई या नहीं ।

स्कूल खुलने से एक दिन पहले की बात । नाश्ते की मेज़ पर सब बैठे थे । पापा ने बताया कि पूसी को अब बच्चे होने वाले हैं । उम्मीद है पूसी को रहने के लिये अच्छी जगह मिल गई होगी और शायद कोई ऐसा आदमी भी मिल गया होगा जो उसकी अच्छी देखभाल भी करेगा । क्योंकि उसको आज-कल ज़्यादा दूध की ज़रूरत होगी ।

युसुफ के ध्यान में ज़्यादा या फालतू दूध की बात ही नहीं आई थी । उसे लगा अब वह वक्त आ गया है कि पापा को बता देना चाहिये कि पूसी कहां है । उसने घुमा फिरा कर बात भी की । उसे डर भी लगा रहा था कि मम्मी-पापा उससे नाराज होंगे ।

छुट्टियों के बाद स्कूल खुल गये थे । एक दिन की बात मम्मी टीना को लेकर दांतों के डाक्टर के पास जाने वाली थी । टीना जब स्कूल से आ गई, तब वे डाक्टर के पास गये । युसुफ जल्दी-जल्दी पूसी के पास गया । जब उसने गाायबान का दरवाज़ा खोला तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा ।

पूसी एक कोने में लेटी थी अपने बच्चों को प्यार करती हुई । उ के तीन बच्चे थे, रंग में सफेद, पर दुबले-पतले और बदसूरत । वे सबके सब बेजान से थे । युसुफ उन्हें देखता रहा, वे खड़े होने की कोशिश करते पर गिर पड़ते । वह उनकी शक्ल-सूरत देखकर निराश सा हो गया । लेकिन पूसी खुश थी । युसुफ ने जितना भी दूध दिया, पूसी ने लपलपकर सारा पी लिया । दूध का पाऊडर करीब-करीब खत्म हो चुका था । युसुफ सोचता रहा अगर वह दूसरे डिब्बे का इंतज़ाम नहीं कर सका तो क्या होगा ?

दूसरे दिन स्कूल में युसुफ को बहुत परेशानी हुई । वह काम पूरा नहीं कर सका । मैडम की किसी बात का उत्तर नहीं दे सका । जब स्कूल की घंटी बजी तो वह बहुत खुश हुआ । वह एकदम स्कूल से भाग कर घर पहुंच जाना चाहता था । और अब तो घण्टी बज गई थी । तभी उसे आवाज सुनाई दी "युसुफ, तुम ज़रा ठहरो अभी,—" मैडम की आवाज थी ।

जब सभी बच्चे चले गये मैडम ने पूछा, "यहां आओ, युसुफ, मेरे पास । अब बताओ, क्या बात है ? आज तुम्हारा स्कूल में बिल्कुल भी मन नहीं लग रहा था ।



क्या तुम्हें अपना पुराना घर याद आता है ? क्या तुम्हें फ्लैट में रहना अच्छा नहीं लगता ?"

"नहीं, सब कुछ ठीक है।"

"फिर क्या बात है ? क्या चिन्ता है, तुम्हें ? तुम कुछ उदास लगते हो। ज़रा साफ-साफ बताओ।"

युसुफ ने सोचा था मैडम नाराज़ होंगी। लेकिन वह तो बिल्कुल भी नाराज़ नहीं थीं। उसने अपना सिर झुका लिया। उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

"अपनी बिल्ली की वजह से।"

"तुम्हें अपनी बिल्ली की याद आती है, यही बात है न ?"

युसुफ के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। मैडम चुप कराती रहीं, उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे तसल्ली देती रही। कहने लगी, चुप रहो, रोते नहीं, सब ठीक हो जायेगा। "युसुफ तुम तो क्लास के अच्छे बच्चे हो, सुबह आज तुम्हारा काम देखकर मुझे बहुत चिंता हुई।"

टीना अपने भाई का बाहर इंतज़ार करती रही थी। दोनों को घर पहुंचने में देर हो गई। मम्मी ने उनसे देरी का कारण पूछा।

"मुझे युसुफ की इन्तजार करनी पड़ी", टीना ने कहा, "उसे स्कूल के बाद भी क्लास में रुकना था।"

"क्यों, क्या हो रहा है ?" उनके पापा ने घर में घुसते-घुसते पूछा। उन्हें टीना की बात सुनाई पड़ गई थी। "क्यों युसुफ स्कूल के बाद भी क्लास में क्या करते रहे ?"

"कुछ नहीं, पापा।"

"कोई बात तो जरूर होगी जो तुम्हारी मैडम ने तुम्हें रोका ?"

"उन्होंने मुझे रोका नहीं था, बस जरा कुछ बात करनी थी।"

"किस बारे में ?"

"वह···वह···"

"बोलो, बोलो, तुम्हारी मैडम तुमसे क्या बात करना चाहती थी ?"

युसुफ सोचता रहा क्या जवाब दे। पापा के चेहरे से लग रहा था कि उन्हें सच-सच बताना होगा।

"पापा, आज मैं क्लास में सवालों का जवाब ठीक से नहीं दे सका था। मैडम ने स्कूल के बाद रोककर यही पूछा था कि मैं क्यों परेशान हूं।"

"और, तुम क्यों नहीं जवाब दे सके ? क्या हो गया था आज तुम्हें ? क्या तुम्हें फ्लैट में रहना अच्छा नहीं लगता ?"

युसुफ डरा हुआ तो था ही। पर उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि पापा और उसकी मैडम एक ही बात सोच रहे थे कि उसकी परेशानी का कारण फ्लैट ही था। और यह एक तरह से ठीक भी थी। अगर फ्लैट नहीं होता तो पूसी को भी कोई दिक्कत नहीं होती। वह यह भी जानता था कि पुराने और गिरे पड़े मकान की बजाय नये फ्लैट में घर के लोग ज्यादा सुखी थे।

"तुमने अपनी मैडम को क्या बताया ? क्या बहाना बनाया ?" पापा ने उसे जवाब देने का मौका नहीं दिया। "तुमने अपनी परेशानी का क्या कारण बताया ?"

"पूसी।"

"क्या ?"

"पूसी।"

"तुम स्कूल का काम नहीं कर सके, क्योंकि तुम पूसी की वजह से परेशान थे ? लेकिन तुम जानते नहीं, मैं उसे ढूंढ़ने की पूरी कोशिश कर रहा हूं। उसे कहीं न कहीं से खाने को तो मिल रहा है, नहीं तो वह घर आ गई होती।"

"पापा, पूसी दादी के पुराने घर में है।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?'

"मैंने ही उसे वहां रखा है। मैं उसकी देखभाल करता हूं।"

"तुम"—पापा एकदम नाराज़ दिखाई पड़े लेकिन युसुफ को अब डर नहीं लग रहा था। अब तो उसने अपने दिल की बात बता दी थी, वह हल्कापन महसूस कर रहा था। पापा का गुस्सा भी ठण्डा पड़ गया था। "हमें कल ही कुछ इंतज़ाम करना चाहिये," वे बोले।

"पूसी ने बच्चे दिये हैं—तीन।"

इससे पहले कि पापा आगे कुछ कहते, टीना दौड़ती हुई आई और उनका हाथ पकड़ कर बोली, "पापा, हमें भी ले चलो न, चलो दिखाओ हमें, पापा चलो न।" मम्मी चुपचाप रसोई में दूध लेने चली गई। थोड़ी देर में ही चारों दादी के पुराने घर में पहुंच गये। पूसी इन सबको देखकर खुशी से कूदने लगी। मम्मी-पापा और दोनों बच्चे पूसी और उसके बच्चों से खेलते रहे।

युसुफ को उम्मीद थी कि डांट पड़ेगी—पर ऐसा नहीं हुआ। घर वापिस आते हुये भी पापा चुपचाप रहे। जब वे फ्लैट में पहुंचे गये तो, पापा ने कहा, "अब हमें चार बिल्लियों की देखभाल करनी होगी।"

"पापा, क्या हम उनमें से एक बच्चे को अपने पास नहीं रख सकते।"

"नहीं टीना, तुम्हें तो यहां के नियम मालूम हैं। फिर भी हम रोज़ उनको खाना देने के लिये जाते रहेंगे।"

पापा ने अपना वायदा पूरा किया। पूसी और उसके बच्चों को देखने जब पूरा परिवार जाता तो सबको बहुत अच्छा लगता। युसुफ को यही सोचकर डर लगता कि बच्चे बड़े होते ही अलग-अलग हो जायेंगे। लेकिन एक न एक दिन तो ऐसा होना ही था। बच्चे बड़े होते जा रहे थे। अब वे अपनी मां जैसे ही खूबसूरत लगने लगे। सायबान चारों के लिये छोटा पड़ने लगा।

जिस दिन पापा ने आकर बताया कि उन्होंने चारों बिल्लियों के लिये मकान का इंतज़ाम कर लिया है, टीना रोने लगी। युसुफ को भी रोना आ रहा थी।

"क्या तुम मेरे साथ चलोगे जब मैं पूसी और उसके बच्चों को नये घर में लेकर चलूंगा?"

"टीना चली जायेगी। मेरा मन नहीं है।"

इतवार के दिन पूसी और उसके बच्चों को ले जाया गया, युसुफ घर से बाहर ही रहा। दिन भर वह कालोनी में घूमता रहा। उसे यह जानने का मन नहीं था कि पूसी को कहां ले जाया जा रहा है। टीना का रोना भी उससे देखा नहीं जा रहा था। उसे यह सोच-सोच कर दुःख होता था कि वह अपने पालतू बच्चों को फिर कभी नहीं देख पायेगा। फ्लैट में कोई भी किसी जानवर को नहीं रख सकता था



—यह जानकर उसे खुशी भी थी। इसका सीधा सा मतलब था कि वे अब कोई जानवर नहीं रख सकते थे। पूसी की जगह कोई भी जानवर नहीं ले सकता था।

शाम होने लगी। युसुफ ने सोचा अब घर लौटना चाहिये। अगर वह ज्यादा देर तक घर से बाहर रहा तो मम्मी-पापा परेशान होंगे। वह लिफ्ट से ऊपर पहुंचा और बाल्कनी से होकर अपने फ्लैट में जाने लगा। सभी लोग घर में थे। जैसे ही वह दरवाजे तक पहुंचा, उसे सबके बात करने की आवाज आ रही थी। वह अंदर घुसा, सबने उसे देखा। कोई कुछ नहीं बोला, लेकिन इतना वह जानता था कि सबको युसुफ का दुःख था।

वह अपने कमरे में गया। वह दरवाजे में ही था, उसकी नजर अंदर कमरे में गई। वह खुशी से चिल्ला उठा।

"ओह, पूसी—कितनी अच्छी।"

उसने देखा, दीवार पर, पूरे आकार में पूसी और उसके तीनों बच्चों की रंगीन फोटो लगी हुई थी। यह फोटो पापा ने ही खींची थी। उसने फोटो को पलट कर देखा, वहां चारों बिल्लियों के नये घरों के पते लिखे थे जब उसका मन करे वह उनको जाकर देख सकता था। और घर में उसके पास सुन्दर फोटो भी जो पूसी और उसके बच्चों की हमेशा याद दिलाती रहेगी। अब वह हमेशा, हमेशा के लिये इसे अपने पास रखेगा।

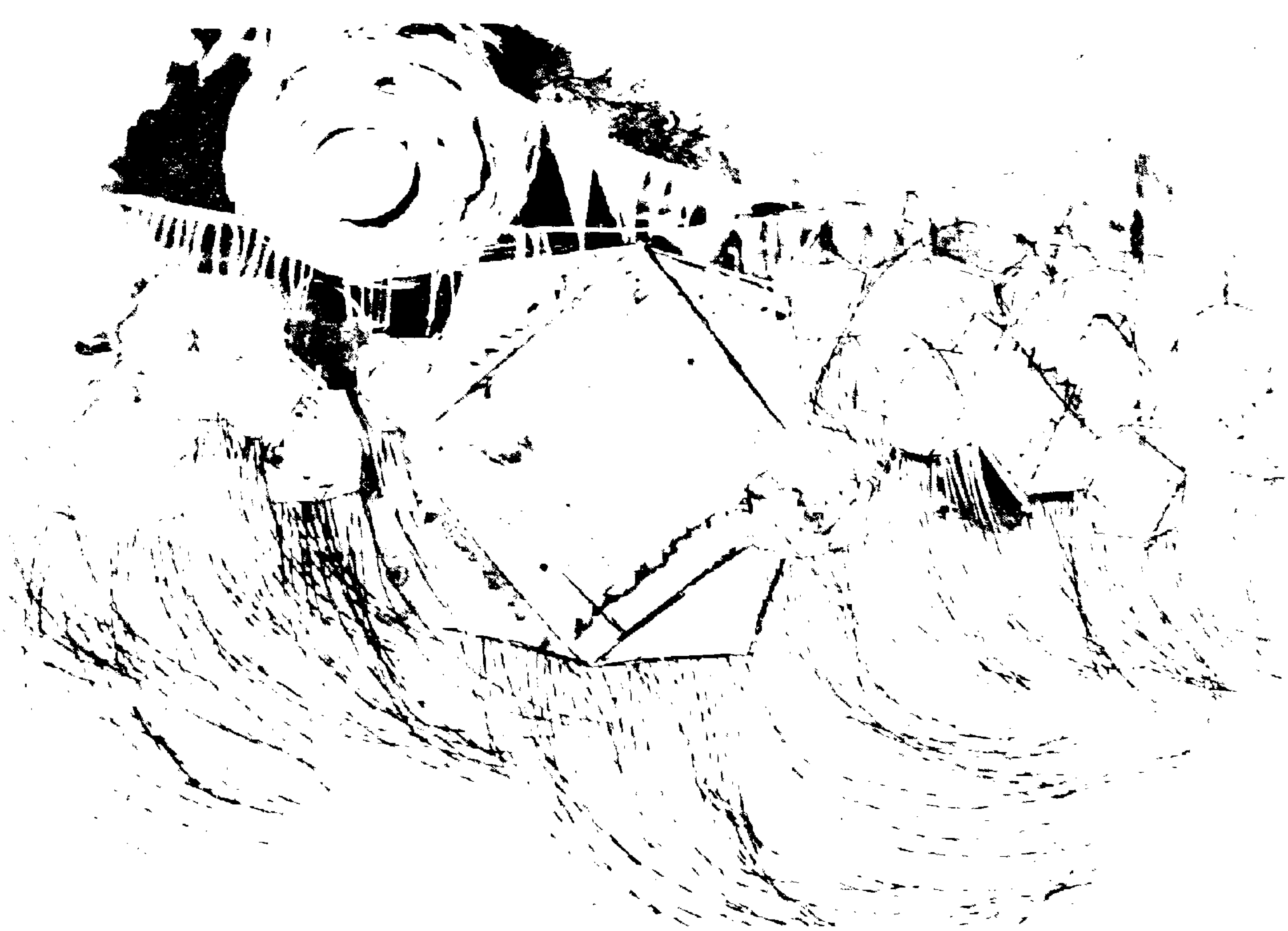
चित्रांकन—चिने प्रो टो

श्रीलंका

घर जैसा बड़ा एक कण्डील

सिबील वेत्तासिंहे

श्रीलंका में मई के महीने में वैशाख महोत्सव मनाया जाता है। यह वह समय होता है जब चंद्रमा अपनी पूर्ण कांति और आभा के साथ चमकता है। यह त्योहार भगवान बुद्ध के सम्मान में होता है। लोगों के हृदयों में अपार श्रद्धा होती है और वे एक साथ मंदिरों में जाते है, पूजा करते है। वे मंदिरों में दूध और चावल की बनी खीर लाते है, सुगंधित महकती हुई लम्बी लम्बी अगरबतियां जलाते हैं। ढेरों फूल लाते हैं। मंत्रोच्चारण के साथ फूल अर्पण करते हैं और भगवान बुद्ध की पूजा करते हुये कहते है, "हे भगवान, जिस प्रकार ये सुंदर फूल एक दिन मुरझा जायेंगे, उसी तरह हमारा जीवन भी एक दिन मुरझा जायेगा। जिस प्रकार ये सुन्दर फूल···"



इस त्यौहार में पहले दिन अधिकतर लोग पूजा करते हैं, दोपहर से लेकर दूसरे दिन सूर्योदय तक उपवास रखते हैं। कुछ लोग भगवान बुद्ध की सूक्तियों तथा भिक्षुओं के उपदेशों को सुनते, कुछ लोग गरीब तथा अनाथों को दान देते हैं। इस प्रकार गरीबों और असहायों के लिये वैशाखी का त्यौहार आनन्ददायक होता है।

सूर्यास्त होने पर पहले दिन सभी घरों में चारों तरफ अलग अलग रंगों में प्रकाश किया जाता है। यह प्रकाश वैशाखी महोत्सव को मनाने के लिये बनाये गये कण्डीलों का होता है तथा भगवान बुद्ध के जीवन की तीन घटनाओं की याद में होता है। पहली घटना भगवान बुद्ध का राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में जन्म लेने की याद में, दूसरी घटना, उस दिन की याद में जब उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ और वे भगवान बुद्ध कहलाये और तीसरी घटना उनके निर्वाण की। अर्थात् यह माना जाता है कि ये तीनों घटनायें वैशाखी पूर्णिमा के ही दिन घटित हुई थीं। इस प्रकार यह उत्सव भगवान बुद्ध की याद में अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास से मनाया जाता है। लोग जन्म के समय हर्ष मनाते हैं, उनका नाम लेकर पूजा करते हैं और उनके पदचिह्नों पर चलने का प्रयत्न करते हैं।

इस प्रकार वैशाखी महोत्सव के इस अवसर पर एक छोटा बच्चा कण्डील बनाने की तैयारी में लगा था। वह सुंदर और रंगीन कण्डील बनाना चाहता था। उसने अपनी दादी के सब्जी के बगीचे से एक कद्दू लिया और उसे बेचकर बाजार से बांस की डंडियां और खपच्चियां खरीद कर लाया। अब वह इन डंडियों और खपच्चियों को बांध बांध कर एक सुंदर हीरे की शक्ल का कण्डील बनाने में लगा था। वह चाहता था कि एक वह बड़े से बड़ा कण्डील बनाये, इतना बड़ा कि किसी का भी ऐसा न हो। पिछले वर्ष जब वह और दादी मां अपने पड़ोसियों के साथ शहर में रोशनी देखने गये थे वहां कुछ कण्डील तो इतने बड़े थे कि जैसे पूरा का पूरा मकान ही हों और यह लड़का उनको अभी तक भूला नहीं था।

वैशाखी महोत्सव में अभी बीस दिन बाकी थे। गांव के सभी लोग, छोटे-बड़े, तैयारियों में लगे थे। कुछ परिवार तो आपस में मिलकर काम कर रहे थे। वे सब छोटे छोटे अलग अलग रंगों में कण्डील बना रहे थे जिससे कि महोत्सव के पहले दिन उनके घरों की सजावट सुंदर और आकर्षक हो। छोटे बच्चों के मन में अलग उत्साह था—वे चाहते थे कि उनके कण्डील गांव में सबसे अच्छे हों। इसी-लिये वे अलग बैठकर अपने भाई बहिनों के साथ मिलकर काम कर रहे थे। लेकिन वह लड़का अकेला था। वह सबसे बड़ा कण्डील बनाना चाहता था। इसके कोई भाई-बहिन भी नहीं था। उसके साथ केवल बूढ़ी दादी मां थी जिसके साथ





यह अपने छोटे कच्चे मिट्टी के मकान में रहता था। वह चाहता था कि एक घर जैसा बड़ा कण्डील बनाये।

दादी मां उसे बहुत प्यार करती थी। दादी मां ने ही उसे छोटेपन से पाला था। उसका पालन-पोषण दादी मां ने बड़े ही प्यार और देखभाल से किया था। वह उसे अभी भी पाटिया कह कर बुलाती थी। (पाटिया का अर्थ श्रीलंका में छोटा बच्चा होता है।)

दादी मां के घर के पीछे की तरफ एक छोटा सा सब्जियों का बगीचा था। दादी मां बगीचे में उगी सब्जियों को बेचकर घर का काम चलाती थी। इसमें मेहनत बहुत पड़ती थी। जब पाटिया बड़ा हुआ और कुछ काम करने लायक हो गया तो दादी मां बहुत खुश हुई। वह अभी दस वर्ष का ही हुआ था, लेकिन वह बगीचे में सारा ही काम एक आदमी की तरह करता था। नलाई, गुड़ाई, खर-पतवार को निकालना, पानी देना, खाद देना जो भी काम बगीचे का होता वह बड़े आदमी की तरह सभी कुछ करता। दिन में वह स्कूल भी जाता। स्कूल में

वह मन लगा कर पढ़ता । वह गणित अच्छी तरह सीखना चाहता था जिससे कि वह सब्जियों का सारा हिसाब-किताब रख सके । अपनी किताबों की कहानियां वगैरह वह दादी मां को रोज़ पढ़कर सुनाया करता था । हर रविवार, वह दादी मां के साथ सुबह उठकर गांव की पैंठ में जाता, सब्जियां बेचते और उनसे मिले पैसों से अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीद कर लाते । कुल मिलाकर दादी-पोते की यह गृहस्थी ठीक चल रही थी ।

दादी मां खुद काम करती थी, सुबह-शाम, दिन-रात । पूरा दिन वह बगीचे में काम करती रहती । पाटिया उस काम में अब मदद करता तो दादी मां का मन बहुत प्रसन्न होता । उसने बगीचे में एक पुतला बना रखा था जिसे देखकर चिड़िया वगैरह आकर सब्जियों को खराब न करें और जो आ भी जाती उनको उड़ाने के लिये उसने एक घण्टा-घड़ियाल बांध रखा था । वह उसे भी बजाता था । अपनी झोंपड़ी के सामने उसने अच्छे अच्छे फूल लगा रखे थे । उसे पतंग उड़ाना और गुल्ली खेलना भी अच्छा लगता था । दादी मां को पाटिया का काम करना, बगीचे में मदद करना बहुत अच्छा लगता और उसके प्रति दिल में अत्यधिक स्नेह उमड़ता । वह उसे छोटा मेहनती आदमी कहती । वैशाखी पूर्णिमा के अवसर पर जब पाटिया को उसने इतना बड़ा कण्डील बनाते देखा तो वह हंस कर कहने लगी, "यह तो तुम बहुत बड़ा कंडील बना रहे हो, ये तो हमारी झोंपड़ी से भी बड़ा लग रहा है । —ठीक है, इसमें तो हम दोनों मज़े से रह सकते हैं, ठीक है ।"

पाटिया रोज स्कूल मे आकर दोपहर बाद कंडील बनाने में जुट जाता । पड़ौस के बच्चे उसे देखने आते । इस तरह उसके एक विशाल कण्डील बनाने की खबर दूर दूर तक फैल गई और चारों तरफ से बच्चे उसके इस काम को देखने आने लगे ।

"तुम इतने बड़े कण्डील को टांगोगे कैसे ?" उन सबने उससे पूछा ।

"मुझे इसको टांगने की ज़रूरत नहीं," पाटिया ने पूरे विश्वास से उत्तर दिया, "यह जैसे अब है, घर के सामने इसको ऐसे ही रहने दूंगा ।"

बांस की खपच्चियों से बना ढांचा, घर के सामने के छोटे से कच्चे रास्ते पर रखा था । पाटिया इसमें रोज ही न बनाता, इसका आकार रोजाना ही बढ़ता गया ओर एक दिन इससे घर के सामने का पूरा भाग ढक गया । अब दादी-पोते दोनों को ही घर के अंदर जाने के लिये इसमें से होकर जाना पड़ता था ।

वैशाखी पूर्णिमा में केवल छह दिन बाकी थे—पाटिया ने ढांचा बनाकर पूरा कर लिया । वह बहुत प्रसन्न था, अपने पर वह एक प्रकार का गर्व अनुभव कर रहा था । अचानक उसे एक विचार आया । इतने विशालकाय कण्डील के लिये तो

कागज बहुत ज्यादा चाहिये। उनके पास तो इतने पैसे भी नहीं, कहां से इतना अधिक कागज खरीदे। इसी चिंता में वह घर से निकला, अपने मित्रों के कण्डील देखने। वह देखना चाहता था उसके मित्रों ने कैसे कण्डील बनाये हैं, कितने बनाये हैं। उसने देखा सभी ने अपना अपना काम समाप्त कर लिया है। घरों में रखे हुये रंग बिरंगे कण्डील ऐसे लग रहे थे जैसे नये वस्त्रों और गहनोंसे सजी हुई स्त्रियां किसी विवाह में जाने के लिये तैयार हों। और उसका कण्डील—वह तो अभी तक एक ढांचा मात्र ही है, और उस ढांचे ने अभी घर का रास्ता भी रोक रखा था। वह दुःखी मन से घर लौट आया। कण्डील का ढांचा उसे ऐसे लगा जैसे कोई बेचारी भिखारिन हो जिसको यदि अच्छे और सुन्दर वस्त्र पहना दिये जायें तो वह एक दम सुंदर लगने लगेगी।

दोपहर का समय था। पाटिया दादी मां को ढूंढता हुआ रसोई में गया। अंगीठी पर चावल चढ़े थे। दादी अंगीठी की आंच तेज करने के लिये हवा झपक रही थी। पतीली और ढक्कन के बीच भांप के बुलबुले उड़ रहे थे।

"दादी मां, मैं तो मूर्ख ही रहा", उसने कहा।

"क्यों, मेरे बेटे?" दादी मां ने पूछा और हैरानी से उसकी तरफ देखने लगी।

पाटिया की आंखो में आंसू आ गये। वह बोला, "कण्डील को सजाने के लिये हम पूरा कागज तो खरीद ही नहीं सकते।"

"हां, लेकिन तुम चिन्ता न करो। हम काफी सारा कागज खरीदेगें," दादी ने कहा।

पाटिया की आखें आश्चर्य में भर गईं। वह समझा ही नहीं दादी मां क्या कह रही है? तब दादी मां ने बताया, "कल शनिवार है और हम कल दिन भर अपने बगीचे से शकरकन्दियां निकालेंगे। इतवार के दिन हम उनको पैंठ में बेचेंगे और फिर—" दादी रुकी, पाटिया के चेहरे पर प्रसन्नता आ गई थी। उसकी आंखों के आंसू ढुलककर गालों पर आ गये थे और होठों पर मुस्कराहट बिखर गई थी। "—और फिर हमारा घर में भी इन्द्रधनुष जगमगायेगा।" दादी ने कहा।

शनिवार के दिन उन्होंने शकरकन्दियों की अच्छी खासी फसल खोद डाली, जिसको उन्होंने रविवार को अच्छे भाव से बेचा। पैंठ से चलते समय पाटिया बहुत प्रसन्न था, उसके मन में अनेकों कल्पनायें उठ रही थीं कि वैशाखी पूर्णिमा की रात को उसका कण्डील कैसा चमकेगा। उसने दादी मां के चेहरे पर भी मुस्कराहट छिपी देखी।

वैशाखी महोत्सव के कारण बाजार की दुकानें विशेष रूप से सजी हुई थीं। त्यौहार से सम्बन्धित सामान विभिन्न रंगों में सजाया गया था। रंगीन, चमकीले,



सुनहरे कागज, माला तोरण, कागज की टोपियां और मुखौटे, झण्डियां, कागज के ही झण्डे, और ढेरों डोल और बाल्टियों की शक्ल में बने कण्डील ।

पाटिया बड़े विश्वास से एक दुकान पर रुका और वहां से उसने अपने कण्डील को सजाने के लिये जो कुछ भी चाहिये था सब खरीदा । उसके बाद वे घर पहुंचे ।

दोपहर में खाना खाने के बाद दादी मां तो कुछ देर तक के लिए सो गई । वे आज थक भी बहुत गई थी ।

पाटिया ने नये और सुन्दर रंगीन कागज निकाले, उसके बाद उसने दादी की पुरानी कैंची निकाली । लेकिन वह यह तय नहीं कर पाया कि कहां से पहले काटे । उसे डर था कि कहीं से कागज गलत न कट जाये । अगर कहीं ऐसा हो गया और कागज बेकार हो गया तो उसके पास और कागज खरीदने के लिये पैसे भी नहीं हैं । अब तो महोत्सव में सिर्फ चार दिन बाकी रह गये थे । उसकी चिन्ता बढ़ती ही जाती थी ।

दादी मां सोकर उठ गई थी और घर के काम-काज में लग गई थी । उसने देखा कि कण्डील का काम अभी तक ज्यों का त्यों है । उन्होंने कहा—"पाटिया जल्दी करो, अब ज्यादा समय नहीं है ।"

पाटिया ने दादी को अपने मन की चिन्ता बताई । दादी पाटिया की बात मान गई कि वे और कागज तो नहीं खरीद सकते । उन्होंने थोड़ी देर सोचा और फिर वह कण्डील के लिये कागज काटने और चिपकाने के लिये तैयार हो गई । लेकिन पहले उन्हें घर का सारा काम निबटाना होगा । घर की झाड़ू, बुहार, धुलाई, बर्तनों की राख और साबुन से रगड़ाई और धुलाई, चटाई की धुलाई, नारियल के ब्रुश से उसकी रगड़ाई, सब कपड़ों की धुलाई और शाम के लिये कुछ फालतू खाना जिससे कि वह वैशाख का पहला दिन पूजा में लगा सके ।

इस प्रकार महोत्सव से एक दिन पहले तक भी दादी मां पाटिया के लिये कुछ न कर सकी । उस दिन वे दोनों सुबह से ही कण्डील के काम में लग गये । काम उनकी उम्मीदों से अधिक मुश्किल निकला । दादी मां अब बुढ़ापे के कारण वैशाखी के कण्डील बनाना कुछ भूल चुकी थी जबकि पाटिया अभी बच्चा ही था । लेकिन पाटिया ने शहर में जो कण्डील देखे थे, वे उसे याद थे । और दादी को अपने बचपन के दिन याद आ गये । लगभग पचास वर्ष पहले की बात । वह सोचने लगी अपने उन बीते दिनों के बारे में, जब वह कागजों को काट काट कर फूल-पत्तियां बनाया करती थी, लम्बी झालरदार-झण्डियां कितनी अच्छी लगती थीं ।

दोनों मिलकर काम करते रहे । घर के सामने जगह तो कम थी ही । कण्डील के ढांचे को रखकर अब दादी पोते को कागज लगाने में दिक्कत पड़ रही थी ।

इसलिये दादी मां ढाचे के अन्दर की तरफ गई और कागज काटने लगी। पाटिया बाहर एक कुर्सी पर खड़ा होकर उन कागजों को चिपकाने लग गया।

शाम होने लगी थी पर कण्डील का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। दादी मां रसोई की तैयारी में लग गई थी, पाटिया निराश होते हुए भी अपने काम में लगा रहा। "कल वैशाखी महोत्सव का पहला दिन था···और दादी मां सारा दिन मंदिर में पूजा करेगी।"

रात में भी खाना खाने के बाद वे दोनों काम में लगे रहे फिर भी पूरा नहीं कर पाये। पाटिया ने अपने मन को तसल्ली दी कि चलो कल तक वह अकेले ही लगकर कम से कम ढांचे के बाहर चारों तरफ तो कागज लगा ही सकता है। झण्डियों और झालरों वगैरह की दूसरी सजावट शायद वह न कर सके तो कोई बात नहीं—कण्डील उसके बगैर भी सुंदर लगेगा। रात को वह जब सोने गया तो बहुत उदास था।

दूसरे दिन सुवह उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने देखा कि दादी मां आज तड़के मंदिर ही नहीं गई जैसा कि वह हर वैशाखी पूर्णिमा पर जाती थी। पाटिया ने याद दिलाते हुये कहा, "दादी मां, लोगों ने मंदिर जाना शुरू कर दिया है।"

"मैं सुन रही हूं, बेटा," दादी ने कहा, "लेकिन इस बार मैं अकेली नहीं जाऊंगी—हम दोनों एक साथ जायेंगे।"

"लेकिन आप को तो पूजा भी करनी है—" पाटिया ने कहा।

दादी ने उत्तर देने की बजाये, प्यार से पाटिया के सिर को चूमा और बोली "अच्छी दादी मां को हमेशा अपना काम याद रहना चाहिये।"

सूरज निकल रहा था। सुबह की सुनहरी किरणों में हर चीज चमक रही थी। पाटिया और दादी मंदिर के लिये चल दिये। रास्ते में लोगों की भीड़ मिली। सभी फूल, खीर और धूप बत्तियां लिये थे। मंदिर में पहुंच कर उन्होंने पूजा करी। प्रार्थना आदि समाप्त कर वे दोनों वापिस घर के लिये चल दिये।

आज का दिन कितना हर्षोल्लास वाला और आनन्ददायक था। चारों तरफ उत्साह और जोश। सभी लोग अपने-अपने घरों में वैशाखी की सजावट में व्यस्त, हवा में झूलते रंग बिरंगे कण्डील अत्यन्त सुंदर लग रहे थे। कण्डीलों के पतले महीन जालीदार रंगीन कागज हवा के कारण एक सरसराहट की आवाज कर रहे थे। पाटिया ने चलते चलते ललकती नजरों से इन कण्डीलों को देखा।

दादी मां बहुत तेजी से चल रही थी। घर पहुंचते ही उन्होंने पाटिया को जल्दी-जल्दी नाश्ता कराया। इसके तुरंत बाद ही एकदम वो अधूरे कण्डील में अंदर की

तरफ घुस गई और इस तरह दोनों ने अपना काम शुरू कर दिया।

दोपहर तक कण्डील कुछ सुंदर लगने लगा। गली से आते जाते लोग पाटिया को काम करते देखते और उसकी तारीफ करते हुये कहते, "देखो कितना होशियार लड़का है, अकेला ही सब काम कर रहा है।" कण्डील के अंदर ही दादी मां कागजों के फूल बनाती, काटती, पाटिया कण्डील के ऊपर से ही उनको पकड़ता और इस तरह से ढांचे पर चिपकाता कि वे देखने में अच्छे लगें। उन्होंने सफेद, नीले और लाल रंग के कागजों का इस्तेमाल किया और इसी रंग के कागजों से उन्होंने किनारियों की सजावट की।

दोपहर हुई—खाना जल्दी जल्दी खाकर वे फिर काम में जुट गये। दादी मां जल्दी जल्दी पर चुपचाप काम करती रही पर पाटिया कभी कभी किसी गीत के बोल भी गुनगुना लेता। दोनों की उंगलियां फुर्ती से चल रही थीं। काटना, गोंद लगाना और चिपकाना, यही काम था। दादी मां को बस एक ही चिंता थी कि किसी तरह कण्डील तैयार हो जाये, जिससे कि शाम को यह सजाया जा सके। वे कागज को लम्बाई की तरफ से थोड़ा सा मोड़ती फिर एक अनोखे ढंग से काटती। इस तरह कागज का एक सुंदर सा डिज़ाइन बन जाता था। पाटिया इसको लेता और कण्डील पर चिपकाता।

उनके काम करते करते ही सूरज छिपने लगा। रात होने ही वाली थी—पर आज की रात अंधेरी नहीं है क्योंकि आज तो चारों तरफ प्रकाश मालायें रात का स्वागत करने के लिये तैयार होंगी।

मंदिर की घंटिया बज उठीं। नगाड़े की आवाज आने लगी। शाम की पूजा का समय हो गया था। पाटिया ने अपने चारों तरफ देखा। उसे सभी घरों से रंगीन रोशनियों के गोले ऊपर उठते दिखाई दिये। धीरे धीरे चारों तरफ कण्डील ही कण्डील हो गये और इन से एक प्रकार की चमकदार लड़ी सी बन गई।

पाटिया ने तभी आखरी फूल चिपकाया। उसका चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा। "कच", "कच" कण्डील के अन्दर से दादी की कैंची चलने की आवाज आ रही थी। वह अभी भी कागज काट रही थीं।

"दादी मां, बस करो"—पाटिया खुशी से बोला, "कण्डील पूरा हो गया है।"

"भगवान बुद्ध सदा सहाय···" दादी बोलते बोलते चुप हो गई। कुछ क्षणों के बाद वह रोती सी आवाज में बोली, "पाटिया, बेटा पा—टि—या, मैं बाहर कैसे निकलूं? तुमने तो मुझे अंदर ही बंद कर दिया।"

वास्तव में जोश जोश में पाटिया ने दादी के बाहर निकलने के लिये जो रास्ता छोड़ रखा था वह भी बंद कर दिया।

"हां दादी मां, अब क्या करें ? कागज का फाड़ना भी तो ठीक नहीं," पाटिया बोला ।

"कोई बात नहीं, बेटा, तुम चिंता नहीं करो," दादी कण्डील के अंदर से ही बोली—"जब मुश्किल आती है तो उसका हल भी निकल आता है, तुम एक माचिस अंदर फेंको, मैं कण्डील की मोमबत्तियां जला दूं ।"

पाटिया माचिस लाया । वह कण्डील के ऊपर से झुक कर खुद भी अन्दर की मोमबत्तियां जला सकता था लेकिन अब तो दादी मां अंदर थी । उसने माचिस अंदर फेंकी । दादी मां ने एक एक कर सभी मोम बत्तियां जला दीं । कण्डील सुंदर प्रकाश से जगमगा उठा ।

"मेरे बेटे, क्या तुम खुश नहीं हो ?" दादी मां ने अंदर से कहा । पाटिया के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही वह बोलती रही, "मैं भी बेटा बहुत खुश हूं । क्योंकि कण्डील का काम जल्दी समाप्त हो गया । मैं अब अपनी पूजा का काम कर सकती हूं ।" तब दादी मां ने भगवान बुद्ध की कुछ सूक्तियां दोहराईं, "यदि एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने थोड़े से आनंद को त्यागने से अधिक आनंद प्राप्त कर सकता है तो उसे क्षणिक आनंद को छोड़कर अधिक आनंद ही प्राप्त करना चाहिये ।"

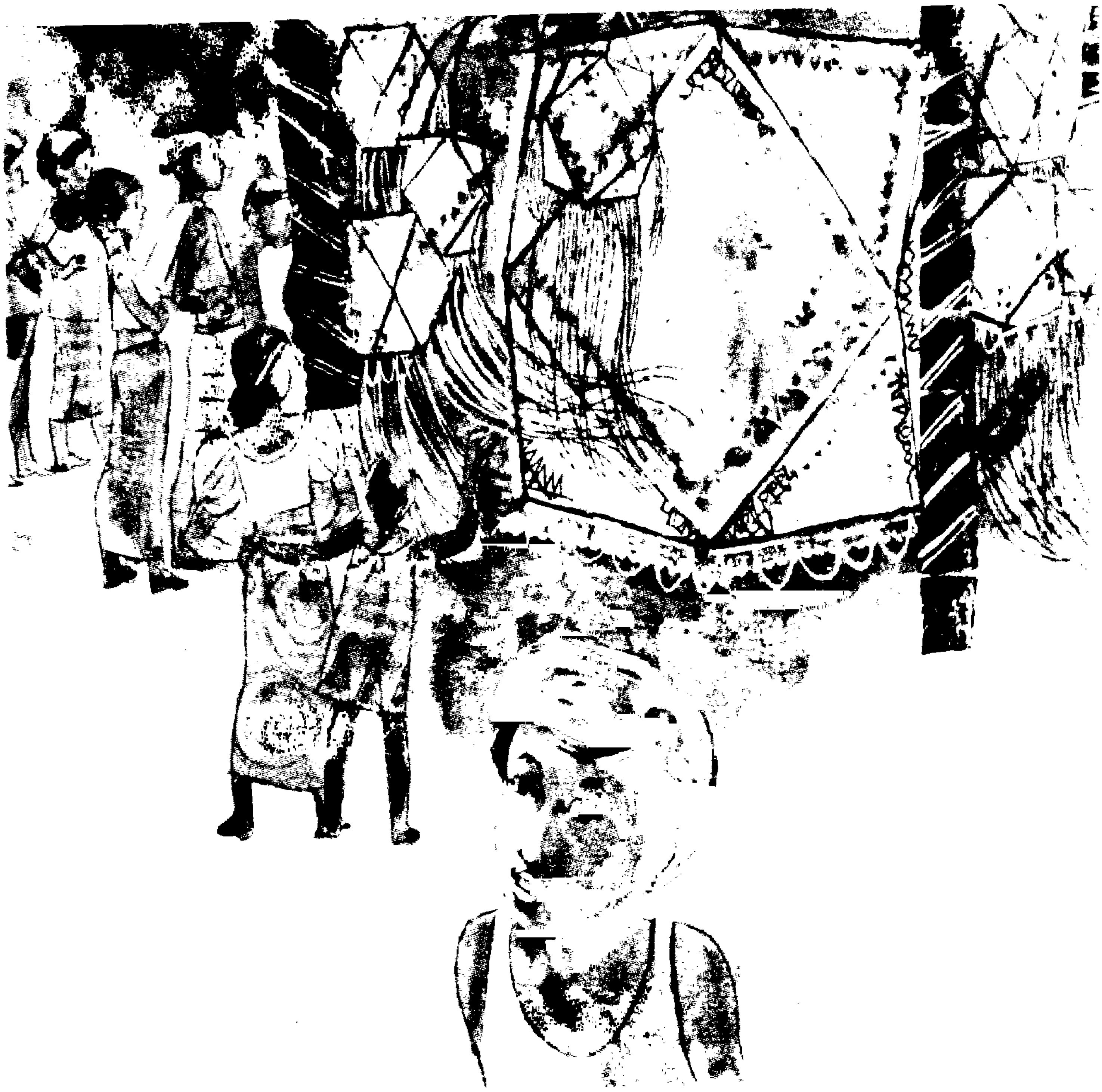
पाटिया की समझ में कुछ नहीं आया । वह इतना ही समझ पाया था कि दादी मां बहुत प्रसन्न है, और इसी बात से उसको असीम प्रसन्नता हुई ।

पूर्व की तरफ आसमान में सोने का गोला उठ रहा था । यह पूर्ण चंद्रमा था जो आसमान में उठता जा रहा था जैसे वह भी वैशाखी महोत्सव में भाग लेने के लिये ऊपर उठ रहा हो । ऐसा लग रहा था रात की रानी ने पृथ्वी को स्वर्ण जटित मुकट पहना दिया हो । उसी मुकट का एक हीरा मानो इस छोटी सी कच्ची झोंपड़ी के आंगन में उतर आया हो जहां एक छोटा बच्चा इस हीरे की सुंदरता को जोह रहा हो ।

कण्डील के दूसरी तरफ एक बूढ़ी औरत की पूजा-मुद्रा में परछाई दिखाई पड़ रही हो ।

गांव भर की पूरी सजावट में यह वास्तव में ही सबसे बड़ा कण्डील था । रात भर गांव के सभी लोग इसे देखने के लिये आते रहे । कोई पास से कोई दूर से । आधी रात तक यही सिलसिला चलता रहा । सभी लोग इस सुंदर दृश्य को देखकर मोहित हो जाते थे—सुंदर जगमगाता विशाल कण्डील और उसमें से ध्यान-मुद्रा में पड़ती परछाई ।

चंद्रमा घूमता घूमता ठीक ऊपर आ गया था । कहीं कहीं बादलों ने इसे ढक लिया था । चारों तरफ निस्तब्धता, पूर्ण शांति ।



धीरे धीरे कंडील का प्रकाश धीमा पड़ने लगा। मोमबत्तियां एक एक करके समाप्त होने लगीं। धीमे धीमे सब कुछ शांति से, दादी मां ने कंडील का कागज एक तरफ से फाड़ा, और बाहर निकली। बाहर पाटिया, कंडील के पास सोया हुआ था—उसके चेहरे पर पूरी संतुष्टि। शायद वह अपने सपनों में अपने कंडील को अपने घर के समान बड़ा मान कर देख रहा था।

चित्रांकन—सोमाश्री हेरच

थाईलैंड

अंडा-तोड़ हीरो

मानोप केवसनित

"ज्यूक, तुम आज मेला देखने नहीं जाओगे। दोपहरी तो ढल गई है, शाम होने वाली है?" मम्मी ने पूछा।

"क्यों नहीं, मम्मी, मैं जरूर जाऊंगा। साल में एक बार तो मेला भरता है।"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं, इस बार के मेले में बहुत सी नई-नई चीजें होंगी—नौटंकी, चलता-फिरता सिनेमा, कठपुतली का तमाशा वगैरह। सब-कुछ तुम एक दिन में तो देख भी नहीं सकते।"

"मम्मी, मेला कितने दिन तक चलेगा?"

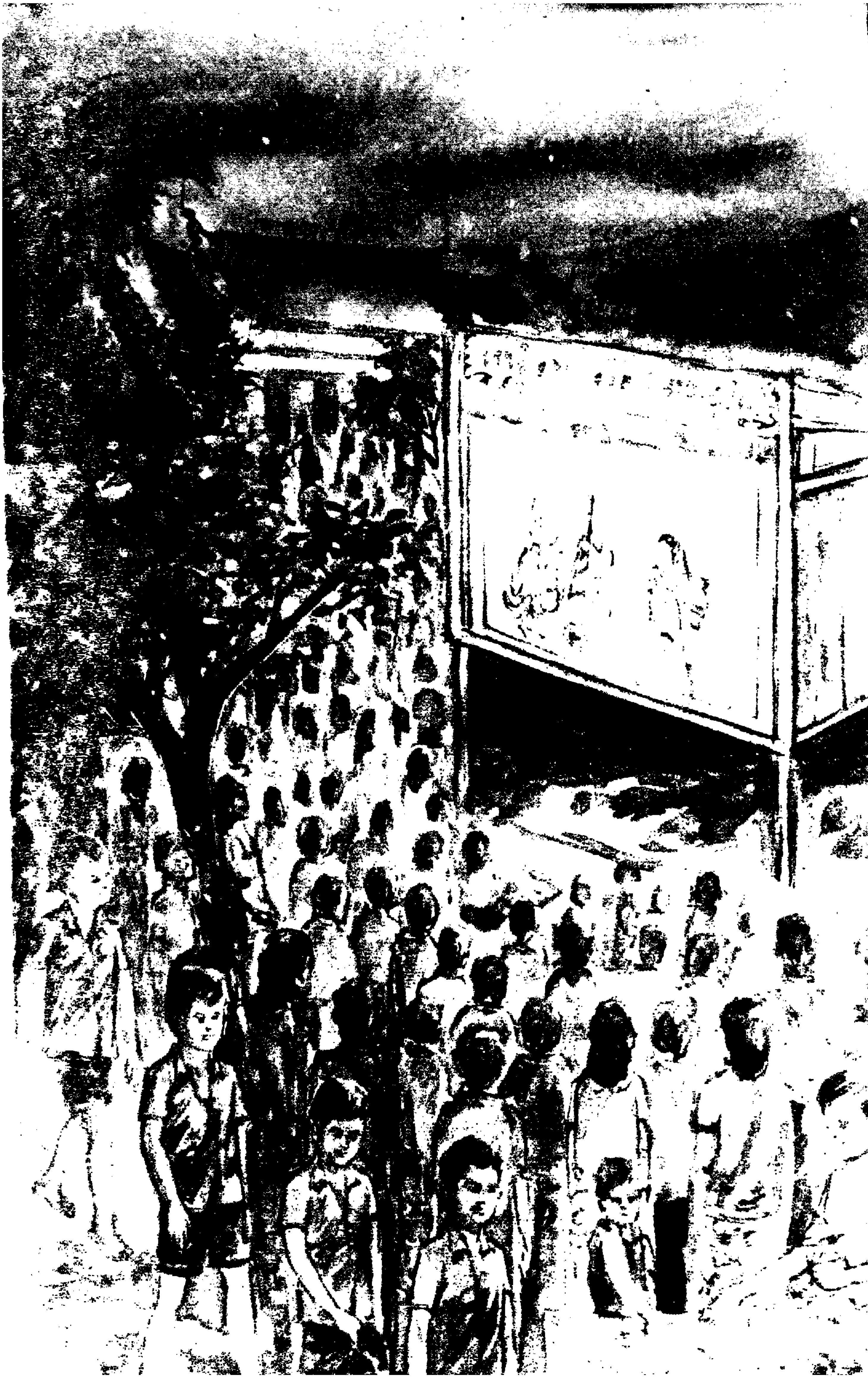
"मेरे विचार से तीन दिन तक," मम्मी ने कहा।

"और अभी तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं मेले में अंडा-तोड़ खेल खेलूंगा। उसके लिये अंडा उबाल रहा हूं।"

ज्यूक मन ही मन मेले के बारे में सोचता रहा। मंदिर में मेला भरेगा। वहां बहुत ही शोर-शराबा होगा, अपने गांव से ही नहीं, आस-पास के गांवों से भी लोग मेला देखने आये होंगे, सबने नये-नये सुंदर कपड़े पहने होंगे, आभूषणों और गहनों से लदी-फदी स्त्रियां होंगी। और कुछ नहीं तो इस मेले में सबको अपने गहने और नये कपड़ों के दिखाने का अवसर तो मिल ही जाता है। ऐसा मौका कोई रोज-रोज तो आता नहीं। लड़कों को इस मेले में अंडा-ताड़ खेल खेलने का मौका मिल जाता था।

अंधेरा होने लगा था। ज्यूक का अंडा उबल गया था। उसने इसे सावधानी से अपनी जेब में रखा और अपने मित्रों संग, कून और जोर्म से मिलने चल दिया। चारों मित्र मिलकर मंदिर चले जहां मेला लगा हुआ था। मेले में भीड़ और शोर काफी था। एक जगह समूह नृत्य की तैयारी हो रही थी। ज्यूक को नृत्य करन वाले कलाकार अच्छे लगे। अपनी कला में प्रवीण होने के कारण वे एक प्रकार से प्रसिद्ध कलाकार थे। देखने वालों की भीड़ जमा होने लगी। आमतौर से सभी दर्शक मंच के चारों ओर जमीन पर ही बैठ गये। सभी लोग अपने-अपने बैठने के लिये घरों से चटाई लाये थे।



चारों मित्रों ने थोड़ी देर इस समूह नृत्य को देखा, फिर वे कठपुतली का तमाशा देखने लगे। यहां पर ज्यादातर दर्शक बड़ी उम्र के थे। इसलिये इन चारों ने यहां पर रुकना ठीक नहीं समझा। वे घूमते रहे, लगता था जैसे उन्हें कठपुतली का नाटक से ज़्यादा किसी और चीज़ की तलाश थी। इसीलिये उन्होंने पूरे मेले का चक्कर काटा।

घूमते-घूमते वे एक अंडो की दुकान पर पहुंच गये। उस दुकान पर उबले हुये अंडे रखे थे—बिक्री के लिये। वास्तव में यही वह दुकान थी जिसकी तलाश में इन चारों ने पूरे मेले का चक्कर लगाया। उस दुकान पर लड़के-लड़कियों की भीड़ थी। सभी उबले अंडे खरीदने के लिये खड़े थे। क्या सभी को बहुत भूख लगी थी? बिल्कुल नहीं, वे सब खाने के लिये नहीं, वरन् अंडा-तोड़ खेल खेलने के लिये खरीद रहे थे। यह खेल एक तरह का मुकाबला होता है। इसमें बच्चे शर्त लगाते हैं पैसों की बजाय अंडो की। शर्त लगाने वाले दो लड़के एक-एक अंडा लेकर एक दूसरे के अंडे पर मारते हैं। इसमें आमतौर से एक अंडा टूट जाता है तथा दोनों में मजबूत जो अंडा होता है वह बचा रह जाता है। जिस लड़के का अंडा पूरा बचा रहेगा, वह दूसरा टूटने वाला अंडा जीत जायेगा। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि दोनों अंडे टूट जाते थे। उस स्थिति में हार-जीत का कोई





फैसला नहीं होता था। दोनों बराबर समझे जाते थे और अपना अपना टूटा हुआ अंडा रख लेते थे।

"आओ हम भी अंडा खरीदते हैं और खेल शुरू करते हैं"—जोर्म ने कहा।

"क्या भाव दिये हैं, अंडे ?" कून ने दुकान पर बैठी औरत से पूछा।

"एक बाह (इंडोनेशिया की मुद्रा) का एक अंडा"—दुकान मालकिन ने कहा।

लड़कों ने अंडे छांटने शुरू किये। अपनी समझ से वे सख्त से सख्त अंडे ढूंढ़ रहे थे। वे अंडो को पहले अच्छी तरह जांचते, परखते और फिर खरीदते। इस तरह सब लड़कों ने एक एक अंडा खरीदा। ज्यूक के पास तो था ही—वह घर से उबाल कर जो लाया था। इसलिये उसने नहीं खरीदा।

"आओ, ज्यूक", जोर्म ने कहा, "मैं अपने अंडे का मुकाबला तुम्हारे से करना चाहता हूं।"

"ठीक है, नीचे की तरफ किसका अंडा होगा ?"

"मेरा", जोर्म ने कहा। उसने अपना अंडा एक हाथ में इस तरह पकड़ा कि उसका गोल वाला हिस्सा बाहर रहे। "लो यह आया," ज्यूक ने भी अपना अंडा अच्छी तरह से पकड़ा और हाथ घुमा कर जोर्म के अंडे पर निशाना बना कर फेंका।

"कड़ाक", एक अंडे के टूटने की जोर से आवाज आई। सबने एक साथ देखा कि ज्यूक का अंडा टूट गया था।

"हुर्रे"—जोर्म चिल्लाया और अपना अंडा हवा में उछालने लगा। वह जीत गया था और उसने ज्यूक का टूटा हुआ अंडा बतौर इनाम ले लिया था।

"अब कौन करेगा, मुझ से मुकाबला," अपने दूसरे मित्रों की तरफ घूमकर जोर्म ने कहा।

"मैं करूंगा", सेंग ने अपना अंडा दिखाते हुए कहा।

"देखो, मेरे छिलके में अभी कच्चापन है। इसका मतलब है कि ये बहुत सख्त है। मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हारे अंडे को तोड़ दूंगा।"

"ठीक है", जोर्म ने कहा, "देखते हैं," तुम अपना अंडा नीचे रखो।

सेंग ने अपना अंडा हाथ में मज़बूती से पकड़ा। मुस्कराते हुए जोर्म ने अपना अंडा निशाना लगा कर सेंग के अंडे पर फेंका।

"कड़ाक"—और इस बार यह जोर्म का अंडा था जो टूटा था।

"हा, हा", सेंग खुश- मैं कहा था न, मेरा अंडा सख्त है और अच्छा है।" उसने जोर्म से टूटा हुआ अंडा ले लिया।

ज्यूक ने दुकान से एक अंडा और खरीदा और इस तरह चारों मित्र यह अंडा-तोड़ खेल खेलते रहे। इसमें न तो किसी की अधिक जीत हुई और न हार। वे अंडे खरीदते रहे, खेलते रहे और इस तरह सबके पास काफी सारे टूटे हुये अंडे इकट्ठे हो गये जो उन्होंने एक-दूसरे से जीते थे। अंत में उन्होंने अपने ये टूटे हुये अंडे उठाये और वे एक रेस्टोरेन्ट में गये। वहां सबने मिलकर अपने अंडो के साथ चावल और दही का खाना खाया।

जब वे अपने-अपने घर की तरफ मुड़ने वाले थे तो उन्होंने तय किया कि कल शाम को फिर मिलकर मेले में आयेंगे। अपने अपने घर से ही अंडे लायेंगे और फिर यह खेल खेलेंगे।

दूसरे दिन दोपहर बाद ज्यूक ने घर के अहाते में ही चूल्हा बनाया, आग जलाई और अंडा उबालना शुरू किया। वह मेले के बारे में ही सोच रहा था···कैसे अंडा उबाले, पहले किससे मुकाबला करे, अचानक पाया कि आवाज़ आई, "ज्यूक, यह क्या कर रहे हो।"

"पापा, मैं अंडा-उबाल रहा हूं—शाम को मेले में अंडा-तोड़ खेल है।"

पापा धीरे से मुस्कराये। उन्हें मन ही मन अपने दिन याद आ गये जब कि वे ज्यूक की ही उम्र के थे, वे स्वयं इस मुकाबले में खूब भाग लिया करते थे। अब वे ज्यूक को बहुत प्यार करते थे उसे हर बात में सलाह दिया करते कि उसको क्या करना चाहिये, क्या नहीं। उसका पूरा पूरा ध्यान रखते, उनकी हार्दिक इच्छा यही थी कि ज्यूक बड़ा होकर एक अच्छा और नेक इंसान बने। इसलिये उन्हें इस समय यही आशा हुई कि आज शाम ज्यूक को यह मुकाबला जीतना ही चाहिये। उन्होंने ज्यूक से पूछा, "तुम क्या सोचते हो, तुम इस मुकाबले में जीत जाओगे ?"

"मुझे पक्का नहीं है, पापा, कल शाम तो मैं पहले ही मुकाबले में हार गया था।"

"मैं तुम्हें इसमें जीतने की एक तरकीब बता सकता हूं।"

"पापा बताओ न, क्या तरकीब है।"

"मैं जब तुम्हारे जितना था, तब मैं भी यही खेल खूब खेलता था। जब भी गांव में कोई मेला वगैरह भरता, हम सभी लड़के उबले अंडे लेकर खूब खेलते थे। उस समय आनन्द भी बहुत आता था क्योंकि कभी-कभी हमारा मुकाबला दूसरे गांव के लड़कों से भी हो जाता था। कभी-कभी तो मैंने ही एक बार में शाम में दर्जनों अंडे जीत लेता था।

"पापा आप जरूर कोई जादू जानते होंगे"—ज्यूक ने आश्चर्य में कहा, "मुझे भी बताइये वह जादू ?"

"जादू कुछ नहीं बेटा, सारी बात अंडा उबालने की है। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा अंडा सख्त हो, भुरभुरा न हो, तुम्हें उसे काफी देर तक उबालना चाहिये। जितना भी उबाल सकते हो, उबालो, देर तक आग पर चढ़ाये रखो, इससे अंडे का छिलका पत्थर जैसा सख्त हो जायेगा। यह ठीक है कि यह बाद में खाने के काम का नहीं रहेगा। लेकिन तुम इतने अंडे जीत जाओगे कि तुम्हें खाने की चिंता ही नहीं रहेगी। इसलिये मेरी बात मानो। मेरा वायदा है कि फिर आज मेले में तुम हीरो हो जाओगे।"

शाम हुई। ज्यूक अपने साथियों से अंडो की दुकान पर ही मिला। जोर्म से उसने कहा, "आओ जोर्म, हो जाये एक मुकाबला। कल की हार का बदला उतारने के लिये मैं तैयार हूं।"

"हां, हां, क्यों नहीं, तुम्हें आज यह ख्याल है कि तुम बहुत चुस्त हो तो हो जाये एक मुकाबला। लेकिन एक बात बता दूं—आज मेरे पास अच्छे सख्त अंडे हैं।"

खेल फिर शुरू हुआ। ज्यूक का अंडा नीचे था, जोर्मने निशाना लगाया।



"कड़ाक" की आवाज। ज्यूक का चेहरा खिल उठा। उसका अंडा जीत गया था। जोर्म का चेहरा उदास हो गया। उसे अपने जीतने का पूरा विश्वास था।

"अब कौन आयेगा मुकाबले के लिये", ज्यूक ने अपने दूसरे साथियों की तरफ देखते हुये कहा।

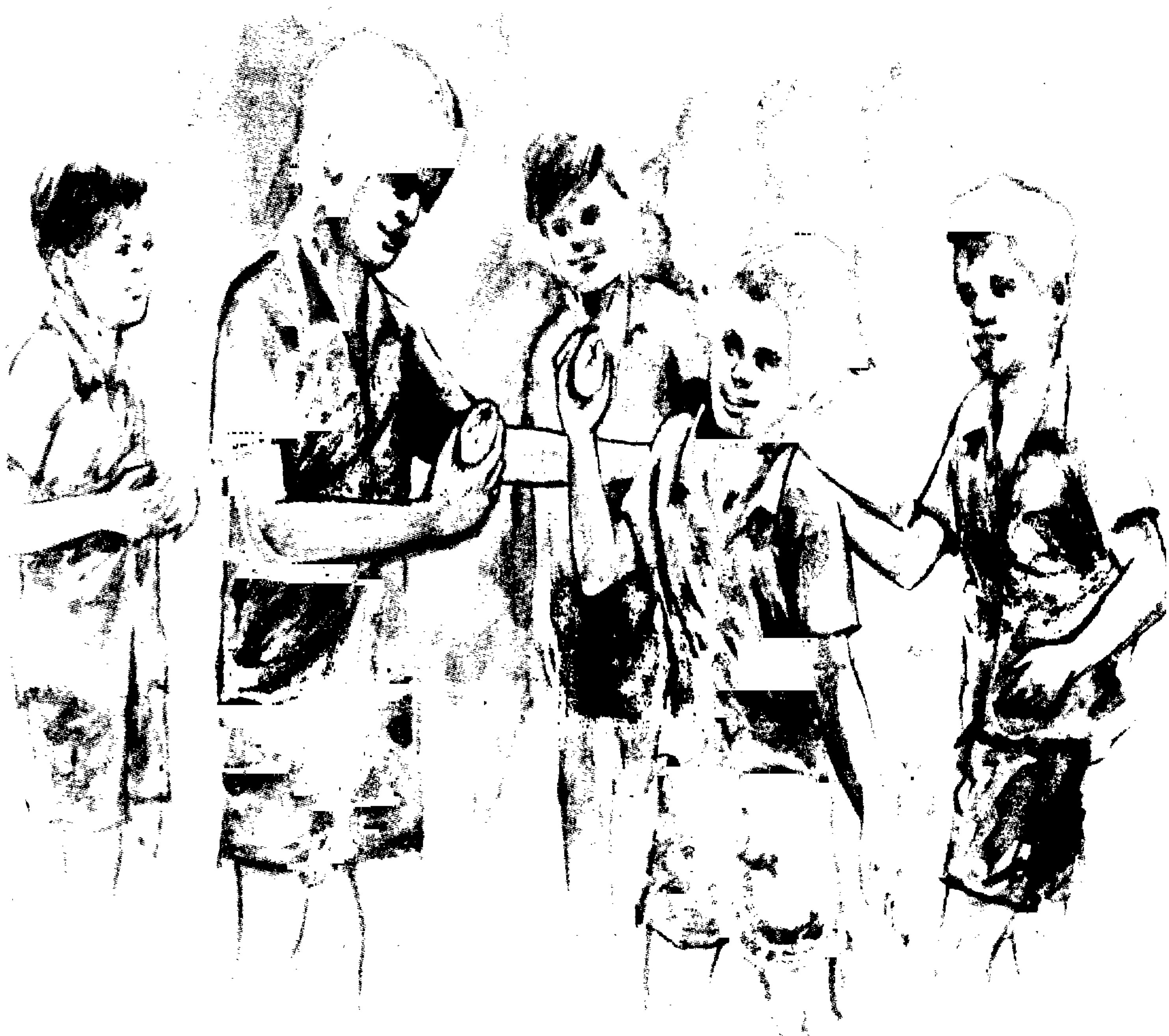
एक बड़े से लड़के ने कहा।

"मैं करूंगा," कून ने अपना अंडा निकालते हुये कहा।

इस बार फिर ज्यूक का अंडा नीचे था और वही जीता। उस शाम को वह अपने गांव के दूसरे दोस्तों के साथ खेला और सभी को उसने हराया। इस तरह उसने बहुत सारे अंडे जीत लिये। अब उसे अपने ऊपर पूरा भरोसा हो गया था। उसने सोचा, दूसरे गांव के लड़कों से भी मुकाबला किया जाये।

"आओ बड़े भाई, हमारे साथ भी एक मुकाबला हो जाये", उसने पास के गांव के एक बड़े लड़के से कहा।

वह लड़का भी अपने दूसरे साथियों के साथ शाम से ही खेल रहा था और लगातार जीत ही रहा था। वह पुराना मंजा हुआ खिलाड़ी था। "बड़ी खुशी से", उसने कहा। उसने ज्यूक के अंडे को हाथ में लेकर देखा, जैसे हाथों में उसका वह



वज़न कर रहा हो। कहने लगा, "तुम्हारा अंडा काफी भारी है, लेकिन मेरा ज़्यादा सख्त है।"

"बड़े भाई, अंडा मेरा ऊपर ही रहने दो ?"

"ठीक है", दूसरे लड़के ने कहा और उसने अंडा कस कर पकड़ लिया।

ज्यूक ने तुरन्त निशाना बांधा। "कड़ाक" की आवाज़ कुछ ज़ोर से आई। ज्यूक और उसके साथियों ने देखा कि ज्यूक का अंडा टूटा है। उनके चेहरे उतर गये। लेकिन फौरन ही उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। क्योंकि, उस बड़े लड़के का अंडा भी टूटा चुका था। इस तरह पूरा मुकाबला बराबर रहा। न कोई हारा न कोई जीता।

वह लड़का भी खुश हुआ। उसने ज्यूक के कंधे पर हाथ रखा और शाबाशी दी। कहने लगा—"ज्यूक, आज के मुकाबले में हम दोनों ही जीते। प्यारे भाई,

मैं तो पक्का खिलाड़ी था ही, तुम भी वैसे ही निकले। वैसे हम दोनों का ही अंडा टूटा है इसलिये हम अपना अपना अंडा रख सकते थे। पर मेरा अंडा भी तुम ले जा सकते हो क्योंकि तुम भी तो एक मंजे हुये खिलाड़ी निकले।

ज्यूक की प्रसन्नता और गर्व की सीमा नहीं रही। सब लड़कों को लेकर वह रेस्टोरेन्ट में गया और वहां उसने अपने सभी जीते हुये अंडे अपने मित्रों में बांट दिये। सभी को आश्चर्य था आज ज्यूक कैसे जीत गया है इतना सब। वे इसका रहस्य पूछते रहे। ज्यूक ने बताया तो नहीं, वह बस मुस्कराता रहा और सिर ऊंचा किये बतियाता रहा।

खुशी खुशी वह घर लौटा। मन ही मन सोचता रहा, "पापा का जादू वाकई काम करता है।" सोते समय भी उसे शाम के खेल की ही याद आती रही। वह भविष्य के बारे में योजनायें बनाता रहा। उसे पक्का भरोसा हो गया था कि वह पापा की वजह से अपने गांव का हीरो बन जायेगा।

चित्रकार—सुरासक वसदिनपोनं

लेखक एवं चित्रकार परिचय

अफगानिस्तान

अहज़ाम रहनाबादं जरयाब अफगानिस्तान के प्रसिद्ध लेखकों में से हैं। वे सूचना एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के सांस्कृतिक विभाग के अध्यक्ष भी हैं।

हाशिम घोरबन्दी एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं।

बर्मा

गेटनी (ऊ थे मिन्ट) ने अनेकों लेख, कहानियां तथा उपन्यास लिखे हैं। वे आजकल सूचना मंत्रालय से संबंधित हैं।

यू. सेन के चित्र अनेक प्रकाशनों में छपे हैं। उन्होंने मुख्यतः अध्ययन यूरोप में किया है।

भारत

बल्लिकानन एक स्वतंत्र लेखक हैं। उन्होंने रूसी साहित्य का तमिल अनुवाद भी किया है।

आर. के. लक्ष्मण के राजनैतिक कार्टून पिछले तीस वर्षों से भी अधिक समय से "टाइम्स आफ इंडिया" में छप रहे हैं।

इंडोनेशिया

जसरान् सफानो के कार्य ने उनको पत्रकारिता, अन्य विभाग तथा फिल्मों का व्यक्ति बना दिया है। इन्होंने बहुत से उपन्यास तथा कहानियां लिखी हैं।

ओ. एसमन एफेण्डी के चित्र विश्व भर में प्रदर्शित हुये हैं।

ईरान

साइरस तहबाज़ ने ईरान के प्रगतिवादी साहित्य को प्रकाशित करने का मुख्य कार्य किया है। सम्प्रति वे बाल पुस्तकों के सम्पादक तथा चित्रकार हैं।

निकज़द नौजूमी के चित्र अनेकों बाल पुस्तकों में लिये गये हैं।

जापान

नानकिची निमी का देहांत 1942 में हो गया था। मरणोपरान्त उनके बाल-गीतों और बाल-कहानियों को बहुत अधिक प्रसिद्धि मिली।

टिकीचि मियोशी के चित्र जापान तथा अन्य विदेशी भाषाओं की पुस्तकों में छपे हैं।

कोरिया

ओ योंग सू एक पुरस्कृत लेखक है। सम्प्रति एक साहित्यिक पत्रिका के सम्पादक।

किम योंग जू एक पाश्चात्य शैली के चित्रकार। इनके चित्र विस्तृत रूप से प्रदर्शित हुये हैं।

मलेशिया

ईस्माइल अहमद ने बाल कहानियां तथा पुस्तक समीक्षायें लिखने के अतिरिक्त एक अध्यापक तथा एक शोधकर्त्ता के रूप में काम किया है।

ओथमन बिन ज़ैनुदीन एक प्रसिद्ध पुस्तक चित्रकार हैं।

नेपाल

माधव धीमिरे ने नेपाली साहित्य की प्रगति के लिये काफी कार्य किया है।

टेक बीर मुखिया एक स्वअध्यायी चित्रकार हैं तथा सम्प्रति नेपाल ललित कला महासंघ के प्रमुख चित्रकार हैं।

पाकिस्तान

अनवर एनायतुल्लाह एक प्रसिद्ध लेखक, उर्दू और अंग्रेजी दोनों में लिखते हैं।

मो. वासिम एक कार्टून. कलाकार चित्रकार है।

फिलिपाइन

न. व. म. गोन्ज़ेल फिलिपाइन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य के विभाग में एसोसियेट प्रोफेसर हैं।

एडगर सोलर फिलिपाइन के प्रसिद्ध कलाकारों में से एक हैं।

सिंगापुर

वायलेट विलिकिन्स एक अध्यापक हैं तथा बाल कहानियों के प्रसिद्ध लेखक हैं।

चिन. वो. टी. प्रसिद्ध चित्रकार तथा पुस्तक चित्रकार हैं।

श्रीलंका

सिबील वेत्तासिहे एक पत्रकार हैं तथा बाल कहानियों के पुरस्कार विजेता लेखक हैं। बातिक कला में भी पूर्ण दक्ष हैं।

सोमासिटी हेरथ ने अपने चित्रों की अनक बार प्रदर्शनी की है तथा आजकल पुस्तक चित्रकारी में कार्यरत हैं।

थाईलैण्ड

मानोप केवसनित की कृतियों का मुख्य विषय ग्राम्य जीवन तथा बच्चों के प्रति स्नेह ही रहा है।

सुरासक दसदिनथोर्न के चित्र अनेकों बाल पुस्तकों में आये हैं।

तरंग प्रिंटर्स, लक्ष्मी नगर, दिल्ली द्वारा मुद्रित